RNI No. UPHIN/2011/40224
पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026
हिन्दी मासिक पत्रिका
अप्रैल - 2025
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

जीवन के दो पड़ाव दिन और रात

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।

प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः14 अंक : 10 | अप्रैल - 2025

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,
गौरव पंत, अभिषेक पंत,
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता
संपर्क 8423330911, 9598911575
पंजीकरण कार्यालय
सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022
प्रधान कार्यालय
18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग,
फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 8 चिंता और चिंतन

P 10 प्रकृति में मूक बधिर जीव साबित हुआ मानव

P 11 (रेखा पुष्प - अंतर्मन ज्यामिति) धम विज्ञान

P 15 निष्क्रियता की भावधरा ही सरल कर्म मार्ग धरा है

P 20 सौर ऊर्जा चालित कार्बन कैप्चर रिएक्टर

P 28 बात बोलेगी, हम नहीं!

P 36 सुखी जीवन का मूल मंत्र

P 40 शहरों का घुटता आसमान

P 42 बलहीन करता 'बल'

P 46 पर्यावरण संरक्षण का भारतीय दर्शन

P 32 प्रकृति विज्ञान

जीवन के दो पड़ाव दिन और रात

दिन अर्थात जागृत अवस्था जिसमें इंद्रियां अनेकों आयाम में फैली होती है जब कि रात सोने की अवस्था है जिसमे इंद्रियां किसी एक विषय को पूर्ण करने के लिए केन्द्रित होती है जो शक्तिशाली गुणों का निर्माण करती है।

लिफाफा

लि-लिखावट पूर्ण , फा - फासला , फा-फायदे

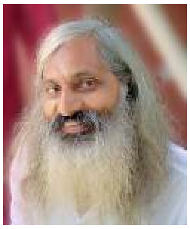

अशोक मानव

अर्थात लिखावट पूर्ण विषय में फासला फायदे के लिए। व्यवहारिक जीवन में लिफाफा उस बंद पत्र का नाम है जो जिसके लिए लिखा जाता है वही पढ़ सके। प्राकृतिक अर्थ में लिफाफा जीवन जीवनी पदार्थ की वह अवस्था है जब तक वह परिपक्व होकर प्रस्तुत न हो जाए। आध्यात्मिक इच्छित विषय जो भावनात्मक लेखनी से उत्पन्न गंध जीवनी है जो प्रकाशीय लिफाफे में बंद होकर परिपक्व होने तक की अवस्था है। वैज्ञानिक अर्थ में लिफाफा संरचना का सुरक्षात्मक पर्दा है। वास्तव में लिफाफा ब्रह्मांड की उस अवस्था का नाम है जिसमें जीव पदार्थ अपने द्वारा पदार्थीय और प्रकाशीय सुरक्षा घेरा का नाम है जिसमें मूल संरचना निर्माण योग्य तापमान बनाकर अपनी परिपक्व अवस्था धारण कर सके। जब वह परिपक्व हो जाता है तो सदा बाहर होकर दिखाई देने लगता है।

" लिफाफा प्रकृति का वह श्वेत पत्र है जिसमें लिखी जाने वाली स्याही बीजत्व में बन्द होती है यही बीजत्व की आत्मिक किलेबंदी है जो अपनी अवस्था पूर्ण करने तक गतिमान रहती है। "

व्यवहारिक जीवन में लिफाफा तो विषय का अनुबंध पत्र है जो जिसके लिए बंद किया जाता है वही खोजता है। पर आध्यात्मिक जगत में लिफाफे का विशेष महत्व है, इस दुनिया में बगैर इसके कोई निर्माण पूर्ण ही नहीं हो सकता है। आध्यात्मिक जगत में जीव पदार्थ की मूल संरचना कहां बंद है इसे आध्यात्मिक वैज्ञानिक और अनुभवी लोग जान ही नहीं पाए कि यह कहां बंद है, सिर्फ लिफाफे तक ही पहुंच पाए। यदि लिफाफा खोलकर अंदर तक जाने का प्रयास किया तो परतदार लिफाफा खुलता जाता है और मूल संरचना का अस्तित्व मिट जाता है। आज तक इसे कोई खोज नहीं पाया। परत दर परत बंद कई लिफाफों में मूल संरचना लिफाफे से सुरक्षित रहकर अपने द्वारा छोड़ी ऊर्जा और वाहय जगत से मिलने वाली ऊर्जा से अपना तापमान नियंत्रित करके परिपक्व अवस्था धारण करती है। लिफाफी स्वरूप से वह सुरक्षित रहकर अपना कार्य पूरा कर पाती है। जिससे जगत का विकास होता है। ब्रह्मांड की संरचना भी लिफाफे जैसी व्यवस्था है जिसमें जगत का विकास होता है। पृथ्वी के अंदर कई परत लिफाफे रूप में अपनी संरचना को समझौते और ब्रह्मांड में कई प्रकाशीय परत लिफाफे की तरह बनकर तापमान बनाने की क्रिया करती है। जिसमें आकाशीय समुद्री मंथन में इच्छित विषय की गंधीय प्रकाश संरचना आत्मिक बीज बनकर ईंधन के रूप में सहयोगी गंध को जोड़कर प्रकाशीय लिफाफे की कई परत बना लेती है जिसमें वह तापमान नियंत्रण कर निर्माण योग्य अपनी परिपक्व अवस्था बना पाता है जब यह अवस्था पूरी हो जाती है तो वह जीवनी गंध जो बीज बनकर जीवन धारण कर लेता है जिसमें लिफाफे की तरह कई परत प्रकाशीय और पदार्थ की संरचना बनता है जिसे स्वरूप कहते हैं इस क्रिया से वह जगत को अपने लिफाफा ज्ञानेंद्रिय से जान पाता है जो एहसास से सहयोगी को जोड़ता है और विरोधी को दूर करता है इसी क्रिया से आंतरिक तापमान को नियंत्रित करके अपना विकास करता है जिससे वह जीव जिसे करने के लिए आया है उसकी भावनात्मक गढ़ छोड़ना रहता है जो प्रकाशी लिफाफे में बंद होकर वह जगत में निकलती रहती है जो अपनी परिपक्व अवस्था धारण कर अपना विकास करती रहती

है लिफाफा किसी अवस्था को उसे समय तक बंद रखता है जब वह परिपक्व ना हो जाए जब वह परिवार को हो जाता है तो स्वतः उसके अंदर से निकलने वाला प्रकाश लिफाफे को खत्म कर अपनी अवस्था को बाहर ला देता है फिर भी किसी न किसी प्रकाशी लिफाफे में बंद ही रहता है यह निर्माण की आवश्यकता और सुरक्षा की प्राकृतिक अवस्था है जिससे जीव पदार्थ अपने कार्य को पूरा कर पाता है।

जिस प्रकार कच्ची ईंट को भट्टे में पकाया जाता है जो लिफाफा की तरह बंद करके पकाने का तापमान दिया जाता है तब वह मकान बनाने योग्य ईंट बन पाता है, ठीक उसी प्रकार जीवन के वह इच्छित विषय कच्ची ईंट की तरह होते हैं जब परिस्थितियों के तापमान से शरीर के अंदर लिफाफे की बंद अवस्था में पकते हैं तभी वह अपने विषय को पूरा करने की ईट बना पाते हैं ऐसे ही इच्छित विषय की लिफाफा पूर्ण स्थिति बनते बनते एक दिन व्यक्ति अपने सिद्धांतों का महल बना पाता है इस प्रकार परिस्थितियों ऊर्जाआत्मक लिफाफे की तरह है जो व्यक्ति को परिपक्व कर जिसे वह निर्माण करना चाहता है उसे पूरा करती रहती हैं इसलिए प्रकृति के अनुसार जीव को जीना चाहिए लिफाफे को समय से पहले खोलकर अपने व्यक्तित्व को नष्ट नहीं करना चाहिए।

पाठकनामा

प्रकृति मेल

प्रकृति मेल जीवन में क्या आया
साहित्य सृजन का अलख जगा दिया
दिन हो या रात हर वक्त
चिंतन मनन के लिए छोड़ दिया
बैठे ठाले व निठल्लों को
साहित्य का ज्ञान करा रहा हैं
हर माह घर घर पहुंच कर
ढेरों पठनीय , ज्ञानवर्धक व
प्रेरणादायक सामग्री का वह
जन जन को दे जाता हैं
प्रकृति मेल जीवन में क्या आया
जन जन की चेतना को
उसने जागृत कर दिया
श्रेष्ठ लेखन के लिए साहित्यकारों को
यह हर माह सजग कर जाता है
यही वजह है कि
प्रकृति मेल जब भी आता हैं
तब वह
ढेरों सामग्री लेकर आता हैं और
पाठकों को ढेरों ज्ञानवर्धक व
प्रेरणादायक सामग्री परोस जाता है

सुनील कुमार माथुर

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email-editor.prakritimail@gmail.com
Contact: **9807636072, 7376495194**

“ इसने लंबी सैन्य तैनाती के दिनों को याद दिलाया। पर, यह वक्त हमारे परिवारों के लिए कठिन था।

सुनीता विलियम्स

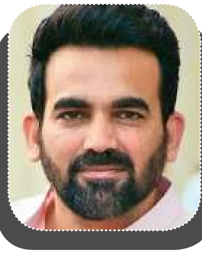

“ महेंद्र सिंह धोनी जब तक खेलेंगे, तब तक आईपीएल में उनका जलवा बना रहेगा ।

जहीर खान

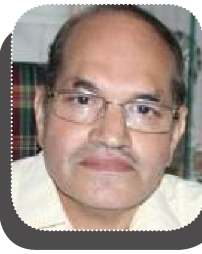

“ देश के उपभोक्ता बाजार को देश का मध्यम वर्ग नई आर्थिक ताकत दे रहा है।

जंयतीलाल भंडारी

“ जल गुणवत्ता सूचकांक में भारत 122 देशों में 120 वें स्थान पर है। देश के लगभग 70 प्रतिशत जल स्रोत प्रदूषित हैं।

पंकज चतुर्वेदी

“ कोई धर्म या भाषा दूसरे से बड़ा नहीं है।

रामचंद्र गुहा

“ मैं लोगों के चेहरों के भाव पढ़ने में आनंद पाती हूँ। इन भावों से ही मैं अपने किरदारों के अभिनय तलाश लाती हूँ।

इंदिरा तिवारी

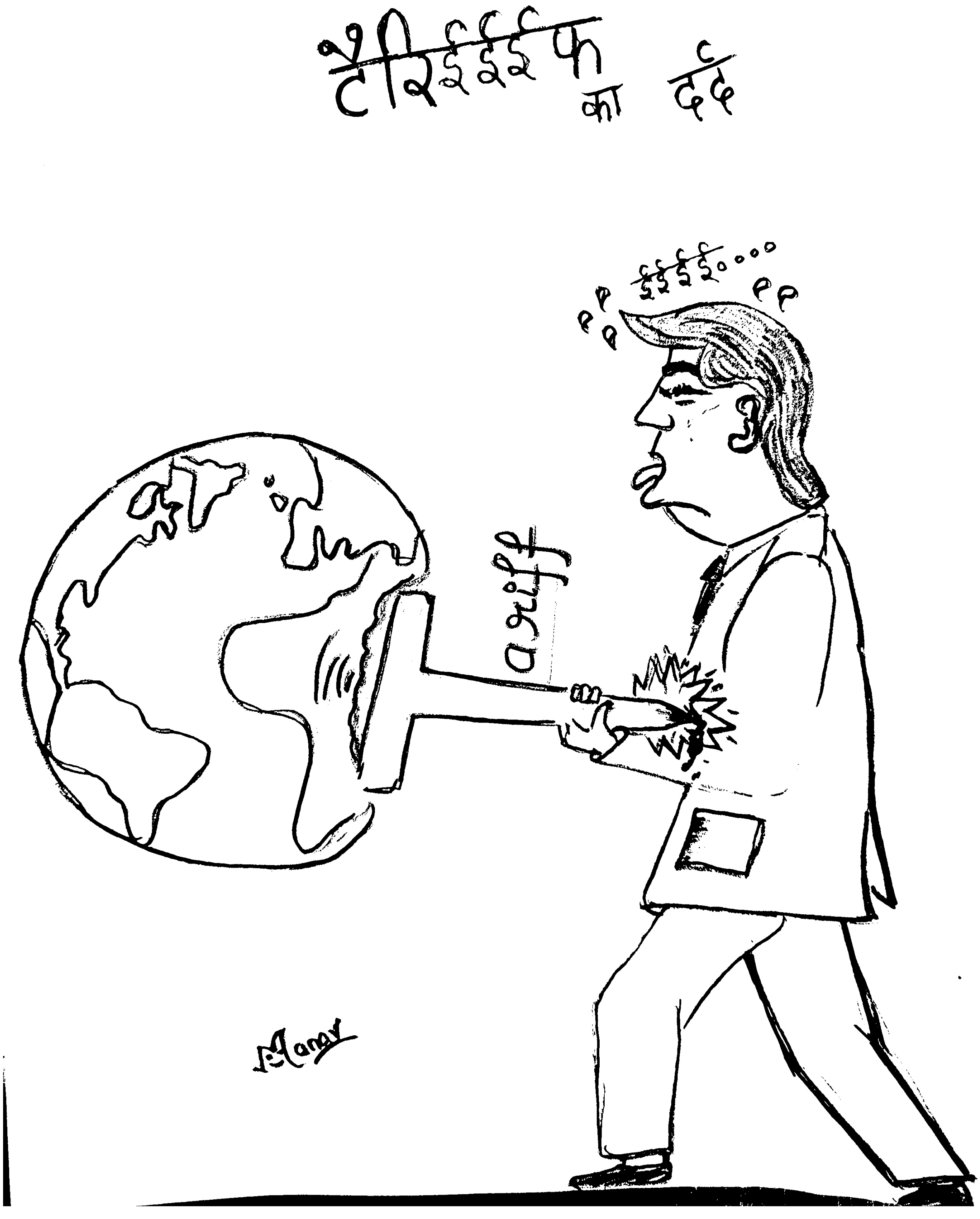
टैरिईईईफ का दर्द
ईईईई....
टैरिफ

चिंता और चिंतन

कामेश

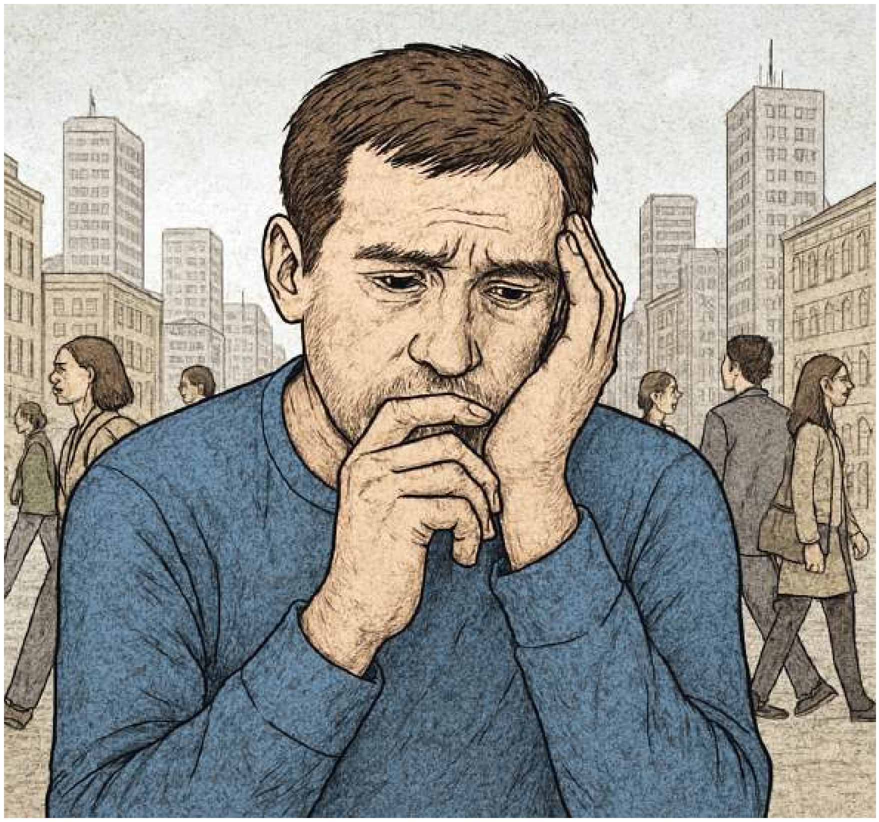

कभी अनुभव करें कि क्या कभी भी ऐसा होता है कि जब हम पीछे बीत चुकी घटनाओं को याद ना करें या भविष्य में घटने वाली घटनाओं का विचार ना करें ऐसा नहीं होता क्योंकि हर वक्त डरे हुए हैं और यदि हम इस विषय पर सूक्ष्म अध्ययन करें तो हमें मिलेगा कि अधिक से अधिक समय तो यही सोचने में लगा देते हैं कि हमारे साथ बुरा ही होगा

मानव प्रकृति का एक चिंतनशील प्राणी है वह भविष्य में होने वाली घटनाओं के प्रति हर वक्त चिंतन मनन करता ही रहता है इसकी यह धारणा है कि आगे ऐसा हो जाएगा तो क्या करेगा इससे अच्छा है कि ऐसा न होने पाए उससे पहले हम कोई हल निकालना भविष्य का तोड़ भविष्य अच्छा बनाने और भविष्य को उज्जवल बनाने की उठा पटक इस चिंतन मनन में इतना सन्नित होता है कि वह अभी क्या कर रहा है इसका भरपूर आनंद भी नहीं ले पता है वर्तमान घट रही उसके साथ सारी घटनाएं कहीं ना कहीं वह घटनाएं होती हैं जिस पर वह कभी विचार नहीं किया होता परंतु फिर भी वह हमेशा आगे की सोचता ही रहता है और ऐसा भी नहीं कि वह पूर्णता अपने भविष्य को अपनी सोच के अनुसार ही कटिबध हो। उसमें भी उसे यह वह बना रहता है कि कहीं कुछ गड़बड़ ना हो जाए कहीं कुछ बिगड़ ना जाए नहीं तो आगे क्या होगा और फिर वह बिगड़ने न पाए इस भाई में ईश्वर का सहारा लेने पहुंच जाता है प्रार्थना शुरू कर देता है मंदिरों तीर्थ स्थलों का चक्कर काटना शुरु कर देता है और उसके बाद भी उसके अंदर यह भी धारणा बनी बैठे रहती है कि मेरे कुछ करने या चाहने से क्या होगा ईश्वर चाहेगा तभी तो हो सकता है अर्थात सब कुछ प्रयास करने के बाद भी मन में एक भय बना ही रहता है शायद मैं जैसा चाह रहा हूं वैसा ना हो भी तो कैसा होगा यदि नहीं हुआ तो क्या करूंगा। कहने का तात्पर्य है कि वह आज के पल को अभी की स्थितियों को जीना ही भूल जाता है ।

कभी अनुभव करें कि क्या हम कभी भी ऐसा होता है कि जब हम पीछे बीत चुकी घटनाओं को याद ना करें या भविष्य में घटने वाली घटनाओं का विचार ना करें। ऐसा नहीं होता क्योंकि हम हर वक्त डरे हुए हैं और यदि हम इस विषय पर सूक्ष्म अध्ययन करें तो हमें मिलेगा कि अधिक से अधिक समय तो यही सोचने में लगा देते हैं कि हमारे साथ बुरा ही होगा। जैसा हमारी सोच में बैठ गया है कि भविष्य में बुरा ही होता है तभी तो हम भयभीत होते हैं यदि हम निरंतर भविष्य की चिंता में डूबे हुए हैं तो निश्चित ही उसका कारण यह नहीं कि हम सजग हैं। भविष्य में आने वाली अच्छी घटनाओं की स्थितियों की सोच कर बल्कि हम तो यह मान बैठे हैं कि कुछ गड़बड़ ना हो जाए कुछ गड़बड़ ना हो जाए। हम लगभग मौकों पर बिगड़ने से भयभीत होते हैं, हम नकारात्मक ही सोच पाते हैं क्योंकि हमें यदि हम नकारात्मक ना सोचे तो हमें भविष्य की

सोच की जरूरत ही महसूस नहीं होगी। यदि हम पूर्ण रूप से मान लें कि जो होगा अच्छा ही होगा तो हम सोचना बंद कर देंगे हम विचार शून्य हो सकते हैं ।

हम अपने जीवन का वर्तमान पल खुशी हाली से जी सकते हैं परंतु ऐसा नहीं हो पाता ,हम तो डर में जी रहे हैं कल्पना में जी रहे हैं। विवेकानंद जी के एक वचन है - भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में भविष्य की चिंता करो। मैं यह नहीं कहता कि विवेकानंद जी ने गलत कहा परंतु सोचने की यहां यह है बात की, यह भी तो कहा जा सकता था कि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है हम भूत से प्रेरणा लेते हैं तो कहीं ना कहीं वह प्रेरणा मेरे किस काम की क्योंकि उस समय समाज की प्रकृति की या वातावरण की जो स्थिति थी वह पूरी तरह से वही स्थिति पुनः आ सकेगी, क्या वही समय अर्थात हमारा भूत से प्रेरणा लेना तो व्यर्थ हो गया, निरर्थ हो गया, कहा जाता है इतिहास खुद को कभी दोहराता नहीं तो इतिहास से पूरी घटनाओं से आगे की जीवन के लिए हमें क्या प्रेरणा देगा कभी-कभी ऐसी भी स्थिति बनती है कि हर किसी के जीवन में घटती है कि आज हम जिस कमजोरी या जिस कारण से परास्त होते हैं यह जो घटना में दुखद कर गई होती है वही कारण वही स्थिति भविष्य में हमारे लिए अच्छी भी हो सकती है यदि हम भूत से प्रेरणा लेकर चलते तो वह स्थिति हमें गर्त में भी डाल सकती थी ।

इतिहास की लडाइयों का अध्ययन करके सारी राजनीति पर विचार करके भी हम आज के वैज्ञानिक युग में प्रयोग किए जाने वाले अत्यधिक अस्त्र शस्त्रों का सामना नहीं कर सकेंगे वह समय था जब घोड़े पर सवार होकर तलवार और धनुष बाण से युद्ध किए जाते थे आज मिसाइल और विस्फोटकों का जमाना है हम उन युद्धों से प्रेरणा लेकर कहां तक युद्ध कर सकते हैं। पीछे की घटी घटनाओं से हम अपना भविष्य कभी सवार नहीं सकेंगे क्योंकि भूत और भविष्य का कोई साथ नहीं है भविष्य

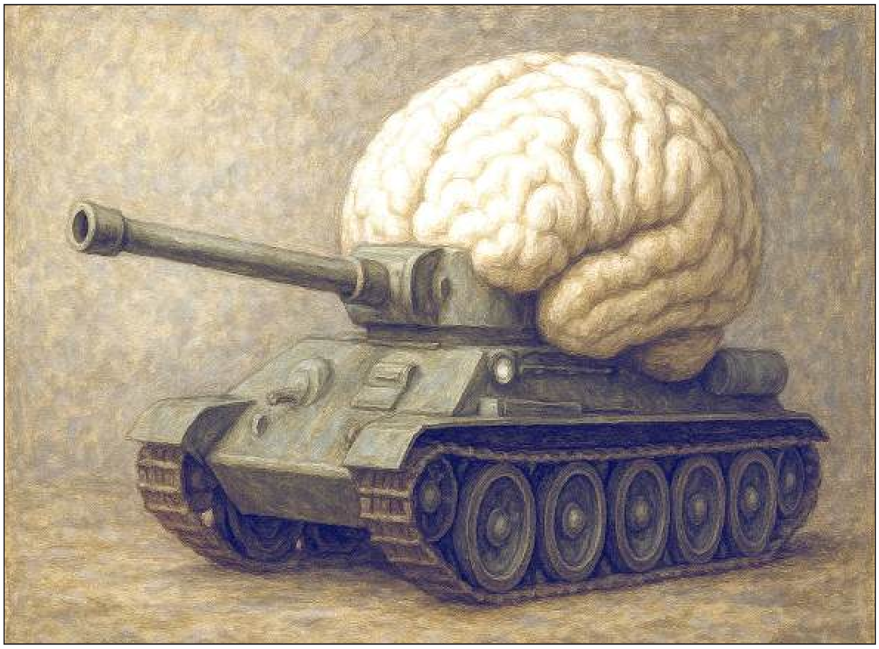

ही तो भूत बन जाता है भविष्य कल्पना है और भूत स्मृति। कल्पना और स्मृति में कोई तालमेल नहीं होता कोई संबंध नहीं है भविष्य वह है जिसे हम जान नहीं सकते और भूत वह है जिसे हम जी चुके हैं और अधिकतर ऐसा ही होता है हम जो नहीं जानते वही जीते हैं वही जी सकते हैं जिसे हम जान नहीं सकते क्योंकि जान लेने के बाद जी नहीं सकते यह मानव मस्तिष्क है कि यदि यह पूर्ण रूप से यह जान ले कि कल मेरे साथ क्या घटना घटने वाली है तो वह आज ही कल को बनने बिगड़ने में लग जाएगा और वर्तमान में जी नहीं सकेगा और जो कल होगा उसे भी नहीं जी पाएगा। क्योंकि फिर अगले दिन की चिंता करने लगेगा यही है मानवी प्रवृत्ति वह सिर्फ स्मृति और कल्पना में जीने का आदत है उसे वर्तमान में जीने और वर्तमान का आनंद लेना तो आता ही नहीं बल्कि यहां तक देखा जाता है कि लोग दूसरों को भी यही शिक्षा देते हैं कि कल भी चिंता करो कल क्या करोगे आज भोजन तो कर रहे हो कल क्या खाओगे अभी आज का भोजन पाया नहीं फिर गया भी नहीं पेट में और कल क्या कहेंगे इसकी चिंता में डूब गए और यह स्थिति की कहीं ना कहीं मात्र मानसिक तनाव के कारण उत्पन्न होती है हर व्यक्ति सिर्फ डर भय में जी रहा है और इस भय का मात्र कारण उसकी कल्पना है वह ईश्वर को मानता तो है पर विश्वास नहीं। वह खुद पर भी विश्वास नहीं करता, जो कर रहे हैं यह सही है फिर भी वह अपना वर्तमान आनंद से जी ले या फिर यही मान ले की जो ईश्वर करेगा वही अच्छा होगा फिर भी वह सुख में जीवन जी सकता है परंतु वह ना खुद पर विश्वास कर पता है ना ईश्वर पर भरोसा करता है और ऐसी स्थिति से वह भूत की चिंता और भविष्य की चिंतन से अपना वर्तमान खो बैठता है।

जरुरत चिंता और चिंतन की नहीं बल्कि विचार शून्य होने की है यदि पूर्ण रूप से यह मान लिया जाए कि हम अपनी तरफ से जो कर रहे हैं करते रहेंगे और आगे की ईश्वर जाने क्या होगा और यही मानकर हर दिन विश्वास के साथ वर्तमान में जीना शुरु कर दें तो मनुष्य जीवन की सारी समस्याएं खत्म हो सकती हैं और वह समाज में सुखमयी स्थिति से अपना जीवन जी सकता है जीवन का पूर्ण आनंद ले सकता है ।

प्रकृति में मूक बधिर जीव साबित हुआ मानव

गौरव पंत

प्रकृति में मानव ही ऐसा जीव है जो सक्षम होने के बाद भी मूक बधिर साबित हुआ। मानव जैसे जीव को मूक बधिर कहना उसकी वास्तविकता का परिचय है। मानव ने कभी प्रकृति को न समझा ना जाना। अपनी वास्तविक अवस्था को त्याग विभिन्न तरह की परिभाषाएं कर डाली। अपनी वास्तविकता को ना समझना ही कितना बड़ा इस जीव का परिचय है। जो हमेशा दूसरों के मार्ग पर चलने के लिए व्याकुल रहा, दूसरे जैसे बनने का प्रयास करता रहा। प्रकृति के इस मूकबधिर जीव का जीवन इसी कारण विकलांगता को जन्म देता गया। अपने को सर्वशक्तिमान बताने वाला यह जीव आज प्रकाश की तलाश में ऐसा भटक रहा है कि इसे सिर्फ अंधकार नजर आ रहा है। प्रकृति में विकल्पता का कोई मार्ग ही नहीं अनिवार्यता ही हर जीव की वास्तविकता है किंतु मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो अपनी बनाई गई विकल्पता को अपनी जीत मान प्रकृति में राज करने की सोच रखने लगा। आज उसी का परिणाम यह है कि सबसे ज्यादा हलचल इसी जीव के अंदर व्याप्त है। मानसिक शारीरिक अन्य विस्तार की ऐसी स्वयं की शैली इस जीव ने बनाई जो इसकी आंतरिकता को पूर्ण रूप से सिद्धांत कर अनंतीयअंत की चौखट पर पहुंचा चुकी है। इसका विज्ञान पूरी तरह सिद्धांत हो चुका है। इसे अब कहीं कोई विकल्पता नजर ही नहीं आ रही। 'प्रकृति के अन्य जीव अपने वास्तविक जीवन का आनंद ले रहे हैं और प्रकृति का वास्तविक एहसास हर पल कर रहे हैं किंतु मानव ही मूकबधिर बन कर स्वयं का जीवन जी रहा है। मानव को कभी पता ही ना चला कि क्या है प्रकृति, कभी मानव ने प्रकृति की आवाज को ना सुना, ना प्रकृति से कुछ बोल पाया। सिर्फ शोषणवादी ये जीव शोषण को बना प्रकृति का भी शोषण करने की सोच बनाता आया। इसी के बनाए हर विज्ञान को प्रकृति इसी की भूमि पर पकाती आई जो अब परिपक्व हो चुकी है।

ना सुनी आवाज मानव ने कभी प्रकृति की।
ना जाना कभी मानव प्रकृति को।
शोषणवादी यह जीव,
प्रकृति मे मूकबधिर साबित हुआ।
बनाया जो इसने विज्ञान उसी में इसका सब कुछ पारित हुआ।
विकल्पता, शोषणता सदा इसकी नीति रही उसी में यह सिद्धांत होता आया।
महाकाल पारा बना जो वहीं ब्रह्मांड को ठोस करता आया।
ना कोई अब बना विज्ञान बना पाएगा,
बनाए हुए विज्ञान में सिद्धांत हो अनंतीय अंत हर किसी का हो जाएगा।
प्रकृति में हर तरफ से ठोसता का विज्ञान नजर आएगा।
ब्रह्मांड अशोक था अशोक नजर आएगा।

(रेखा पुष्प - अंतर्मन ज्यामिति)
धम विज्ञान

अभिषेक पंत

स्पर्श विहीन, स्पर्श विलीन परस्परता की तांडवी वृत्ति में भूगोलीय स्मृति का कानन अंबर अनुपातीय जड़ धड़ शब्दांश बनाकर, स्फूर्ति विलोप की नभ भूमि वार्ता में तन विद्या का जीवनार्थी आवंटन धातु पात्र बनाया गया था, लावण्यता चपलता अंग वात निर्वात धागा धनाढ्यता वृत्त मूल बनाकर, समर्पण विधि से जन आहार शून्यता का जीवनेंद्रीय पारा पराग बनाते हुए, कुम्हार लोहार फव्वारा दर्शन विलयी मानव तन मुद्रा लोचनी पृथ्वी वस्त्र आकर बनाया गया था। अपितु बिंदु शोषण से परे जीव निर्जीव अर्ध पारा चंद्रमा सूर्य सर्वाङ्गिणी में प्रकृति ने रेखा पुष्प निर्माण से अंतर्मन ज्यामिती का मूल रंग ग्रह गृह केंद्रण स्व तन मुद्रा की पराकाष्ठा में आरंभ किया। प्रकृति ने जीव विद्या की सहानुभूति का नाड़ी काल ही मूल तन मन मिलान की सूर्य घटनाओं से परिपक्व किया। जिसमें प्रति उत्तरी श्रृंखला का जीवाश्म बुद्धिमंथन ही जीव कोशिका तनस्वी बंधन का मूल मन रूपी जीवांश उभार बन गया। प्रतिकृति की आलोचना में जीवांश जीवाश्म जीवाणु प्रति स्वीकृति बंधन बनाकर, आवंटन सूची का आंतरिक बल भी घटनाक्रम सिद्धि का वेग बताया जा रहा था। कृषक सम्पति मूलता में जीवार्थी बुद्धि बल को ही ज्यामिति पतन का आकर बताया जा रहा था। अपितु जन्मभूमि से मृत्यु भूमि तक की यात्रा में रेखा पुष्प की साधन वृत्ति से प्रकृति ने अंतर्मन ज्यामिती का आत्मा कोण ही स्वेच्छा सूर्य पर केंद्रित कर दिया। जिसके परिणाम में द्वादशी एकादशी पूर्णांक अर्ध दशा मानक का चंद्रमा पर्यटन ही मानव सूचना का मूल नाड़ी ताल बन गया। जिसमें आकाशवाणी जैसे वृहद् पात्र भी तारा विश्व के मंडल सूची विश्व अङ्गिणी गुरुत्वाकर्षण में पका लिए गए। प्रकृति ने नियति शून्य विश्वसनीयता की गुरुत्व नाड़ी का विकास कर, मूल तृप्ति वृत्ति की कृषि में अंतरिक्ष नभांकनी आत्मा वृत्ति का निर्माण किया। प्रकृति ने शून्यता की इकाई से ध्वनित ऊष्मा प्रकारेणू पदार्थ विचरण की शून्यता से शीतलता प्रमेयक तत्व रागिनी का संचार किया। प्रकृति ने सुलभता की शून्यता में स्वयार्थी पल्लविता का निर्माण कर जीवनार्थी पदार्थ उपगमन नित्यांकिता का स्वशन काल भी परमांकनी विद्या से सिद्धांत किया। रिक्तता परिचय जीवनी संदर्भित उच्चाटन तर्क कुतर्क संज्ञा से धमनी कोष उपद्रव शयनशील करना, समुद्री मंथन की जिज्ञासा का मूल पदार्पण था, जिसमें रेखा पुष्प की चट्टान का ठोस द्रव्य लावणयता की चोट से निष्क्रिय किया जाता था, जिसमें अंतर्मन ज्यामिति का सजीव निर्जीव इतिहास पलायंकृत किया जाता था। इसीलिए तत्व पदार्थ संचय की मूल वृत्ति में चयनित मूलाधार आहार कृषि की न्यूनतम संज्ञा के उच्चतम जलवायु निष्कर्ष को रो रेखा पुष्प कहते हैं एवं प्रतिदिन उत्पन्न मूल घड़ी संचार की प्रथम नाड़ी उदय विलीनतम अंतरिक्ष नभमिलान विलयी सूक्ष्मतम आकाश सिद्धांत की जीवन दर्शन एहसास वृत्ती को अंतर्मन ज्यामिती कहते हैं। अर्थात पवित्र चट्टान की मूल जल घड़ी को मिटाकर,

काल्पनिक प्रकाश की स्तूपीय धमनियों का तर्क कुतर्क विस्फोटं कर, जन आधार जन आहार वाणिज्य प्रकार स्मृति विचार गुणांकन करना ही धम्म विज्ञान की उत्पत्ति का आरंभ होता है जिसमें रेखा पुष्प की संजीवनी नकल का स्मृति इमारत लक्ष्य भी अंतरिक्ष वाहिनी संवेग सहित मिटा दिया जाता है। जहां से अंतर्मन ज्यामिति की पट्ट कथाओं का केंद्रण मिलान वर्क अर्क प्रधान संस्करण मिट जाता है। अर्थात धम विज्ञान स्वयं में रेखा पुष्प की नकल एवं अंतर्मन ज्यामिति की कल्पनिकता मिटाने वाला धराधड़ संवादित विस्फोटन विलीन विज्ञान है। जिसमें प्रतिकृति की स्मृति का समागम ही सूक्ष्मतम नीति की नियति का आवंटन भाग बन जाता है। जिसमे प्रकृति सूर्य की भौगोलिक स्फुर्ति ही प्रकाश रेखा ज्यामिति को ध्वनि यात्रा में लीन करती है। अर्थात एकाग्र रक्षा कृति की खगोलीय ओजस्विता से निर्मित भौगोलिक एहसास की मूलता में विकास करने वाले ब्रह्माण्डी बीज स्वर को रेखा पुष्प कहते हैं एवं स्वयं समागम चरित्र परिमार्जन विलीन द्रव्य संचय की आकृति आहार सौंदर्यता को अंतर्मन ज्यामिती कहते हैं।

वितरण की प्रस्तुति में विलयन की संतति का पराग भाव रखना ही मानव केंद्रण की ज्यामित रही है। अपितु आध्यात्मिक सौंदर्यता स्वयं में भौगोलिक निर्वाहन का वाहन केंद्र है, जो एक प्रकार का स्वचालित एहसास निर्देश है, जिसमें भाव रूप में वैचारिक अनिवार्यता सबलता की चपलता को भी व्यायाम व्यवहार पूर्ति का तन मन भाग कोणीय अंग द्रव्य बल बना देती है। अर्थात ब्रह्मांड की सूची में सूचना का क्रम ही रेखा पुष्प है एवं पदार्थ नीति में विलीन तत्व नियति की सजीव सूर्यता ही अंतर्मन ज्यामिति है एवं प्रकृति उत्कर्ष की मूलाधार आहार सूर्यता के प्रथम एहसास की सजीव निर्जीव इच्छा स्फूर्ति को धम विज्ञान कहते हैं। वास्तु कोण की वस्तु सबलता में धमनी वृतांत का मूल होता है। सजीव अंतर्चेतना की मूल वृत्ति में अंग रागिनी का कर्म फल होता है। अर्थात न्यूनतम कृषि संदर्भ की सूचना वृष्टि के प्रथम नीतिगमन पूर्णांक को रेखा पुष्प कहते हैं एवं मृदा सकल वर्क ज्योति पारा संचय की बल केंद्रण नियति को अंतर्मन ज्यामिती कहते हैं। अर्थात आयुक्त की सूचना में निर्वहन की बुद्धि तो कल्पना रस है एवं वाहन शुद्धि की चरम सीमा में भाव गुण फल का वातमूल होना संभावना राग है। अपितु सजीव चेतना में अनिवार्य बल की प्रस्तुति से इंधन संचार होना ही रखा पुष्प है एवं आत्मा मात्रा मिलान की इच्छा वृत्ति से मूल आहार रस का खगोलीय वाहन बन जाना ही अंतर्मन ज्यामिती है। सरल भाषा में निर्वहन की स्तुति तो मानव को वंदना की स्फूर्ति लगती है या फिर ध्यान करना मानव को प्रेम जाप की एकाग्रता लगती है। जबकि यह दोनों अवस्थाएं शोषक एवं छिद्रक होती हैं। बुद्धि की गणित पर बल लगाकर विचारों को रोक देना ही ब्रह्मांडीय दुर्घटना है, जिसे बोध दिशा अवस्थाओं का विस्तार कहा गया। अपितु यह एक अप्राकृतिक कृत्य है। चेतन की बुद्धि तो स्वयं में रस वाहन शुद्धी है, जो प्रकृति बल की मूलता में केंद्रित होती है, जहां से आविष्कार साकार नहीं होता। अपितु अस्तित्व मूलाधार आहार कृति शील होता है, तो सूचना को एहसास बनाना ही धम विज्ञान है। अर्थात धरा रूपी मन को धमनी रूपी मन बना कर, ध्वनि रूपी अशोक मन को धड़कन रूपी मन बना देना ही धम विज्ञान की मूलता है। अर्थात सरल भाषा में यदि आयोजक ही प्रायोजक बन जाए तो कृत्रिम स्फूर्ति है

अपितु स्व भाषा में यदि आत्मा विस्तार ही मन रंग बन जाए तो यह प्राकृतिक गति है। अर्थात मानव का केंद्रण समर्पण को मिष्ठान कहता है, जबकि प्रकृति का केंद्रण स्वादर्पण को ही स्वादेन्द्रिय पकवान बना देता है। अर्थात ब्रह्मांडीय सूचना की स्वचलित एहसास वाहिनी के भौगोलिक खगोलीय स्पर्श मिलान इंधनार्थी अंकुरण रोपण तत्व आसनी एकाग्रता सिद्धांत को धम विज्ञान कहते हैं। अर्थात जीवनी निर्देश से परे ऊष्मा यतन की अग्नि में प्रवेश करने वाले ऊष्मा प्रवाहकत्व की मूल दिशा सिद्धि को धम विज्ञान कहते हैं। आचरण प्रादेशित प्रकोप वृत्ति मिटाने वाले, मूल जलवायु खगोलीय संपन्नता की शून्य शीतलता वाहन तृप्ति को धम विज्ञान कहते हैं। धम विज्ञान की नीति में जीवाखया की सूचना का मूल बिंदु प्रकृति लीन होता है, जिसमें सर्वस्व आयु जड़त्व की रासायनिक संयोजकता ही पात्र पारा निर्वहन को मन्थनी

पृष्ठांश में आत्मा लिप्त करती है। ब्रह्मांडीय विचरण की एकाकी इकाई में बिंदु रेखा शुनयांकन को सिद्ध करने वाले भौगोलिक संवर्धनी तत्व प्रसारण नियति को धम विज्ञान कहते हैं। मानव जीवन की रूप आवंटन प्रकृति को भी नीति शुनयांकन में ध्वनित आख्या का तन मन मिलान कर्ता बना देने वाले स्वशन नाड़ी वाहन चुंबकत्व को धम विज्ञान कहते हैं। जिसमें पूर्णता की दृष्टि का पहला वात निर्वात परिवहन ही आगाँक श्रुति का मन्थनी दृष्टिकोण बन जाता है, जो अंततः रेखा पुष्प की सारणी में अंतर चेतना ग्रंथि को अंतर्मन ज्यामिती बनाता है।

रेखा पुष्प

अनवरत प्रकाश की शीतलता में शून्य दर्शन का जीवंत वृतांत बनाने वाले स्वाभाविक खगोलीय ग्रह की मूल पूर्णिमा को रेखा पुष्प कहते हैं। प्रतिकृति की आलोचना में जीवगामी ऊष्मा का द्वार मुकुट मिटाकर, सुलभता की भेंट में तत्व स्पंदनी विराटता बनाने वाले अति सूक्ष्म पदार्थ पारागंधीय मानक को रेखा पुष्प कहते हैं। प्रभावित अनुवांशिक ज्योति ज्यामित विषय अंकन की प्रवाहित समाहित स्वरभाव रेखांकन नीति को प्रद्युम्नित आकृति में निर्वात लीन किया जाता है। जहां से प्रकृति प्रवृत्ति आकर्षण में चुंबकीय दर्शन का पदार्थ शूण्यांवन गंधलीन किया जाता है। उत्पन्न भाव की मानसिकता को पदार्थ शून्यता में रासायन लिप्त किया जाता है, मूल वैचारिक दर्पण को जीवनशील अंतर चेतना में शून्यलीन किया जाता है, इसी आधार में जीवाश्म जीवाणु अंकुरण का रेखा पुष्प बीजांकित किया जाता है।

अंतर्मन ज्यामिति

आवंटन सूची की क्रमांक शैली का जिवार्थी पराग भाव शून्य कर, स्वभावी अंकन की वातावरण माला को जीवाश्म बुद्धि का मृदा चालक बनाने वाली इच्छा सागर मन्थनी विद्युता को अंतर्मन ज्यामिती कहते हैं। अंतर्मन ज्यामिती से जीवन शुद्धि का विचार कोष इच्छा लीन अनिवार्यता में दर्पण लीन किया जाता है, आकृति प्रकार अंतर चेतना से व्यूहलीन व्यवहार को भूगोललीन किया जाता है। अर्थात पराग शीतलता की सूर्य शूण्यांवन गति को अंतर्मन ज्यामिती कहते हैं।

धम विज्ञान की सूक्ष्मता में स्वभावी अंतर चेतना का काल द्रव्य ही इच्छा ध्रुवीय रिद्दिमा को राधिका लिप्त करता है। जहां से उत्पन्न स्वशन माला चित्त ही नाड़ी कलाओं को गतिलीन करता है। धम विज्ञान की नीति नियति पदार्थशीलता से स्वयाकार परमाकार परागकार अंतर चेतना में स्वसूचना परस्थिति का संचार तापमान लीन होता है। आकृति चक्र की भूमिका में ध्वनि शील आवंटन का मुद्रा मूल्य संस्थापन भी नामांकित उमीद्वारिता को खगोलीय छिद्रण में जीवन रहित करता गया। अपितु धम विज्ञान की परस्परता में जीवाश्म जीवाणु संतृप्ति का मूलाधार रचना कवच भी मृत्यु आहार की संपूर्णता में आत्मालीन करता रहा। जहां से अवज्ञा अज्ञेय संविधान का मूल तर्पण भी पका लिया गया। अर्थात जीव अर्थ की मूल इकाई के मानव भाषा विराम चित्र को संवर्तित आकाशगंगा का सूक्ष्मार्थी शयन श्रोत बना देने वाले सूर्य शुण्यांवन चुम्बक को धम विज्ञान कहते है। जहां से उत्पत्ति की छाया का मूल कवच भी इच्छा वयमानुकूलन की निजी इकाई होती है। जिसमें भंवर संवेदना की कुल नीति का नियति प्रावधान भी मिटा दिया जाता है। अर्थात गमन गर्भ गंधीय ग्रह शाला की जीवन संदर्भित विषय इकाई के जलवायु संचय को धम विज्ञान कहते हैं। जिसमें रेखा पुष्प की संवर्तित श्रृंखला ही अंतरमन ज्यामिती की सजीव पदार्थ नीति को तत्वशाला विलीन करती है। अर्थात गुप्त भाव की गणना में गृह दोष इकाई का संचालन तो कल्पना मात्र है स्वाध्यायी ऊष्मा की पदार्थ पद्धति में सूचना कोशिका संकलित होना ही एहसास की अनिवार्यता है, जिसमें धम विज्ञान की पूर्ति ही मूल अंकन चित्र की खगोलीय भाषा है ,जी घडी मात्रा नाड़ी यात्रा को तत्व स्पंदनीय रिद्धिमा का इच्छा चक्र बनाती है, जहां से विषय सेतु वाहन प्रतिकृति ही ध्वनित मुद्रा प्रकाट्य का पदार्थ मूल विलयन कराती है। अर्थात तापमान वाटिका संचय की अंग अंकन रागिनी के अंतरिक्ष दृश्यों की सजीव भूमि में पकने वाले निर्जीव लक्ष्य की ईंधन साधना संचालित गतिशील सूर्यता प्रवाहकत्व को धम विज्ञान कहते हैं।

अंतर्मन ज्यामिति में शून्यता का व्यूह ही जीवाश्म प्रतिकृति को खगोलीय वेग से चिन्हित करता है, जिसमें अंतर्मन ज्यामिती का खनिज भार ही विषय पूर्ति की चेतना को सक्रीय करता है, जहां से उत्सर्ग विसर्ग विभावरी में व्याकरण मूल का जीवन भाव राधिका मार्ग पर अग्रसर हो जाता है, जो एक प्रकार का व्यूहलीन तन रस होता है। अर्थात अंतर्मन ज्यामिति ही बीजात्मा अंतरात्मा संचालन की प्रकृति प्रकाश वृति होती है। जिसमें ध्वनित एहसास की तत्व माला ही पदार्थ चक्र की रासायनिकता को द्रव्यलीन करती है। अर्थात संचय विषय की संतृप्ति का मूल भाव हुई जीवन अंकुरण का विद्युत् मार्ग होता है , जिसमें चुंबकत्व की जीव शाला ही आत्मा विषय के योग को परिपूर्ण करती है। अर्थात ब्रह्मांड की सजीव अंश चेतना ही मृदा अनुकूलन की इकाई है, जिसमें व्यूह रस चेतन की निर्जीविता ही इच्छा रस की व्यवहारिक नाड़ी होती है। अर्थात ब्रह्मांड में अनंत जीवन मात्र कल्पना है, मृत्यु एक रासायनिक अवस्था है, जिसमें रेखा पुष्प ही इस कल्पना को स्थायित्व से अनिवार्यता तक की यात्रा से पकाता है। यहां से अंतर रस की चेतना ही मृदा भाव जीवाश्म को जीवाणु युक्त करती है। अर्थात फलों की माला में वृक्षों की नीति ही मानव का रेखा पुष्प एवं नितांत गुरुत्वाकर्षण में जीवाश्म जीवाणु कृति की ग्रह चुंबकीयता ही इच्छा रस विषय की मानव अंतर्मन ज्यामिती है। अब आकाश का प्रकाश ही प्रकृति की प्रवृत्ति को छन्नी बनाकर क्रिया कर रहा है, रासायनिक अंकुरण की रेखा पुष्प की सजीवता को पका रहा है, जिसमें अंतर्मन ज्यामिति का मूल विद्युत पारा ही आंतरिक संरचना की नीति को रासायनिक मिलान का पारा चित्र बनाता जा रहा है। प्रकृति की रहस्यमयी ईकाइयों में मूल भाव की संस्कृति ही कृषि शून्य बंधनों से मुक्त हो रही है। धम विज्ञानी चेतना वाहन संवेग का मूल शून्य योगधारित कर रहा। अब जिस कक्षा की इकाई

में सूर्या वृत्त का मूल अमल भगांक लाभांश प्रतिशत घोलन सक्रिय कर रहा, प्रकृति की रस इकाई में जीवाश्म जीवाणु लावणयता प्रकाश अंतर्मन ज्यामिति से उभरता जा रहा है, अर्थात धरा रूपी मन की सूर्यता में स्वधन परमात्मा शीर्षता को मन अंग अंक सूचना बनाने वाले ब्रह्मांडीय एहसास को धम विज्ञान कहते हैं। धम विज्ञान की प्रयोगशाला नहीं होती, धम विज्ञान में नक्षत्रशाला नहीं होती, धम विज्ञान धमनी प्रासंगिक चिन्ह नहीं होता, धम विज्ञान में पूर्णाहुति की बली नहीं होती। अर्थात ब्रह्मांडीय सर्वगमन इकाइयों का चिता चेतन द्वार ही धम विज्ञान है, जिसमें पूर्ण पराग पारा संसार ही मूल वृत्ति से गंध युक्त होता है। अर्थात धमनी शील स्वशन क्रिया की नाड़ी घड़ी के तापमान मानक को धम विज्ञान कहते हैं। अर्थात जीवन ज्योति पराग पारा दृश्य की अंतर्मन ज्यामिति के रेखा पुष्पलीन ब्रह्मांडीय जीव निर्जीव गति मिलान अनुपात को धम विज्ञान कहते हैं। अर्थात है वही भार जो तापमान को बल बना रहा, है वही आहार जो गति को मति बना रहा है, ब्रह्मांड में धम विज्ञान ही जीवन मृत्यु चक्र को पूर्ण कर, आत्मा विस्फोटन से, प्रकृति प्रवृत्ति को ठोस बना रहा।

हर रूह की जिंदादिली में नूरी जिहान का पहला मिट्टी दान होता है, जब भी जिहानी तूफान जुबानी होता है, हर पहलू में मुश्क का राज मिट्टी दान होता है, हर वजह की वजनदारी में ज़ेहानी पारा गर्म हो रहा, हर बदन की अंगीठी में जिहानी चाहत का मर्तबान ही पहला मुश्कदान होता है। हर पनाह हर रईसी मिट रही, इंसानी जहन की शीशी मिट रही, जिसने जैसा सोचा वैसा ही रंग बनाया, हर कर्ज की मुहिम मिट रही, हर मर्ज की तासीर मिट रही।

हर चाल की ढाल से हर वजन की खाल
का पहला पैमाना सामने आएगा
हर रोज़ होगी क़यामत हर जहन की चाहत
से जिहानी मुश्क का वक़्त सामने आएगा
जिसने जैसा आसमानी धुआं बनाया, वैसे
ही मुश्क की चिमनी पाएगा
वक़्त की हर जिहानी हरकत मिट्टी के पर्दे
पर उभर रही
जिसने जैसा बर्तन बनाया वैसा ही खाना
पाएगा।

The right to conceal the negligence of magnetism is a myth, the only magnetic conductance is the right to desire .

निष्क्रियता की भावधरा ही सरल कर्म मार्ग धरा है

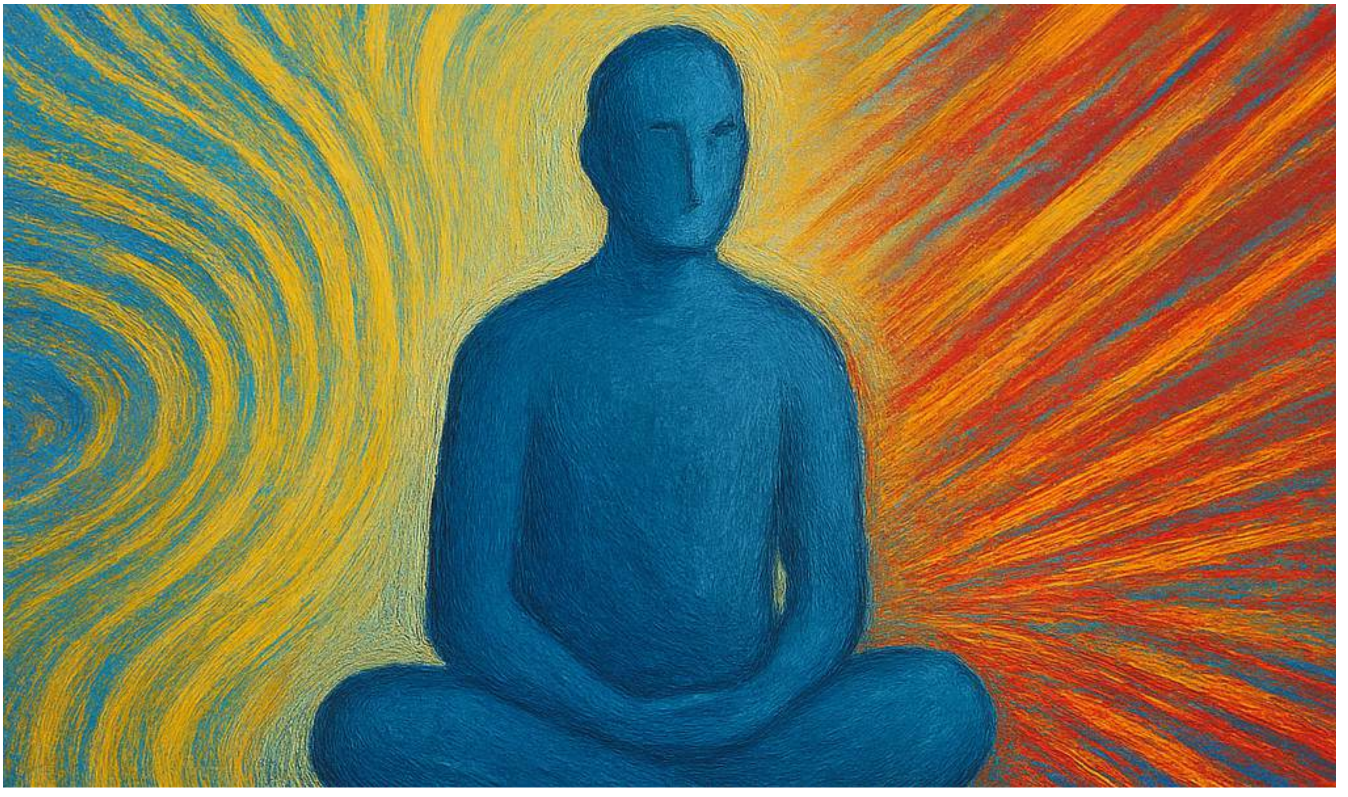

सुमनलता

मानव की उत्पत्ति का जीवन चक्र कोई नई प्रणाली तो है नहीं मानव ने अपने जीवन यात्रा कभी पूर्णकी ही नहीं किंतु परंतु के कच्चे काल में अपनी यात्रा ही करते रहे तो जो अतिरिक्त शेष बचते चले गए वहीं शेषता ही अगली यात्रा की जलवायु बनाते हैं वह मृदा आधार होते हैं। जब मृदा आधार ही कच्ची प्रदूषित और दुर्गंध रही तो मानव की कला कैसे साधारण रह सकती है।

तत्व+ तत्व अर्थात दो रसायनिक गुणोंको मिलाकर बनता तीसरा गुण यानी पदार्थ जो अपने तत्वी गुणके भूखको तृप्त करनेके लिए ही सजीव अवस्था की यात्राकरते है एवम इस तत्व गुण रूपी भूखको प्रकृति आंतरिक अवस्था का वह इंधन कहती है जो स्वयं अपने जलवायु ऊर्जा कि रसायनिकता को लेकर उत्पन होते है। अपने विज्ञान को पूर्ण करनेका इंधन एवम विज्ञान स्वयं लेकर आते हैं जिसे स्वाभाविक प्राकृतिक प्रवृत्ति क्रियाकहते है और जो अपने गुणका विस्तार करते है ताकि जो मूल है वास्तविक अवस्था है उस अवस्था तक वह विज्ञान पहुंचे एवं तत्व व्यवस्था तृप्त होकर अपने सद्गुण वक्ता का उर्जा विस्तार करें। अवस्था एक ही होती है परंतु उनके आयतन अनेकों होते हैं उनकी अवस्था की ऊर्जा ऊर्जा विघटन की अनुप्रिया करते हैं तब जो ऊर्जा का विस्तार होता है वह ऊर्जा जहां तक अपना विस्तार करते हैं वहां तक उस अवस्था का विज्ञान रिसीव करने वाले गुण के गुण से मिलान कर विस्तार करते हैं और ऊर्जा जलवायु बंद कर विस्तार करने वाले विज्ञान को परिपक्व करते हैं उदाहरण के लिए जब समूह में दसलोग रहते हैं और किसी एक व्यक्ति की चर्चा होती है तो दस लोगों के अलग-अलग मत आते हैं व्यक्ति

तो वही है उसका गुण भी वही है लेकिन उस एक ही व्यक्ति के गुण दसों भूमियों में अलग-अलग रूप में विस्तार कर गए और उस एक व्यक्ति पर दसों लोगों की वैचारिक मानसिक गुण कला हावी होकर सक्रिय कार्य करने लगेगी क्योंकि पहले तो उस एक व्यक्ति के विज्ञान का दसों लोगों में विस्तार हुआ जो उस व्यक्ति की ऊर्जा का विस्तार है यानी यही भूख है जब दसो लोगों में से कोई एक विशेषता है उसके बारे में सोचेगा तो स्वभाविक सीक्रिया है कि जहां से वह ऊर्जा आई वापस वही जाएगी यानी जब दोनों भूमियों का विज्ञान परिपक्व हो गया और जब दोनों की ही ऊर्जा जिस क्षण पूर्णता परिपक्व हो जाते हैं व्यक्ति का गुण विज्ञान परिपक्व होकर इंधन की तरह उसे तृप्त करने लगता है। अर्थात किसी भी क्रिया प्रतिक्रिया अवस्था गंध गुण एवं विज्ञान का विस्तार होगा ही तभी जब पूर्व काल से उस विज्ञान का अंश मौजूद रहेगा मानव की उत्पत्ति का जीवन चक्र कोई नई प्रणाली तो है नहीं मानव ने अपने जीवन यात्रा कभी पूर्णकी ही नहीं किंतु परंतु के कच्चे काल में अपनी यात्रा ही करते रहे तो जो अतिरिक्त शेष बचते चले गए वहीं शेषता हि अगली यात्रा का जलवायु बनाते हैं वह मृदा आधार होते हैं। जब मृदा आधार ही कच्ची प्रदूषित और दुर्गंध रहीतो मानव की कला कैसे साधारण रह सकती है। तात्पर्य यह है कि मानव यदि संपूर्ण विज्ञान का रहस्य जान भी ले जीवन में घटनाएं किस कारण से हो रही है उसके पीछे किस तरह से रसायनिक अवस्थाएं अपना कार्य करती है उसके बावजूद भी मानव कुछ नहीं कर सकता है उसे उन अवस्थाओं के तहत सिद्धांत होकर उस विज्ञान से गुजरना ही है जिसे ब्रह्मांड की कोईभी व्यवस्था कोई भी विज्ञान या ऊर्जा परिवर्तित नहीं कर सकती हैं और हस्तक्षेप करने में सफल भी हुए तो मात्र इसलिए क्योंकि उस अवस्था में हस्तक्षेप का कोई ना कोई विज्ञान शेष बच रहा होगा या संरक्षित होगा जिसे मिटनेकेलिए उसमें हस्तक्षेप हुआपरंतु इसके बावजूद भी उससे सिद्धांत के कर्म घड़ी को नहीं बदला जा सकता है जिस से गुजरना ही ब्रह्मांड की अनिवार्यता है।

आकार प्रकार साकार इन तीनों से सक्रिय सजीवता की जलवायु बनती है। आकार-इच्छाओं की आकृति है शेष कच्चे रसायनों का उर्जा गेंद है जिसे सहजीविता का सजीव आकार देकर परिपक्वता की मृदा के आधार का गर्भ निर्माण होता है।

आकार प्रकार साकार इन तीनों से सक्रिय सजीवता की जलवायु बनती है। आकार-इच्छाओं की आकृति है शेष कच्चे रसायनों का उर्जा गेंद है जिसे सहजीविता का सजीव आकार देकर परिपक्वता की मृदा के आधार का गर्भ निर्माण होता है।

प्रकार-आकार के गुण के प्रवृत्ति को नियत का विकास करने वाली वह अवस्था जहां आकार की रासायनिक गुणों को शेप देने का कार्य करते हुए गुण चुंबक भूख क्षुधा का निर्माण करने का विज्ञान बनाते हैं जो उसके तृप्ति के मार्ग को हमेशा ही खुला रखें और तृप्ति का मार्ग भी तृप्त हो जाए

साकार-आंतरिक अवस्था के रसायनिक इच्छा जब सजीव बनकर सामने आ जाते हैं अपने अवस्था का भोग करने के लिए तब जो आंतरिक निर्जीवता बाह्य सजीवताकाप्रकाश मिलान होता है साकार तत्व को तृप्त करने का कार्य करते हैं अर्थात तृप्ति की अंतिम अवस्था जहां से कुछ भी शेष ना बचे।

प्रकृति में भाव विज्ञान की गणित ही इच्छा कोषका वह भाग है जहां मानव सभ्यता ने सबसे जटिल अवस्थाओं का निर्माण किया है भाव हस्तक्षेपओं के माध्यम

से ,,जो संभव भी तभी होता गया जब स्वयं मृदा ही वही थी जिसमें हस्तक्षेप का गुण पहले से ही व्याप्त था क्योंकि मानव मृदाका गुण ही उसकी स्वाभाविक भूख है जो वह अपने किसी न किसी माध्यम से पूर्ण करता ही है जिसमें स्वासन ही मुख्य माध्यम है बाय पदार्थ का सेवन भूखे नहीं हैं उनका विज्ञान ही आंतरिक भूमि के रसायनिक इच्छा से बना है।अर्थात मानव को यह भ्रम होना की इस सजीवदिखने वाली पृथ्वी को ही यह समझता रहा कि इस पृथ्वी पर मौजूद संसाधनों को भोगने के लिए ही उसकी उत्पत्ति हुई है तभी तो उसकी जरूरतों की हर चीज में पृथ्वी पर व्याप्त है परंतु मानव को यह ज्ञात था ही नहीं कि जिस सजीव पृथ्वी संसाधन को भोगनेकी बात वह अहंकारी दावों से कर रहा है उस की पहली उत्पत्ति तो स्वयं उसके भीतर ही हुई थी यानी पहला पेड़ उसने स्वयं अपने भीतर काटा होगा तब उसका विज्ञान पेड़ काटने वाला विज्ञान के रूप में ब्रह्मांड सिद्धांत पृथ्वी जलवायु में रिसीव हुआ तत्व अवस्था सजीवता का रूप धारण कर अपने विस्तार इस तरह से करने लगे कि हकीकत में पेड़ काटने लगा मानव और काटते काटते इतना आगे बढ़ गया कि आज जिस तरह रास्तों में पेड़ों की छांव नहीं मिलते स्वयं मानव भी जब अपने भीतर अपनी ही छांव तलाश रहा उसे नहीं मिल रहा यानी रसायनिक मिलानो की तत्व + तत्व, भाव + भाव, गंध + गंध, विज्ञान + विज्ञान जोड़ घटाव क्रिया है जिसमें परिणाम की आंधी ना केवल बाहे जगत को प्रभावित कर रही बल्कि उसके आंतरिक जगत को सर्वाधिक प्रभावित कर रही है क्योंकि उस अवस्था की उत्पत्ति ही वहीं से हुई है। अर्थात हर अवस्था का पहला बीजारोपण आंतरिक मृदा में होता है जो अपनी उर्जा का ब्रह्मांड विस्तार करते हैं उचित भूमि तक अपनी उर्जा को पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं जहां उनकी इंधन को पकाने का आंच है और

यह भी स्वयं व कोई जानबूझकर नहीं करते हैं स्वता ही स्वाभाविक ही उनसे वह क्रिया होती रहती है और उन्हें भी अज्ञात नहीं होता कि कब उनकी व्यवस्था परिवर्तित हो गई।

स्वयं को निष्क्रिय कर लेना हर अवस्था से स्वयं के कर्म मार्ग को सरल बनाने की वह प्रक्रिया है जहां जो भी हो वह सब सही है अगर गलत होता तो वह होता ही क्यों? ना किसी अवस्था के अच्छाई से प्रभावित हो ना ही उसकी बुराई से प्रभावित हो तभी हमारे स्वयं के कर्म बिना किसी मिलान घर्षण से पूर्ण होंगे और जल्दी तृप्त भी होंगे लेकिन भाव का एहसास जटिल चैनल है मानव के विज्ञान में की जो दूसरों में हस्तक्षेप करने लगता है खुद तो अपना कर्म भोग ही रहा है पता चला अपना भाव कर्म दूसरे में जोड़ दिया उसके भूमि की धारा भी हमारे रसायन से टकरा रही है तो जो कर्म हल्के करने थे वह भारी हो गए और अपने ही अवस्था इतनी जटिल हो गई कि खुद को ही नहीं मालूम कि यह भार आया कहां से यानी अपनी गति में जब दूसरे की गति मिलान करेगी तो दुर्घटना तो होगी ही और उस दुर्घटना में जो कुछ शेष बचेगा फिर अपने आप को पूर्ण करने की क्रिया करेगा जो कर्म में और अधिक मिलान करते जाती है जिससे मिटाने की क्रिया है सिद्धांत ,जब तक कुछ शेष ना बचे तब तक उस अवस्था को इतना पकाना कि उसकी हर अवस्था तृप्त हो जाए। सही गलत धर्म अधर्म की इस परिभाषित सांसारिक क्रिया की यात्रा भूमि में जितना ही संभल संभल कर चलने के प्रयत्न किए गए उतने ही हादसे होते गए क्योंकि जब कोई अवस्था अपनी पूर्णता पे पहुंचने वाली होती है उसे आध्यात्मिक भय, ईश्वर भय, सामाजिक जीवन नियमावली का भय से जोड़कर डायवर्ट करते हुए कच्चे अवस्थाओं का विज्ञान बनता चला गया।

जबकि जो भी होता है वह सही ही होता है क्योंकि उस घटना का घटना ही सही है और अनिवार्य है तभी तो हुआ प्रकृति कोई शोषणवादि या तानाशाह तो है नहीं मानव की भांति वह तो सूर्य आनंद का प्राकृतिक सिद्धांत क्रिया करने वाली वह भट्टी है जो किसी के पक्ष में नहीं होती है।मानव उस घटना के अवस्था से गुजर रहा तो यह सब उसके कर्म की रसायनिक वाणी ही बोल रही है जो वह करता चला आया है वही तो वह एहसास करेगा अपने ही बनाए स्वाद का स्वाद ले रहा है अर्थात अब मानव अपने ही स्वाद के परिणाम का स्वाद ले रहा है जिसमें उसके इंधन की क्रिया उसे ही पकाकर आंतरिक मृदा को पकाते हुए सिद्धांत कर अनंत अंत की यात्रा में प्रकृति मानव को परिणाम भट्टी में पकाते जा रही है।

ब्रह्मगुप्त
महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री

प्रकृति मेल डेस्क

ब्रह्मगुप्त ने दो महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की, "ब्रह्मस्फुटसिद्धांत" और "खंडखाद्य"। ब्रह्मस्फुटसिद्धांत 628 ईस्वी में लिखा गया था और इसमें गणित तथा खगोल विज्ञान के अनेक नवीन सिद्धांत दिए गए। खंडखाद्य में खगोलीय गणनाओं और पंचांग निर्माण की विधियों का उल्लेख मिलता है। उन्होंने शून्य को एक पूर्ण संख्या के रूप में स्वीकार किया और इसके साथ गणनाएँ करने के नियम प्रस्तुत किए। उनके द्वारा प्रतिपादित शून्य का उपयोग आगे चलकर आधुनिक गणित के विकास का आधार बना।

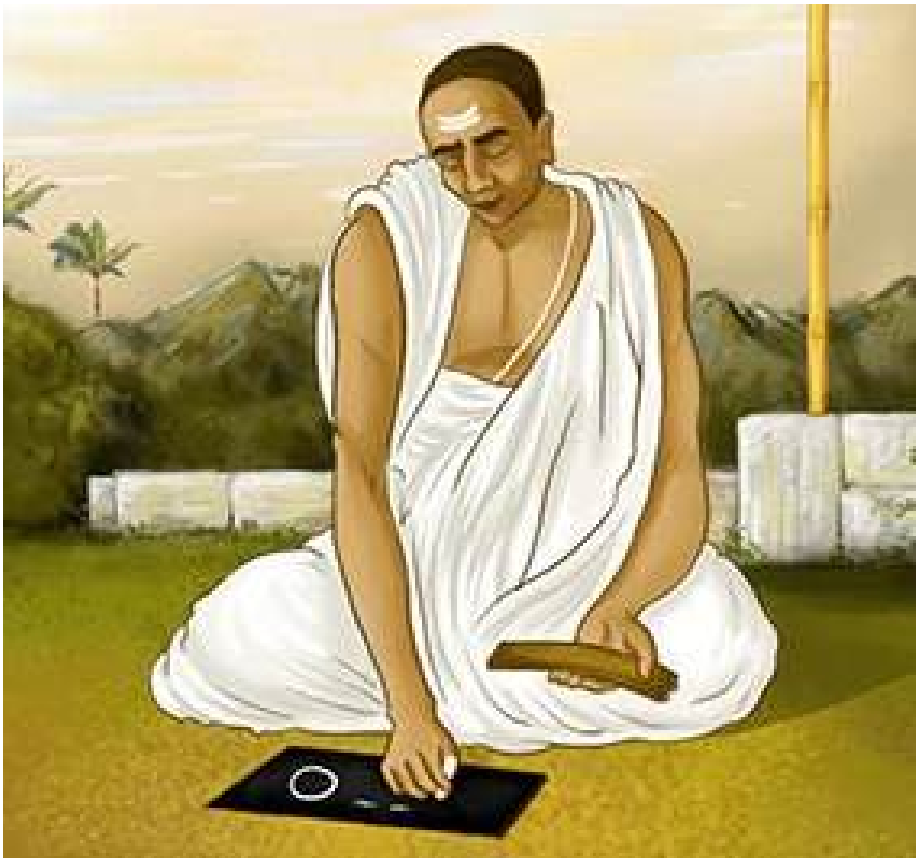

भारत को विज्ञान और गणित के क्षेत्र में कई महान विभूतियों का योगदान प्राप्त है। इन्हीं में से एक महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे ब्रह्मगुप्त। उन्होंने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में अनेक मौलिक सिद्धांतों की स्थापना की। शून्य की परिभाषा और उसके उपयोग का प्रथम उल्लेख उन्हीं के द्वारा किया गया था। उनका ग्रंथ "ब्रह्मस्फुटसिद्धांत" गणित और खगोल विज्ञान का एक अमूल्य ग्रंथ माना जाता है।

ब्रह्मगुप्त का जन्म 598 ईस्वी में राजस्थान के भीनमाल (गुर्जर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन उज्जयिनी में व्यतीत किया, जो उस समय खगोल विज्ञान और गणित का एक प्रमुख केंद्र था। ब्रह्मगुप्त ने गणित और खगोलशास्त्र के क्षेत्र में अपनी अद्वितीय प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उनके कार्यों का प्रभाव न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में देखने को मिलता है।

ब्रह्मगुप्त ने दो महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की, "ब्रह्मस्फुटसिद्धांत" और "खंडखाद्य"। ब्रह्मस्फुटसिद्धांत 628 ईस्वी में लिखा गया था और इसमें गणित तथा खगोल विज्ञान के अनेक नवीन सिद्धांत दिए गए। खंडखाद्य में खगोलीय गणनाओं और पंचांग निर्माण की विधियों का उल्लेख मिलता है। इन ग्रंथों में उन्होंने शून्य, ऋणात्मक संख्याओं और बीजगणितीय

गणनाओं का विस्तृत वर्णन किया।

ब्रह्मगुप्त और शून्य का योगदान

गणित के क्षेत्र में ब्रह्मगुप्त का सबसे महत्वपूर्ण योगदान शून्य की परिभाषा और उसका उपयोग था। उन्होंने शून्य को एक पूर्ण संख्या के रूप में स्वीकार किया और इसके साथ गणनाएँ करने के नियम प्रस्तुत किए। उनके द्वारा प्रतिपादित शून्य का उपयोग आगे चलकर आधुनिक गणित के विकास का आधार बना।

उन्होंने ऋणात्मक संख्याओं और उनके गुणा तथा भाग के नियम निर्धारित किए। इसके अलावा, उन्होंने समीकरणों को हल करने की विधियाँ विकसित कीं, जो बीजगणित के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुईं। उनकी खोजों ने भविष्य में गणित के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि कलन (Calculus) और संख्यात्मक विश्लेषण (Numerical Analysis) में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए।

खगोल विज्ञान में ब्रह्मगुप्त का योगदान

खगोल विज्ञान के क्षेत्र में भी ब्रह्मगुप्त का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उन्होंने ग्रहों की गति का अध्ययन कर सौरमंडल की गतिविधियों का विश्लेषण किया। उन्होंने सौर और चंद्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की और तारों तथा नक्षत्रों की स्थिति पर अध्ययन कर पंचांग निर्माण की विधियाँ विकसित कीं।

उन्होंने कालगणना और वर्षमान की गणना में भी विशेष योगदान दिया। उन्होंने पृथ्वी को ब्रह्मांड के केंद्र में रखने की परंपरागत भारतीय धारणा को चुनौती दी और खगोलशास्त्र में तारों की गति के सही विश्लेषण की दिशा में कार्य किया। उनके खगोलीय सिद्धांतों का उपयोग भारत के अलावा इस्लामी खगोलशास्त्रियों और बाद में यूरोपीय वैज्ञानिकों ने भी किया।

ब्रह्मगुप्त की गणितीय अवधारणाएँ

ब्रह्मगुप्त ने गणित के कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी योगदान दिया, जिनमें अंकगणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति और ज्यामिति शामिल हैं। उन्होंने वृत्त की परिधि और क्षेत्रफल के गणितीय सूत्र प्रस्तुत किए। उन्होंने चतुर्भुज और त्रिभुज की परिधि और क्षेत्रफल की गणना के नए सूत्र भी विकसित किए। उनकी पद्धति से खगोलीय गणनाओं की जटिलता को सरल बनाया गया।

उन्होंने वर्ग समीकरणों को हल करने की एक प्रणाली प्रस्तुत की, जो आगे चलकर गणित के उन्नत सिद्धांतों के विकास का आधार बनी। उनके समीकरण हल करने के नियमों का उपयोग आज भी गणितीय शोध में किया जाता है। उन्होंने गणितीय श्रेणियों, गुणोत्तर श्रेणियों, तथा विभाजन सिद्धांत पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया।

ब्रह्मगुप्त के खगोलशास्त्रीय योगदान का वैश्विक प्रभाव

ब्रह्मगुप्त के खगोलशास्त्र पर किए गए कार्यों का प्रभाव मध्यकालीन इस्लामी जगत पर भी पड़ा। अरब वैज्ञानिकों ने उनके कार्यों का अनुवाद किया और उनके खगोलीय सिद्धांतों का उपयोग खगोलीय गणनाओं में किया। यूरोप में पुनर्जागरण काल के दौरान भी ब्रह्मगुप्त के कार्यों का अध्ययन किया गया और आधुनिक खगोलशास्त्र में उनका योगदान मान्य किया गया।

ब्रह्मगुप्त का प्रभाव और उनकी शिक्षाओं का प्रसार

ब्रह्मगुप्त के सिद्धांतों का उपयोग मध्यकालीन भारत के विद्वानों के साथ-साथ आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी किया। उन्होंने बीजगणित और अंकगणित के क्षेत्र में जिन अवधारणाओं को स्थापित किया, वे आगे चलकर आधुनिक गणित के आधारभूत सिद्धांत बने।

अरब विद्वानों ने उनके कार्यों का अनुवाद अरबी भाषा में किया, जिससे उनके विचार इस्लामी जगत में पहुँचे और फिर यूरोप तक प्रसारित हुए। इस्लामी गणितज्ञों और खगोलशास्त्रियों ने उनके ग्रंथों का उपयोग कर खगोलीय और गणितीय अनुसंधानों को और आगे बढ़ाया। 12वीं शताब्दी में उनके कार्यों का लैटिन भाषा में अनुवाद किया गया, जिससे पश्चिमी जगत में भी उनका प्रभाव पड़ा।

ब्रह्मगुप्त की धरोहर

ब्रह्मगुप्त न केवल भारत के बल्कि सम्पूर्ण विश्व के महान गणितज्ञों में से एक थे। उनकी खोजों और सिद्धांतों ने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शून्य की संकल्पना और बीजगणितीय नियमों के बिना आज का गणित अधूरा होता। उनका योगदान आधुनिक गणित और विज्ञान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उनकी गणितीय विधियों ने न केवल खगोलीय गणनाओं को सरल बनाया, बल्कि उन्होंने भिन्न-भिन्न गणितीय शाखाओं को भी प्रभावित किया। उनके द्वारा प्रतिपादित संख्याओं के गुण और विभाजन के सिद्धांत आधुनिक गणित के लिए मार्गदर्शक बने।

ब्रह्मगुप्त की गणितीय और खगोलशास्त्रीय खोजों का महत्व केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उनकी शिक्षा आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उपयोगी बनी रही। उनकी रचनाएँ आज भी गणित और विज्ञान के शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

उनकी खोजों का सम्मान करते हुए, उन्हें भारतीय गणित का स्तंभ माना जाता है। उनका योगदान भारतीय विज्ञान और गणित की समृद्ध परंपरा का अभिन्न अंग है। इस प्रकार, ब्रह्मगुप्त भारतीय वैज्ञानिक परंपरा के एक उज्ज्वल नक्षत्र हैं, जिनका प्रकाश युगों-युगों तक बना रहेगा।

सौर ऊर्जा चालित कार्बन कैप्चर रिएक्टर: जलवायु संकट का समाधान

मानवेन्द्र त्रिपाठी

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना एक वैश्विक चुनौती बन चुका है। कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) के अधिक उत्सर्जन से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जिससे प्राकृतिक आपदाएँ और पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हो रहे हैं। इस समस्या से निपटने के लिए वैज्ञानिक लगातार नए समाधान खोज रहे हैं। हाल ही में विकसित सौर ऊर्जा चालित कार्बन कैप्चर रिएक्टर (Solar-Powered Carbon Capture Reactor) इस दिशा में एक क्रांतिकारी तकनीक साबित हो सकता है। यह तकनीक कार्बन डाइऑक्साइड को वायुमंडल से अवशोषित कर उसे उपयोगी ईंधन और अन्य उत्पादों में बदल सकती है। इस तकनीक को अपनाने से न केवल कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी, बल्कि जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता भी घटेगी।

सौर ऊर्जा चालित कार्बन कैप्चर रिएक्टर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए प्रभावी समाधान हो सकता है। यह तकनीक न केवल ग्रीनहाउस गैसों को कम कर सकती है, बल्कि स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों का भी निर्माण कर सकती है। यदि सही रणनीति के साथ अपनाया जाए, तो यह वैश्विक स्तर पर कार्बन न्यूट्रल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा

कार्बन कैप्चर रिएक्टर क्या है?

कार्बन कैप्चर रिएक्टर एक ऐसी प्रणाली है जो वायुमंडल से CO_2 को अलग कर उसे सुरक्षित रूप से संग्रहीत या पुनः उपयोग में लाने में सक्षम होती है। पारंपरिक कार्बन कैप्चर प्रणालियाँ अत्यधिक ऊर्जा का उपयोग करती हैं, जिससे उनका संचालन महंगा और जटिल हो जाता है। लेकिन सौर ऊर्जा चालित रिएक्टर इस समस्या का समाधान करता है, क्योंकि यह सूर्य के प्रकाश से ऊर्जा प्राप्त करके कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित और परिवर्तित करता है।

इस प्रणाली का कार्य करने का तरीका अत्यंत नवीन और प्रभावी है। यह एक प्रकार का हाइब्रिड रिएक्टर है, जिसमें सौर ऊर्जा के माध्यम से विद्युत और रासायनिक प्रक्रियाएँ संचालित होती हैं। इसमें कार्बन डाइऑक्साइड को एक विशेष अवशोषक सतह द्वारा पकड़ा जाता है, जो नैनो-तकनीक आधारित होती है। यह तकनीक पारंपरिक प्रणालियों की तुलना में अधिक दक्षता प्रदान करती है और कम ऊर्जा की खपत करती है।

इतिहास और विकास

कार्बन कैप्चर तकनीक का इतिहास 20वीं शताब्दी के मध्य से जुड़ा हुआ है। प्रारंभ में, इस तकनीक का उपयोग केवल औद्योगिक प्रक्रियाओं में किया जाता था, लेकिन जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के कारण इसे अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में शोध शुरू हुआ।

2000 के दशक में, वैज्ञानिकों ने पारंपरिक कार्बन कैप्चर सिस्टम विकसित किए, लेकिन इन प्रणालियों में उच्च ऊर्जा खपत एक बड़ी समस्या थी। इसके समाधान के रूप में सौर ऊर्जा चालित कैप्चर तकनीक

पर शोध प्रारंभ हुआ। इस तकनीक का पहला व्यावसायिक संस्करण 2025 तक विकसित किया गया।

वर्तमान में, दुनिया भर में कई अनुसंधान केंद्र इस तकनीक पर कार्य कर रहे हैं। प्रमुख संस्थान, जैसे कि MIT, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, और यूरोप की विभिन्न प्रयोगशालाएँ, इस प्रणाली को और अधिक कुशल बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

सौर ऊर्जा चालित कार्बन कैप्चर रिएक्टर की कार्यप्रणाली

इस रिएक्टर की कार्यप्रणाली मुख्य रूप से तीन चरणों में विभाजित की जा सकती है:-

कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण: इस चरण में रिएक्टर विशेष झिल्लियों या उत्प्रेरकों का उपयोग करके हवा से CO_2 को अलग करता है। इसमें अत्यधिक संवेदनशील झिल्लियाँ होती हैं, जो वायुमंडल से केवल कार्बन डाइऑक्साइड को सोखने में सक्षम होती हैं। इस प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले झिल्लियाँ नैनो-तकनीक आधारित होती हैं, जो दक्षता को बढ़ाती हैं।

रासायनिक रूपांतरण : इसमें सौर ऊर्जा का उपयोग करके कार्बन डाइऑक्साइड को अन्य उपयोगी उत्पादों में बदला जाता है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से फोटोकेमिकल या इलेक्ट्रोकेमिकल विधियों पर आधारित होती है। उत्प्रेरक और सौर ऊर्जा के संयोजन से यह प्रक्रिया अत्यधिक कुशल होती है।

भंडारण या पुनः उपयोग : प्राप्त ईंधन या रासायनिक पदार्थों को संग्रहित करके विभिन्न उद्योगों में उपयोग किया जाता है। इस तकनीक से कार्बन न्यूट्रल इकोसिस्टम का निर्माण संभव हो सकता है।

विज्ञान और तकनीकी विवरण: इस तकनीक में विशेष रूप से विकसित फोटोसिंथेटिक उत्प्रेरक (Photocatalysts) का उपयोग किया जाता है। यह उत्प्रेरक सूर्य के प्रकाश को अवशोषित कर उसे रासायनिक ऊर्जा में

परिवर्तित करता है। इस प्रक्रिया के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं:

टाइटेनियम डाइऑक्साइड (TiO_2): यह सूर्य के प्रकाश को पकड़ने और कार्बन डाइऑक्साइड को सक्रिय करने में सहायता करता है।

नैनो-सामग्री आधारित झिल्लियाँ: ये झिल्लियाँ अधिक दक्षता से कार्बन डाइऑक्साइड को पकड़ने में सहायक होती हैं।

सौर ऊर्जा सेल : यह रिएक्टर को आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है, जिससे यह प्रणाली पूर्णतः नवीकरणीय ऊर्जा पर कार्य करती है।

ऊष्मा सहनशील इलेक्ट्रोड्स : यह उच्च तापमान में भी विद्युत प्रवाह बनाए रखते हैं, जिससे प्रणाली कुशलतापूर्वक कार्य करती है।

बायोमिमेटिक डिज़ाइन: इस प्रणाली की संरचना पौधों की पत्तियों से प्रेरित होती है, जिससे यह अधिक कुशलता से कार्बन अवशोषित कर सकती है।

इस तकनीक के लाभ

हरित ऊर्जा का उपयोग : यह पूरी तरह से स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत पर आधारित है।

वायुमंडलीय CO_2 की मात्रा में कमी: इस तकनीक से वायुमंडलीय कार्बन स्तर को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।

सिंथेटिक ईंधन का निर्माण: यह जीवाश्म ंधन के स्थान पर उपयोग किया जा सकता है।

औद्योगिक उपयोग : इस प्रणाली से प्राप्त उत्पादों का उपयोग विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में किया जा सकता है।

पर्यावरण अनुकूल: यह प्रणाली प्रदूषण मुक्त ऊर्जा उत्पादन में योगदान देती है।

ऊर्जा की बचत: सौर ऊर्जा आधारित होने के कारण यह कम लागत में कार्य करता है।

सतत विकास में योगदान: यह तकनीक सतत और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल विकास को बढ़ावा देती है।

सौर ऊर्जा चालित कार्बन कैप्चर रिएक्टर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक प्रभावी समाधान हो सकता है। यह तकनीक न केवल ग्रीनहाउस गैसों को कम करने में मदद कर सकती है, बल्कि स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों का भी निर्माण कर सकती है। यदि इसे सही रणनीति और निवेश के साथ अपनाया जाए, तो यह वैश्विक स्तर पर कार्बन न्यूट्रल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

भविष्य में, यदि इस तकनीक का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाए, तो यह जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में एक ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक समस्या

जलवायु परिवर्तन की अवधारणा को सत्यापित करने वाली विभिन्न आई. पी. सी. सी. (इंटरगवर्नमेंटल पैनल आन क्लाइमेट चेंज) की यदि रिपोर्टों पर ध्यान दें, तो स्पष्ट किया गया है कि जलवायु परिवर्तन से नदीय, तटीय, एवं शहरी बाढ़ में वृद्धि से बड़े पैमाने पर अवसंरचना, आजीविका एवं निवास-स्थलों में बदलाव आएगा

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

आज विश्व एक विकट समस्या का सामना कर रहा है। इस समस्या के दुष्परिणाम धीरे-धीरे पूरी दुनिया को चपेट में ले रहे हैं। यह समस्या है जलवायु परिवर्तन।

सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिए गए क्षेत्र में लम्बे समय तक औसत मौसम से होता है। अतः जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है, तो उसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। इसमें वायुमण्डल का दबाव, तापमान, आर्द्रता. हवा की गतिविधि तथा बादलों की गतिविधि आदि का अध्ययन किया जाता है। जलवायु परिवर्तन किसी एक स्थान पर भी अनुभव किया जा सकता है और सम्पूर्ण वैश्विक परिदृश्य में भी। 624 - 546 ईसा पूर्व यूनानी गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री थेल्स ने जलवायु विज्ञान की नींव रखी थी।

प्रसंगवश मौसम और जलवायु के बीच अंतर जान लेना भी उचित होगा। मौसम और जलवायु में मुख्य अंतर यह है कि मौसम नित्य बदलता है, यह विभिन्न ऋतुओं में अलग - अलग होता है, जबकि जलवायु स्थिर होती है। जलवायु परिवर्तन में दिखने वाले बदलाव प्राकृतिक एवं मानवजनित कारणों से हो सकते हैं। यह परिवर्तन एक - दो महीने या वर्ष में नहीं होता हैं, अपितु कई दशक या लाखों वर्षों का समय लग सकता है।

जलवायु परिवर्तन की काली छाया मात्र भारत पर ही नहीं मड़रा रही है, अपितु इससे विश्व के अनेक देश जूझ रहे हैं। ग्लेशियरों का पिघलना, ग्लोबल वार्मिंग, अतिवृष्टि, सूखा, शीत लहर, ग्रीष्म लहर, भू - स्खलन, सुनामी जैसी समस्याएँ जलवायु परिवर्तन का ही परिणाम है।

विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यूएमओ) के अनुसार, 2024 में घातक लू,बाढ़ और तूफानों की कम से कम 151 अभूतपूर्व घटनाएं अंकित की गईं। समुद्री जल के स्तर में आशा से अधिक बढ़ोत्तरी हुई। इन मौसमी

आपदाओं में आठ लाख से अधिक लोग बेघर हो गए और वैश्विक तापमान 1.3 से 1.4 डिग्री तक बढ़ा। जापान में आई हीटवेव ने हजारों को लोगों को चपेट में ले लिया। वहीं पश्चिमी आस्ट्रेलिया, ईरान और माली में तापमान 52 डिग्री से अधिक दर्ज किया गया। वर्ष 2024 में विश्व सहित समस्त भारत में रिकार्ड ग्रीष्म लहर का प्रकोप रहा, यहाँ तक कि ठण्डे प्रदेश उत्तराखंड, हिमाचल जैसे प्रदेश भी असह्य गर्मी से त्रस्त रहे।विश्व में वर्ष 2023 में कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर पिछले आठ वर्षों से सबसे अधिक 3.276 ट्रिलियन टन मौजूद था।

जलवायु परिवर्तन की अवधारणा को सत्यापित करने वाली विभिन्न आई. पी. सी. सी. (इंटरगवर्नमेंटल पैनल आन क्लाइमेट चेंज) की यदि रिपोर्टों पर ध्यान दें, तो स्पष्ट किया गया है कि जलवायु परिवर्तन से नदीय, तटीय, एवं शहरी बाढ़ में वृद्धि से बड़े पैमाने पर अवसंरचना, आजीविका एवं निवास- स्थलों में बदलाव आएगा। इसके अतिरिक्त तापजन्य मृत्यु, सूखाजन्य खाद्य असुरक्षा एवं कुपोषण जैसे सामाजिक. आर्थिक एवं पर्यावरणीय संकट बढ़ेंगे। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन वर्ष 2030 तक 122 मिलियन लोगों को अति गरीबी की अवस्था में ले जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन की जो समस्या सामने आई है, उसका कोई एक निश्चित कारण नहीं है। कारण अनेक हैं,जिनमें से कुछ तो प्रकृति से जुड़े हैं, तो कुछ के लिए स्वार्थी मानव समाज उत्तरदायी है।

सर्वप्रथम प्रकृति से जुड़े प्रमुख कारणों की चर्चा कर लें। इनमें निम्न प्राकृतिक गतिविधियाँ उल्लेखनीय हैं -

महाद्वीपीय प्रथक्करण : महाद्वीपों का निर्माण तब हुआ था, जब लाखों वर्ष पूर्व धरती का एक बड़ा भाग धीरे-धीरे प्रथक होना प्रारम्भ हुआ। इस अलगाव का जलवायु पर भी प्रभाव पड़ा, क्योंकि इससे धरती, उसकी अवस्थिति तथा जलमण्डलों की भौतिक विशेषताओं को परिवर्तित कर दिया। धरती के विखण्डन ने महासागरीय धाराओं तथा पवनों के प्रवाह को भी परिवर्तित कर दिया, जिसका प्रभाव जलवायु पर पड़ा। महाद्वीपों का प्रथक्करण आज भी जारी है। हिमालय श्रेणी प्रत्येक वर्ष लगभग एक मिलीमीटर तक दक्षिण दिशा में खिसकती जा रही है।

ज्वालामुखी : भूपर्पटी की वे दरारें ज्वालामुखी कहलाती हैं, जिनके अंदर की द्रवित चट्टान के विस्फोट से पर्याप्त मात्रा में लावा, सल्फर-डाइआक्साइड, सल्फर ट्राईआक्साइड, क्लोरीन,जलवाष्प, धूलकण तथा राख वायुमण्डल में बिखरकर फैल जाते हैं। ज्वालामुखी से भारी मात्रा में निकलने वाली गैसें और राख कई वर्षों तक जलवायु की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं।

महासागरीय धाराएँ : पृथ्वी की सतह पर लवण जल का विशाल फैलाव महासागर कहलाता है। महासागर जलवायु व्यवस्था से महत्त्वपूर्ण घटक होते हैं। ये पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भाग पर फैले हैं। वायुमण्डल अथवा पृथ्वी द्वारा सूर्य के विकिरण का जितना अवशोषण किया जाता है, ये उससे दो गुना अवशोषित करते हैं। यही कारण है कि जलवायु के निर्धारण में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। समय - समय पर महासागर अपना ताप वायुमण्डल में छोड़ता है. जिससे जलवायु प्रभावित होती है। अत्यधिक ताप जलवाष्प के रूप में पृथ्वी पर ग्रीन हाउस गैस के प्रभाव को बढ़ाता है। इस प्रकार महासागरीय धाराएँ भी जलवायु को प्रभावित करने में योगदान करती हैं।

-मीथेन गैस : नासा के वैज्ञानिकों के एक दल आर्कटिक के वातावरण का कई स्तरों पर अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि आर्कटिक के नीचे एक घातक ग्रीन हाउस गैस मीथेन का विशाल भण्डार है, जो आर्कटिक पर जमी बर्फ को पिघला रहा है। इस गैस से वातावरण भी तप्त हो रहा है। बर्फ में पड़ रहीं दरारों से मीथेन पानी में घुलकर हवा के सम्पर्क में आ रही है, जिससे आर्कटिक क्षेत्र के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर भी तापमान में वृद्धि हो रही है।

प्राकृतिक कारणों से कहीं अधिक मानवजनित कारण जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी हैं, जिन पर हमने बहुत देर में ध्यान देना शुरू किया। आइए! कुछ पर दृष्टिपात करें

ग्रीन हाउस प्रभाव : ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण जलवायु में बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं। कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा में उतार-चढ़ाव प्राकृतिक कारणों से भी होता है और मानवजनित कारणों से भी। औद्योगिक क्रांति के बाद उद्योग-धंधों में तेजी से वृद्धि हुई एवं शहरीकरण की प्रक्रिया में गति आई। इसके कारण कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा में वातावरण में बढ़नी शुरू हुई। दूसरी ओर वनों की अंधाधुंध कटाई और दोहन के कारण पेड़-पौधों द्वारा कार्बन डाई आक्साइड को आक्सीजन में परिवर्तित करने की प्रक्रिया भी मंद पड़ी। कार्बन डाईआक्साइड ही नहीं, ऐसी अनेक घातक गैसें प्रचुर मात्रा में वायुमण्डल में पहुँचने लगी। इनमें मीथेन, नाइट्रोजन आक्साइड, क्लोरो-फ्लोरोकार्बन आदि सम्मिलित हैं। ये सभी घातक गैसें ग्रीन हाउस प्रभाव को बढ़ा कर जलवायु परिवर्तन से जुड़ी नई - नई चुनौतियाँ ला रही हैं।

कृषि : आज हम परम्परागत खेती के बजाय आधुनिक खेती की ओर उन्मुख हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग कृषि में बढ़ा है। जलमग्न चावल की जुताई से मीथेन का उत्सर्जन होता है। जुगाली करने वाले पशु भी वातावरण में मीथेन का उत्सर्जन करते हैं। इससे ग्रीन हाउस प्रभाव बढ़ता है।

जीवाश्म ईंधन : जीवाश्म आधारित ईंधन के दोहन से भी कार्बन डाई आक्साइड और नाइट्रोजन डाईआक्साइड जैसी गैसों का उत्सर्जन बढ़ा है। इस मानवजनित उत्सर्जन से

भी जलवायु परिवर्तन की समस्या विकराल हुई है। विश्वभर की सड़कों पर कार, बाइक एवं भारी वाहनों की संख्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है। इनमें जीवाश्म ईंधन के दहन से ग्रीन हाउस प्रभाव के साथ जल और वायु प्रदूषण भी बढ़ा है। अम्लीकरण भी इसी का परिणाम है। कोयले एवं तेल के दहन के कारण वायु में 30 प्रतिशत तक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन हो रहा है।

शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ःआज शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के नाम पर बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति का अत्यधिक दोहन हुआ है और लगातार जारी है। एक ओर तो पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हुई,दूसरी ओर शहरीकरण के नाम पर वन क्षेत्रों को घटाया। 'ईको फ्रैण्डली' होकर कभी विकास की ओर ध्यान न देकर पर्यावरण से अत्यधिक छेड़छाड़ की। इससे प्रदूषण को बढ़ाकर जलवायु परिवर्तन की समस्या को और गंभीर एवं विकृत बनाया गया। जीवन - शैली में परिवर्तन ने घातक गैसों के उत्सर्जन में पर्याप्त वृद्धि की है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण अनेक भीषण समस्याओं का खतरा पूरे विश्व में मड़रा रहा है। इससे मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। इस परिवर्तन से पड़ने वाले प्रभावों में तापमान वृद्धि, समुद्री जल - स्तर में वृद्धि, वर्षा के प्रारूप में परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं का खतरा, वन्यजीव प्रजातियों की हानि, रोगों का प्रसार और आर्थिक हानि तथा जंगलों में लगने वाली आग की घटनाओं में वृद्धि जैसी भयावह आपदाएँ सम्मिलित हैं।

जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम

जलवायु परिवर्तन के कारण मानव जीवन पर अनेक आपदाएँ आने की संभावनाएँ बढ़ गई हैं। इनके कुछ दुष्परिणाम लगातार सामने आ रहे हैं -

- समुद्री जल स्तर बढ़ने के कारण तटीय क्षेत्रों के जलमग्न होने का खतरा है, जिसके परिणामस्वरूप तटीय क्षेत्रों को खाली करना पड़ेगा।
- -मरुस्थलों का फैलाव एक बड़ी समस्या पैदा करेगा। इससे जल की कमी, खाद्यान्न संकट और बीमारियाँ बढ़ेंगीं।
- पानी की समस्या अभी से सब झेल रहे हैं, अनेक क्षेत्रों में अत्यधिक जल-दोहन से भूजल-स्तर और नीचे जाएगा, जिससे जल के लिए भीषण हाहाकार मचेगा।
- वर्षा की मात्रा में कमी से कृषि उत्पादन में गिरावट आई है, जिससे खाद्य संकट गंभीर हो रहा है।
- खाद्यान्नों और खाद्य-पदार्थों की कमी के कारण लोग भुखमरी, कुपोषण आदि के शिकार हो रहे हैं, जिससे लोगों की असामयिक मृत्यु हो रही है।
- जानवरों, पक्षियों तथा पौधों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं।
- अधिक तापमान से मुक्ति पाने के लिए अतिरिक्त ऊर्जा के संसाधनों यथा एसी, कूलर आदि का उपयोग बढ़ रहा है, इससे वातावरण में घातक गैसों की मात्रा बढ़ रही है।
- हिमनदों के पिघलने से भू-स्खलन तथा हिम-स्खलन की घटनाएँ सामान्य हो गई हैं। विशेषज्ञों के अनुसार हिन्दू कुश हिमालय के ग्लेशियरों की स्थिति बिगड़ने से 200 करोड़ लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ सकता है।

वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु प्रयास

जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने हेतु वैश्विक प्रयास पिछले कई वर्षों से किए जा रहे हैं, जैसे जलवायु परिवर्तन पर निगरानी हेतु अन्तर्सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की स्थापना वर्ष 1988 में यूनाइटेड नेशन्स इन्वायरमेण्ट प्रोग्राम (यूएनईपी) एवं वर्ल्ड मेट्रोलाजिकल आर्गनाइजेशन (डब्ल्यूएमओ) के द्वारा की गई, जिससे विश्व की सरकारों को इस संबंध में एक स्पष्ट वैज्ञानिक दृष्टिकोण उपलब्ध कराया जा सके। जलवायु परिवर्तन के बारे में पहली आकलन रिपोर्ट वर्ष 1990 में तत्पश्चात क्रमशः सम्मेलन आयोजित हुए। पाँचवीं रिपोर्ट वर्ष 2014 में प्रस्तुत हुई,जिसमें ग्रीन गैसों का उत्सर्जन रोकने पर बल दिया गया। वर्ष 2019 में एक रिपोर्ट जारी की गई जिसमें भूमि और जलवायु परिवर्तन पर समग्रता से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

जलवायु परिवर्तन से संबंधित कई वैश्विक सम्मेलन भी हुए हैं, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण सम्मेलनों की व्याख्या निम्नवत है-

- संयुक राष्ट्र संघ द्वारा ब्राजील की राजधानी रियो - डि जेनेरो में वर्ष 1992 में पर्यावरण और विकास सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें 'सतत विकास' का नारा देते हुए 'एजेण्डा 21' कार्य योजना स्वीकृत की गई।
- वर्ष 1997 में वायुमण्डल में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने हेतु एक महत्वपूर्ण समझौता 'क्योटो प्रोटोकोल 'के नाम से किया गया।
- वर्ष 2005 में मॉण्ट्रियाल सम्मेलन हुआ, जिसमें 2012 तक ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने के लिए 'पर्यावरण कोष'बनाने पर सहमति बनी।
- जलवायु परिवर्तन पर वर्ष 2010 में कानकुन सम्मेलन हुआ, जिसमें विकसित देशों के साथ विकासशील देशों ने वर्ष 2020 तक ग्रीन हाउस उत्सर्जन 20 से 25 प्रतिशत कटौती करने पर सहमति बनी।
- वर्ष 2014 में पेरू की राजधानी लीमा में जलवायु सम्मेलन हुआ।
- वर्ष 2015 में फ्रांस की राजधानी पेरिस में संपन्न हुए जलवायु सम्मेलन में 196 देशों ने धरती के बढ़ते तापमान तथा कार्बन उत्सर्जन पर अंकुश लगाने का वाले समझौते को स्वीकार किया।
- वर्ष 2017 में 23 वां जलवायु सम्मेलन जर्मनी के वॉन शहर में हुआ।
- सितंबर 2019 में 25 वां जलवायु सम्मेलन स्पेन के मैड्रिड शहर में हुआ। इसमें यूरोपीय संघ ने यह आश्वासन दिया कि वह 2050 तक जलवायु परिवर्तन निरपेक्ष हो जाएगा।
- वर्ष 2019 में विश्व में जलवायु परिवर्तनों की रक्षा हेतु छात्रों और युवाओं ने स्वीडन में हर शुक्रवार को स्कूल जाने के बदले सड़कों पर जाकर 'फ्राइडेज फॉर फ्यूचर 'नाम के प्रदर्शनों ने दुनिया को झकझोर दिया।

- संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन का 26 वां सम्मेलन वर्ष 2020 में ब्रिटेन के ग्लासगो शहर में आयोजित किया जाना था, किन्तु कोविड-19 महामारी के कारण स्थगित कर दिया गया।
- वर्ष 2022 में जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक सम्मेलन मिस्त्र के शर्म अलशेख में आयोजित हुआ, जिसे कॉप-7 नाम से जाना गया। इसमें वैश्विक तापमान को पूर्व औद्योगिक स्तरों से 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं रखने का लक्ष्य है।

भारत के प्रयास

भारत द्वारा वर्ष 2008 में जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) का शुभारम्भ किया गया, इसमें मुख्यतः निम्न 8 मिशन सम्मिलित हैं

- राष्ट्रीय सौर मिशन
- विकसित ऊर्जा दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन
- राष्ट्रीय जल मिशन
- सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन
- हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन
- जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय आयोग

इसके अतिरिक्त भारत के राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों द्वारा राज्य की कार्य योजना तैयार की गई है, जो राष्ट्रीय कार्य योजना के उद्देश्यों के ही अनुरूप है। इसके लिए भारत में एक अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन का शुभारम्भ हुआ, इसका मुख्यालय गुरुग्राम (हरियाणा) में है। संयुक्त राष्ट्र में 23 सितंबर, 2019 को आयोजित जलवायु आपदा शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत 2030 तक देश के सकल घरेलू उत्पाद में 30 - 35 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन कम करेगा तथा गैर - जीवाश्म ईंधन से 40 प्रतिशत ऊर्जा प्राप्त करेगा।

कहा जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन अब न टाली जाने वाली समस्या के रूप में मानव के समक्ष खड़ा है। विश्व तापन न केवल खाद्य सुरक्षा के लिए संकट खड़ा करेगा, अपितु जल,जंगल और जमीन पर आश्रित प्राणियों का जीवन प्रभावित करेगा। अब समय आ गया है कि सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन की इस चुनौती के लिए एक जुट हो जाए, अन्यथा समस्त मानवता खतरे में आ जाएगी।

सद्गुण एवं संघर्ष ही किसी को राम बनाते हैं

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, (दिल्ली)

क्या हम राम को इसलिए जानते हैं कि राम एक प्रसिद्ध राजा के पुत्र थे अथवा एक प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न हुए थे? न जाने कितने पराक्रमी व वैभवशाली राजा और उनके पराक्रमी व वैभवशाली पुत्र हुए हैं लेकिन हम कहाँ उन्हें जानते हैं? यदि हम राम को जानते हैं तो हम उन्हें उनके विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण जानते हैं।

पिछले दिनों डाक से एक पत्रिका आई। उसके मुखपृष्ठ पर एक अत्यंत सुंदर, सार्थक व नयनाभिराम चित्र छपा था। चित्र में राम माता कौशल्या के चरण स्पर्श कर रहे हैं। चित्र के नीचे मानस की सुंदर पंक्तियाँ लिखी हैं -

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा,
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।

मैंने ये चित्र अपने नन्हे पौत्र प्रशस्त को दिखलाया और उसे चित्र के विषय में बतलाया। उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। भगवान राम कौन हैं? वे माता कौशल्या के पैर क्यों छू रहे हैं? पैर छूने से क्या होता है? मेरे मन में भी अनेक प्रश्न उठ खड़े हुए। जो स्वयं भगवान कहलाते हैं वे क्यों सबके पैर छूते हैं? वास्तव में इन्हीं कुछ प्रश्नों के सही उत्तरों में निहित है एक बालक के भगवान बनने की प्रक्रिया।

राम के समकालीन अथवा उनके बाद भी न जाने कितने बालक अथवा व्यक्ति हुए हैं लेकिन हम केवल राम अथवा अन्य कुछ महापुरुषों को ही जानते हैं। नहीं भी जानते तो उनका नाम अवश्य सुना है। क्या हम राम को इसलिए जानते हैं कि राम एक प्रसिद्ध राजा के पुत्र थे अथवा एक प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न हुए थे? न जाने कितने पराक्रमी व वैभवशाली राजा और उनके पराक्रमी व वैभवशाली पुत्र हुए हैं लेकिन हम कहाँ उन्हें जानते हैं? यदि हम राम को जानते हैं तो हम उन्हें उनके विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण जानते हैं व उनके उदात्त गुणों के कारण उन्हें भगवान मानते हैं। बचपन से ही राम गुणों का आगार हैं। बालक राम प्रातःकाल उठकर माता-पिता व गुरुओं अथवा अग्रजनों को शीष नवाते हैं।

राम में बचपन से ही बड़ों के प्रति आदर-सम्मान, अभिवादन व शिष्टाचार के संस्कार हैं। राम माता-पिता व गुरुओं का सम्मान करते हैं। वे माता कौशल्या का ही नहीं सभी माताओं का पूर्ण आदर करते हैं। राम एक आदर्श पुत्र व शिष्य ही नहीं एक आदर्श भाई भी हैं क्योंकि वे अपने सभी भाइयों से अगाध प्रेम करते हैं व उनका मार्गदर्शन करते हैं। ऐसा बालक सबका स्नेह व आशीर्वाद पाता है। यह स्नेह और आशीर्वाद ही है जो किसी को भी ऊँचाई पर ले जाने में सक्षम होता है। राम भी अपने इन्हीं गुणों के कारण बहुत ऊँचे उठ जाते हैं। अपने पूरे जीवनकाल में अवस्थानुसार वे सदैव सद्गुणों का पालन करते हैं।

राम एक अत्यंत आज्ञाकारी पुत्र हैं। पिता व गुरु की आज्ञा से वे अल्पवय में ही राक्षसों का

संहार करने के लिए गुरु के साथ वन में चले जाते हैं व पिता के संकेत मात्र से चौदह वर्ष का वनवास सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। विमाता कैकेयी के कारण उन्हें चौदह वर्ष वन में व्यतीत करते पड़ते हैं लेकिन वे भूलकर भी न तो उन्हें दोष देते हैं व न उनके प्रति उनका आदर ही कम होता हैं। राम की सकारात्मकता तो देखिए जब वनवास के दौरान एक मुनि उनकी इस अवस्था के लिए कैकेयी को दोष देते हैं तो वे कहते हैं कि मुनिवर माता की कृपा के कारण ही तो मुझे आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसी सहिष्णुता व सकारात्मकता ने राम को राम बनाया।

राम एक धीरोदात्त नायक हैं। उनके चरित्र में किसी तरह की जड़ता नहीं है। उनके चरित्र में किसी प्रकार का पक्षपात अथवा असहिष्णुता नहीं है। वे पूर्णतः समन्यवादी हैं। वे अत्यंत विनम्र हैं। विनम्रता के साथ-साथ उनमें पराक्रम व साहस भी कम नहीं है। उस समय के जितने भी आततायी हैं वे उन सबका सफाया कर डालते हैं। राम दूसरों पर अन्याय होता देखकर तटस्थ नहीं रहते। वे भयमुक्त समाज के पक्षधर ही नहीं भयमुक्त समाज के निर्माता भी हैं। वे जहाँ भी जाते हैं लोगों को आतंक से मुक्त करवाकर उन्हें आराम से जीवन जीने का अवसर उपलब्ध करवाते हैं। वनवास के दौरान वे सभी वनवासियों का स्नेह व सम्मान पाते हैं क्योंकि उनमें सबको अपना बना लेने का गुण है। राम न केवल उन्हें समानता का दर्जा देते हैं अपितु उनके विकास के लिए भी कार्य करते हैं। व्यक्तिगत रूप से भी राम न जाने कितने लोगों को शाप, अपराध-बोध अथवा जड़ता से मुक्त करते हैं।

राम विषम से विषम परिस्थितियों में विचलित नहीं होते। उनमें विषमताओं को अवसर में बदलने का विशेष गुण है। वे संघर्ष भी कम नहीं करते। सीमित साधनों के बावजूद वे रावण जैसे अति बलशाली शासक से युद्ध करते हैं और अपने कौशल से उसे पराजित कर देते हैं। रावण उनका सबसे बड़ा शत्रु है लेकिन वे रावण के गुणों को भी बहुत महत्त्व देते हैं। जब रावण मृत्यु के निकट होता है तब राम अपने अनुज लक्षमण को रावण से धर्म व नीति की शिक्षा लेने के लिए भेजते हैं। आज कितने लोग हैं जो अपने शत्रुओं अथवा विरोधियों के गुणों को स्वीकार कर उनका आदर करते हैं व उन्हें अपने जीवन में लागू करते हैं? आज हमारी सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हम जिन्हें अपना विरोधी समझते हैं उनके सद्गुणों को स्वीकार कर उन्हें महत्त्व देना तो दूर उन सद्गुणों को अपनाने से भी परहेज करते हैं।

राम विषम से विषम परिस्थितियों में विचलित नहीं होते। उनमें विषमताओं को अवसर में बदलने का विशेष गुण है। वे संघर्ष भी कम नहीं करते। सीमित साधनों के बावजूद वे रावण जैसे अति बलशाली शासक से युद्ध करते हैं और अपने कौशल से उसे पराजित कर देते हैं। रावण उनका सबसे बड़ा शत्रु है लेकिन वे रावण के गुणों को भी बहुत महत्त्व देते हैं।

राम को हर सद्गुण व संघर्ष स्वीकार्य है। वास्तव में राम को इन्हीं गुणों ने भगवान राम बनाया। सद्गुण व संघर्ष ही किसी को राम बना सकते हैं। सहिष्णुता ही किसी को राम बना सकती है। यदि राम के चरित्र में इन गुणों का समावेश नहीं होता तो क्या आज वे हमारे आराध्य हो सकते थे? हम राम के गुणों के कारण उन्हें भगवान कहते हैं। उन्हें पूजते हैं। लेकिन क्या हम वास्तव में पूजना जानते हैं? हम मूर्तियों की पूजा करते हैं। वास्तव में मूर्तियाँ तो प्रतीक होती हैं पूजा गुणों की ही होती है। भगवान की पूजा, वंदना, गुणगान अथवा प्रशंसा क्यों की जाती है?

जब हम किसी के सामने किसी की प्रशंसा करते हैं तो हमारा उद्देश्य प्रशंसित के गुणों से स्वयं को और दूसरों को प्रेरित करना होता है। गुणगान अथवा प्रशंसा से तात्पर्य किसी के चरित्र की सकारात्मकता को स्वीकार कर उससे प्रेरणा लेना व उसे अपने जीवन में उतारना ही होता है। पूजा, वंदना, गुणगान अथवा प्रशंसा का उद्देश्य भी आराध्य के गुणों को स्वयं में स्थापित करना ही होता है। यदि हम किन्हीं गुणों के कारण किसी की प्रशंसा, पूजा, वंदना अथवा गुणगान करते हैं लेकिन आचरण उन गुणों के विपरीत करते हैं तो ऐसी प्रशंसा अथवा पूजा निरर्थक होगी। राम मात्र एक मूर्ति नहीं सद्गुणों का समुच्चय हैं। राम के सद्गुणों को आत्मसात करना ही उनकी सच्ची पूजा, वंदना, गुणगान अथवा प्रशंसा है।

भाग - 2 : "गोमती तुम बहती रहना" (अंश -11)

बात बोलेगी, हम नहीं!

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी
लखनऊ

- लेखक आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

सचमुच, ज़िंदगी कठिन परीक्षा लेने की मानो प्रतीक्षा कर रही थी। यह ऐसी परीक्षा थी जिसका न कोई कोर्स था, ना गेस पेपर। सभी के जीवन में ऐसा दौर आया करता है लेकिन सबको अपना ही दौर सबसे कठिन दिखता है। मैं अपने शारीरिक अस्थि संबंधी रोग से तो आक्रांत था ही, मेरे दोनों बेटे भी भारतीय थल सेना के अधिकारी बनने के प्रशिक्षण के कठिनतम दौर से गुजर रहे थे। बड़े बेटे दिव्य आदित्य पिछले दिनों लेफ्टिनेंट होकर लगभग दो साल कारगिल में बिता कर अब डोगरा रेजीमेंट की 15वीं बटालियन में हिसार में नियुक्ति पा चुके थे। छोटे बेटे यश आदित्य इंटर्मीडिएट करके एन डी ए परीक्षा उत्तीर्ण करके अब ट्रेनिंग ले रहे थे। पत्नी और मैं अपने अपने जॉब में लग गए थे।

22 अक्टूबर 2005 को मेरे बड़े पुत्र दिव्य ने अपनी मां को एक मार्मिक पत्र लिखा– "ज़िंदगी की लड़ाई हर इंसान को अकेले ही लड़नी पड़ती है। तुम्हारी, हमारी परवरिश के लिए लड़ाई तुम्हारी ही लड़ाई थी। डैडी या तुम्हारे बच्चों की नहीं।मेरे लिए दुनियाँ में तुमसे मजबूत औरत मिलना मुश्किल है। आज पूरापरिवार तुम्हारे इस संघर्ष की कद्र कर रहा है।"

मेरे छोटे बेटे यश भी बेहद संजीदा प्रकृति के थे। उनको वर्ष 2000 में गोरखपुर के एयरफोर्स स्कूल से हाई स्कूल करने के बाद लखनऊ के सिटी मांटेसरी स्कूल, महानगर ब्रांच में दाखिला करवा दिया गया था और वे वहाँ अपनी मौसी ममता के घर रहने लगे थे। याद आता है कि वे भी अक्सर भावुक होकर पत्र लिखा करते थे।इंटर फाइनल में लिखे एक पत्र में उन्होंने लिखा- "..पता नहीं CMS में आकर ठीक किया या नहीं। घर से दूर आकर, इतने पैसे खर्च कराकर अगर कुछ नहीं बन पाया तो क्या करूंगा?.. बार बार प्रिंसिपल मैडम की कही एक बात याद आती है-"Your Parents are paying so much for you just to get a little success for you." आज जब यही बच्चे बडे हो गए हैं,वे स्वयं बच्चों के माता- पिता बनकर, गृहस्थ के हिचखोले खाते हुए अपना जीवन बिता रहे हैं तब उन दिनों को सोच कर मैं स्वयं मंत्रमुग्ध होता रहता हूँ। सलीके से सहेज कर रखी गई इन पातियों को फिर फिर से पढ़ता रहता हूँ और उन दिनों मे खो जाया करता हूँ।

यह तो ज़िंदगी का फ़्लैश बैक था जो चाहे अनचाहे आत्मकथा के इन पन्नों में घुसा आता है। मैंने यहाँ आकर पाया कि इस शहर लखनऊ में अपने गोरखपुर के कम ही लोग आकार बस गए हैं लेकिन जो हैं उन्होंने भी अपने व्यक्तित्व में लखनऊ वालों के गुण-दुर्गुण पूरी तरह आत्मसात कर लिया है।

गुण तो नहीं लेकिन उन सभी में यहाँ के दुर्गुणों का आना मुझे अच्छा नहीं लगा। ऐसे ही हैं एक मित्र श्री दयानंद पांडे, उम्र में मुझसे छोटे किन्तु पत्रकारिता और लेखन की दुनियाँ में मुझसे बहुत आगे, जिन का जिक्र करना चाहूँगा। गोरखपुर से लखनऊ आते ही विवादों से उनका बहुत गहरा नाता हो गया है और शायद इन विवादों के चलते ही वे उम्र के इस पड़ाव पर भी सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं। अब उनका एक खास सन्दर्भ। श्री दयानन्द पांडेय द्वारा संपादित पुस्तक "कथा गोरखपुर" और "कथा लखनऊ" सहित छह

खंडों की पुस्तक जब छप कर आई तो उन्होंने हमेशा की तरह सूचित करते हुए मुझसे पढ़ने का आग्रह किया। पुस्तकें पढ़ते हुए मुझे कटु अनुभवों से गुजरना पड़ा ।इस बारे में मैंने अपनी प्रतिक्रिया फ़ेसबुक पर डाली थी जिसे यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा। "मित्रों, फेसबुक मंच का सार्थक उपयोग देखते हुए मैं आज इस पोस्ट के माध्यम से एक गंभीर मसले पर अपनी चुप्पी तोड़ रहा हूं। आशा है आप ध्यान से पढ़कर अपनी राय देंगे। किसी ने क्या ख़ूब कहा भी है कि- "बात बोलेगी, हम नहीं। भेद खोलेगी बात ही!" चूंकि गोरखपुर के साहित्यकारों के लेखन के इतिहास विषयक बात बोली जा चुकी है और उसमें मुझे अनेक गड़बड़ी प्रथम दृष्टया नज़र आई है इसलिए मैं अपनी बात आप सभी के सामने रख रहा हूं। ....स्वस्थ और शालीन विमर्श के लिए! श्री दयानंद पांडे, प्रतिष्ठित लेखक, साहित्यकार जो मेरे अनन्य मित्र भी हैं, ने डायमंड बुक्स प्रकाशन के लिए गोरखपुर के कहानीकारों का उनकी चुनी हुई एक कहानी के साथ इतिहास लिखा है जो पिछले दिनों छप कर विक्रय की जा रही है। यह अच्छी बात है कि उन्होंने यह एक बड़ा और आवश्यक काम किया है। इसके लिए वे और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं। उन्होंने इन खंडों में जिनका सन्दर्भ दिया है वे हैं - प्रेमचंद, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, श्रीपत राय, सुधाबिंदु त्रिपाठी, हरिशंकर श्रीवास्तव, रामदरश मिश्र, अमरकांत, श्रीलाल शुक्ल, ज.ला.श्रीवास्तव, हृदयविकास पांडेय, हरिहर द्विवेदी, डाक्टर माहेश्वर, भगवान सिंह सहित कुल 81 कहानीकार।

कुछ तो सचमुच गोरखपुर की मिट्टी पानी में पले-बढ़े थे लेकिन कुछ सिर्फ नाम वाले गोरखपुर के! नौकरी की मजबूरी में किसी की पोस्टिंग गोरखपुर हो जाय और वह बड़ी हैसियत वाला या वाली हो तो वह गोरखपुर का होने का दावा नहीं कर सकता है! उसके लेखन में गोरखपुर तो कतई नहीं उतर सकता है! इसलिए संपादक श्री पांडे का यह दावा लगभग झूठ है कि - "सभी कहानियाँ गोरखपुर की माटी की खुशबू में तर बता हैं" या यह कि "माटी की महक इन कथाओं में महकती, गमकती, और इतराती हुई मिलती हैं।" लेकिन इतनी श्रमसाध्य तप और साधना के बाद मित्र दयानन्द पांडेय अपने लंगोटिया मुझ जैसे मित्र प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी और गोरखपुर की ढेर सारी उन साहित्यिक विभूतियों को भूल गये हैं जिनको उस इतिहास लेखन के संग्रह में स्थान मिलना ही चाहिए था। जैसे -प्रोफेसर गोपीनाथ तिवारी, प्रोफेसर माता प्रसाद त्रिपाठी, डा. उदयभान मिश्र, हरिराम द्विवेदी, प्रोफेसर तारिक़ छतारी, प्रोफेसर जी.आर. सैयद, आचार्य प्रतापादित्य, महेश मणि त्रिपाठी, प्रदीप कुमार पांडेय, शिवेन्दु कुमार श्रीवास्तव, भगवत शरण गुप्त, रामनाथ, राजेश, डा. अमर नाथ, डा. शची मिश्रा आदि!"

मैंने अपनी इस पोस्ट में आगे लिखा– "असल में जैसे इलाहाबाद या प्रयाग में पवित्र संगम तट पर जाकर यदि कोई भौतिक रुप में पवित्र सरस्वती नदी को देखना या दिखाना चाहे तो उसे असफल होना पड़ेगा ठीक उसी प्रकार मित्र दयानन्द पांडेय को गोरखपुर में लम्बी अवधि रहकर और फिर कुछ महानगरों में लम्बी अवधि बिताकर संभवतः गोरखपुर की अनेक साहित्यिक विभूतियां दिखाई नहीं दे रही हैं जिनका गोरखपुर की श्रीवृद्धि में पर्याप्त योगदान है। वैसे यह भी आश्वस्त हूं कि मित्र दयानन्द पांडेय ने छह खंडों में गोरखपुर के साहित्यकारों का उल्लेख करके इतिहास में उन छूटे हुए लोगों को मिटा देने की गन्दी हरकत भी जानबूझकर नहीं की है। उनके नामों को जानबूझकर नहीं छोड़ा गया होगा लेकिन चूंकि वे नाम छूट गये हैं इसलिए उनका उल्लेख करना भी मेरे लिए मित्र धर्म निभाने जैसा आज आवश्यक हो गया है।"

इस संदर्भ की फ़ेसबुक पोस्ट में मैंने आगे लिखा-

श्री उपेन्द्र नाथ अश्क़ की एक कविता है - अदृश्य नदी। उसकी कुछ पंक्तियों को उद्धृत कर रहा हूं-

'गंगा जमुना ही नहीं, मेरे नगर में-
लोग कहते हैं- एक तीसरी नदी भी है-
सरस्वती
जो कभी दिखाई नहीं देती, वह व्यथा है -
जो दिल - ब - दिल बहती है
और चेहरों पर जिसका कोई आभास नहीं मिलता !'

शायद इन छूटी हुई शख़्सियतों के लिए ये पंक्तियां चरितार्थ हो रही हैं! अश्क़ जी ने अपनी इसी कविता का अन्त किया था-

'तुम्हारी वह तीसरी नदी मैं हूं!
तो फिर इन आंखों को चुपचाप पोंछ डालो,
और मुझे पहले की तरह अदृश्य बहने दो!'

दयानन्द जी, आपने जिन विभूतियों को इतिहास से ख़ारिज़ करने की गुस्ताख़ी की है वह अक्षम्य तो है ही निन्दनीय भी है । उससे भी बड़ी बात यह कि आपने उन लोगों को भी जोड़ डाला है जिनका कहानी लिखने अथवा गोरखपुर से सही मायने में जुड़ने से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। अगर आप दिल्ली नौकरी करने के सिलसिले में कुछ वर्ष या महीने रहे हैं तो क्या आप दिल्ली वाले कहलाने लगेंगे?... नहीं ना!

मित्रों, श्री दयानन्द पांडेय द्वारा सम्पादित यह पुस्तक गोरखपुर के साहित्य और पाठक जगत द्वारा बायकाट किये जाने योग्य है क्योंकि इसमें गलत और आधे अधूरे तथ्य दिये गये हैं जिसमें इतिहास को भी गलत दिशा देने का प्रयास किया गया है । मित्र, दयानन्द जी, आप यदि संभव हो तो भूल सुधार कर , ठंढे दिमाग से थोड़ा और रिसर्च करके , गोरखपुर और गोरखपुर के उन साहित्यकारों को भी पृष्ठों में उतारिए जो संगम तट पर विद्यमान सरस्वती नदी समान आपको दिखाई नहीं दे रहे हैं! आपने मेरे साथ दर्जनों गोरखपुर के लिखने-पढ़ने वालों के लेखन व्यक्तित्व को यूं कहा जाय कि मार डाला है तो अनुचित नहीं है!"

(क्रमशः)...

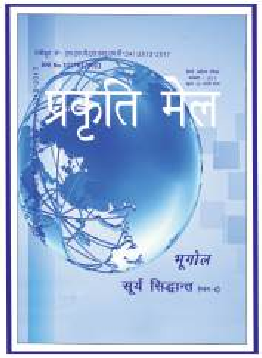

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)________________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता____

________________________ राज्य________________ पिन____________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:________________________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ० प्र०।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें।
किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।
नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- जिस प्रकार दीवार खड़ी कर लेने से ब्रह्माण्ड को बांटा नही जा सकता उसी प्रकार सम्प्रदाय बना लेने से धर्म को नही बांटा जा सकता।

- जब व्यक्ति भाव में केंद्रित हो जाता है उस समय वैज्ञानिक गन्ध बन जाती है जो स्वत:अपने कार्य को पूरा करने लगती है।

- उत्पत्ति प्रकृति की आवश्यकता है इसमें मानव को जिसकी जरूरत है उसे अपने से जोड़ना चाहिए और जिसकी नही उसे दूर कर देना चाहिए न कि उसे नष्ट कर देने का भाव बनाना चाहिए।

- प्रकृति द्वारा जीव पदार्थ की उत्पत्ती अवगुण को खत्म कर गुण में परिवर्तित करने की वैज्ञानिक विधा है। इस विधा में व्यवधान उत्पन्न करना ही प्रदूषण है।

- प्रकृति जीव उत्पत्ति से ही अपना विस्तार करती है। जीव जीवन रहते हुए ढेर सारे पदार्थ छोड़ता है, ये पदार्थ प्रकृति में रासायनिक परिवर्तन के बाद परिपक्व पदार्थ का निर्माण करते है।

- व्यक्ति द्वारा पेड़ पौधों से असमय फल, फूल आदि को अलग कर देने से अपरिपक्व स्थिति रह जाती है जिससे प्रदूषण पैदा होता है।

- प्रकृति मे जीव के स्वभाविक विकास मे व्यवधान उत्पन्न किया जाता है, उससे उत्पन्न होने वाला प्रदूषण पूरे जगत को प्रभावित करता है। परन्तु मानव द्वारा जो प्रदूषण छोड़ा जाता है उससे सिर्फ मानव जीवन प्रभावित होता है उसके प्रदूषण का नाम है भावनात्मक प्रदूषण।

- विचार से भावना पैदा होती है, अच्छी भावना मानव सुगन्ध होती है जो प्रकृति को महकाती है और बुरी भावना प्रदूषण फैलाती है।

- स्व-अवस्था को पूर्ण करने के लिए बल लगाने की जरूरत नही बल्की स्व-निष्क्रिय करने से स्वत: प्राकृतिक बल लग जाता है जिससे अवस्था पूर्ण हो जाती है।

- सत्य सदैव वर्तमान होता है, यह अतीत नही है। जिसका अन्त होता है उसे अतीत कहते है, सत्य का अन्त कभी नही है।

- स्वभाव पर चलना ही हर रूकावट का पूर्ण अन्त है।

- किसी भी इच्छा का ना उत्पन्न होना ही शून्य अवस्था है।

- ब्रह्माण्ड प्रकृति की शून्य अवस्था का परिणाम है शून्य अवस्था से अपने कर्म को पूरा किया जा सकता है।

जीवन के दो पड़ाव दिन और रात

अशोक मानव

दिन और रात प्रकृति निर्माण की आवश्यकता करता है इस क्रिया से जीव निर्माण के लिए ऊर्जा का वैज्ञानिक संतुलन निश्चित है जिससे जमीन और प्राकृतिक वातावरण तैयार होता है दिन विषय को क्रियाशील बनता है और रात विषय बने में पैदा होने वाला रुकावट को दूर कर परिपक्व को बनाने की क्रिया करती है प्रकृति के इस योग से जीवन का निर्माण हो पता है ।

सूर्य प्रकाश जब धरती या ब्रह्मांड के पदार्थ तत्वों पर पड़ता है तो दिन होता है प्रकाश तत्व को पदार्थ तत्व आगे बढ़ने से रोकता है प्रकाश आगे बढ़ने का प्रयास करता है तो उस गति से पदार्थ तत्व का विकास तत्व का गंध रूप उसमें घुलकर हवा रूप में ऊपर जाने लगता है जो प्रकाश तत्व से मिलकर पहले जीव निर्माण के लिए तापमान बनता है जब प्राकृतिक वातावरण तैयार हो जाता है तब यही गुण जीव की आत्मिक बीज रचना की संरचना तैयार करता है जिससे जीव की उत्पत्ति होती है जीव विषय और गंध बनाने के लिए शरीर का निर्माण करता है जिससे शरीर का पदार्थ तत्व प्रकृति का पदार्थ बढ़ाने की क्रिया करता है और विषय गढ़ जीव निर्माण के लिए प्रकाश तत्व को रोकने के लिए ईंधन का कार्य करता है इसी क्रिया की सक्रियता प्रकाश से होती है और इस क्रिया से जो निर्माण की प्रक्रिया होती है उसमें प्रकाश का भी निर्माण होता है ।

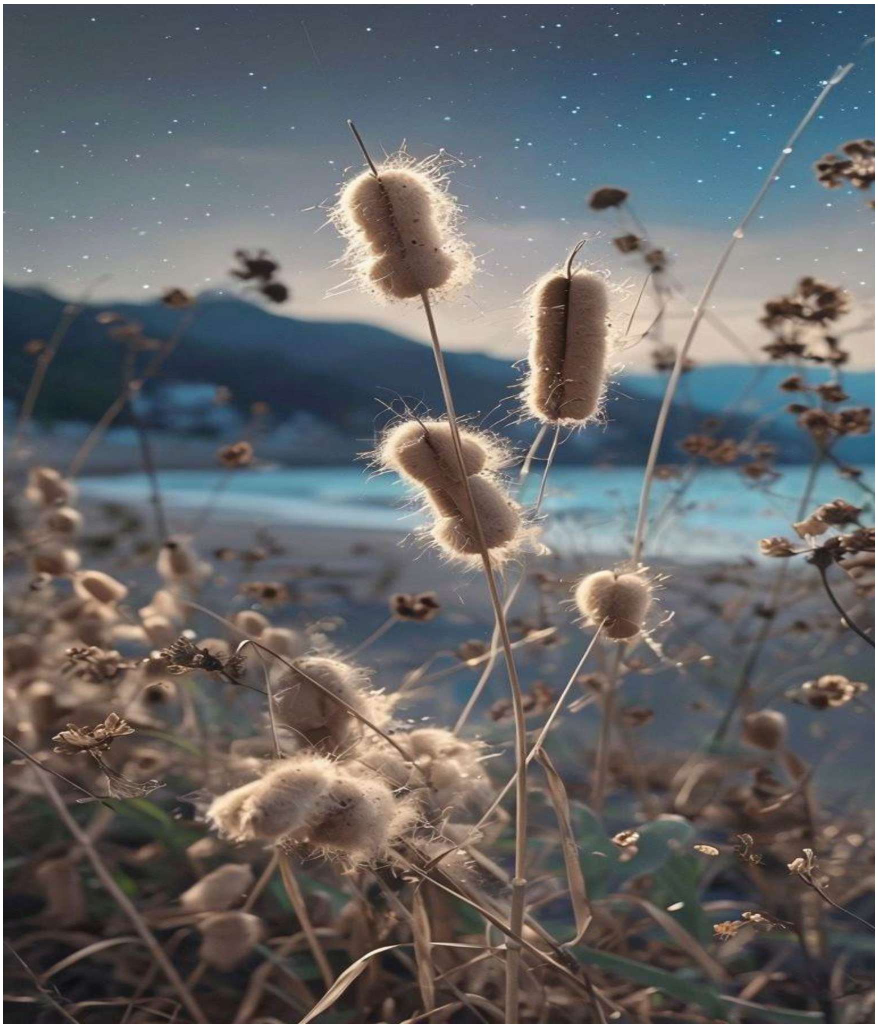

दिन अर्थात जाग्रत अवस्था जिसमें इंद्रियां अनेकों आयाम में फैली होती है जब कि रात सोने की अवस्था है जिसमे इंद्रियां किसी एक विषय को पूर्ण करने के लिए केन्द्रित होती है जो शक्तिशाली गुणों का निर्माण करती है।

प्रकाश को रोकने में जो क्रिया होती है उसे निर्माण तो होता है पर पदार्थ तत्व के रोकने का भाव और प्रकाश तत्व आगे बढ़ने का भाव दोनों से उत्पन्न होने वाले विषय भी इस भाव के होते हैं इसलिए दोनों के बीच रुकावट का

जो पर्दा बांटा जाता है वही दिन रात का अंतर बना देता है जीव का निर्माण होता है रुकावट का पर्दा तभी तक रात बनाए रख पाता है जब तक निर्माण की प्रक्रिया पूरी ना हो जाए इसके बाद वह हवा बनकर उड़ जाता है और पुनः प्रकाश आ जाता है और दिन हो जाता है इस प्रक्रिया में दो गति होती है एक पदार्थ विषय की गंध जो हवा बनकर उड़ जाती है यही पर्दा बनाकर विषय को परिपक्व बनाती है दूसरी गति पदार्थ तत्व को गतिमान कर घुमा देती है जिसे सामने वाले भाग पर दिन और आगे बढ़ जाने वाली भाग पर रात हो जाती है इस क्रिया से दिन और रात का अंतर आ जाता है जो निर्माण की आवश्यकता है इसी दो चक्र में जीवन पूरा हो जाता है अन्य दूरी मानव सोच का विस्तार है जो सिर्फ उसके जीवन में हलचल पैदा करता है इसे जितना छोटा कर दिया जाए जीवन की हलचल उतनी कम हो जाती है इसी के विस्तार में भूत वर्तमान भविष्य का फैलाव है जिसे ऐसा भी सोच सकते हैं जो सही है भूत तो बीत गया उसे नहीं लौटना छोड़ा गया विषय पदार्थ प्राकृतिक परिवर्तन में रासायनिक क्रिया से निर्माण योग्य बन जाता है जो निरंतर परिवर्तन करता रहता है ठहरता नहीं है जिसमें कुछ नहीं किया जा सकता है इसलिए अपने को दोहराता नहीं है क्योंकि उसकी अवस्था परिवर्तनशील होती है वर्तमान क्या है जब कुछ भी ठहरता नहीं वर्तमान सोने मात्रा में आगे बढ़ जाता है तो वर्तमान कहां भविष्य तो भविष्य है जो कभी आता नहीं आया तो वर्तमान हो गया फिर भविष्य कहां रहा और ठहर नहीं तो वर्तमान किस बात का यह सब सोचने मात्र से पैदा होने वाले विषय हैं जो जितना विस्तृत होता जाता है उतना ही हलचल पैदा करते हैं और जीवन में कुछ देते भी नहीं है दिन महीना साल भी सोने के लिए जबकि हकीकत में जीवन और मृत्यु दोही अवस्था होती है एक पैदा होने योग्य आधा बनता है और दूसरी पैदा होकर एहसास में पुनः पैदा होने की जमीन बनाती है ऐसे ही हर विषय के दो ही पड़ाव होते हैं सत्य सत्य धर्म धर्म न्याय अन्याय उपयुक्त अनुपयुक्त आधी आधी दोनों एक दूसरे की निर्माण की आवश्यकता है पर यह जानबूझकर की जाने वाली क्रिया नहीं स्वतः होने वाली क्रिया है जब कुछ भी निरंतर चलता रहता है तो निर्माण नहीं होता है दूसरा पक्ष जब उसे रोकता है तो निर्माण होता है जैसे बीज के या जीव के मूल स्वरूप के ऊपरी हिस्से पर कई परतें उसकी ऊर्जा को रोकने के लिए लगी होती हैं तभी वह सुरक्षित होकर निर्माण कर पता है और पर्दे कार्य पूरा हो जाता है वसुधा छूट जाता है या निकालकर नष्ट हो जाता है यदि उसे हटाकर मूल रचना को देखा जाए तो मूल रचना भी नहीं मिलती और नष्ट भी हो सकता है इसी तरह दिन रात की क्रिया निर्माण की आवश्यकता होती है जो प्राकृतिक रूप से स्वत क्रियाशील होती है इस प्रकार जीवन के भी दो पड़ाव होते हैं दिन और रात शांत रखने के लिए जिसमें विचार ना चले दिन रूप जो विचार उत्पन्न करता है उससे स्वतः क्रियाशील होता है जिससे थकान उत्पन्न होती है जो विचार उत्पन्न होता है उसका विपरीत गुण उसे रोकने के लिए आगे आ जाता है इन दोनों को दूर करने के लिए रात की जरूरत पड़ती है।

रात में जब व्यक्ति का विचार नहीं चला सोने वाली अवस्था होती है तो अंदर से विषय विचार नहीं होने के कारण उसकी गंध प्राकृतिक हो जाती है जिसमें वह विषय को परिपक्व बनाता है और रुकावट पर्दे की दूर करता है जिससे शरीर की थकान दूर हो जाती है और पुनः नए विषय को बनाने के लिए सक्रिय हो जाता है जो दिन की अवस्था धारण कर लेता है इसी प्रकार जीवन के दो पहलू भी दिन रात के समान होते हैं जिसे इसी प्रक्रिया से पर किया जा सकता है वह है सुख-दुख सुख दिन है और दुख रात है सुख में अच्छे विचार छोड़कर खुशबू में जीवन का एहसास करना चाहिए जिससे निकलने वाली सुगंध रूपी तरंग प्रकाश को पैदा करती है जो प्रकृति निर्माण के लिए सौर ऊर्जा का काम करता है दुख रात के समान है इसलिए विचार शून्य होकर सोने जैसी अवस्था बना लेने से दुख की रात सही तरीके से कट जाती है और इस अवस्था से उसकी गति प्राकृतिक हो जाती है जो दुख पैदा करने वाले विषय को शक्तिशाली रूप से काटने का कार्य करती है जब वह कट जाता है तो व्यक्ति पुनः दिन में आ जाता है और जब वह दुखी रूप रात में सोने का कार्य करता है तो रात को दिन में बदलने का प्रयास करता है जिसमें दुखी विचार ही उत्पन्न करता है जिससे प्रकृति में दुख का गुण बढ़ता है और उसका एहसास दुर्गंध भाव छोड़ता है जो खुद को भी नहीं अच्छा लगता और उससे राक्षस पैदा होता है जो रात को बड़ी करने का प्रयास करता है इस दुख की रात को छोटी करने के लिए विचार शून्य होकर सोने जैसी अवस्था बना लेनी चाहिए इससे दुख अनुभूति बगैर दुख की रात कट जाती है और जीवन में दिन आ जाता है इस प्रकार जीवन के दो पडाव ही होते हैं जो दिन और रात हैं यह जी लिए होते हैं उसी रूप में अपने को बनाकर अपनी जीवन चक्र को वैज्ञानिक रूप से अच्छी अनुभूति के साथ पूरा किया जा सकता है यह चक्र निर्माण की आवश्यकता है जिससे उत्पत्ति होती है जब दो दिन और रात से उत्पन्न तीसरा जीव जो स्वयं आप हैं तो चौथा कहां से उत्पन्न हो गया यदि हो रहा है तो जरूर कोई राक्षस है जो भ्रमित करना चाह रहा है उसे मारने की जरूरत है उसके दिखाएं रास्ते पर चलने की आवश्यकता नहीं।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : गुरु जी मानव द्वारा दूषित भाव यदि बन गया तो वह निष्क्रिय कैसे होता है ?

उत्तर : उसको निष्क्रिय करने के लिये प्रकृति को सैकड़ों साल लग जाते हैं। आपकी एक मिनट की गलती से जो आपका दूषित भाव प्रकृति में निकल गया, उसका खात्मा करने के लिये प्राकृतिक रूप से धरा को प्रकृति जैसा बनाने के लिये जीव के द्वारा ही तो उसका खात्मा होगा। उसको निष्क्रिय करने के लिये उस तरह के जीव की उत्पत्ति होगी उतने दिन का जीव जीवन जियेगा। उसको उस अवस्था से गुजरना पड़ेगा। जैसे- आपने मल त्यागा तो आपका मल खत्म करने के लिये सूअर पैदा होगा। सूअर उसको खायेगा, फिर सूअर भी मल त्यागेगा, उसको भी खत्म करने के लिये दूसरा जीव पैदा होगा।

आप गन्दगी फेंकोगे मच्छर पैदा होगा। फिर मच्छर से जो गन्दगी पैदा होगी उसका खात्मा करने के लिये दूसरा जीव पैदा होगा। एक चैनल से दूसरा चैनल। उस दूषित भाव को समाप्त करने में समय लगता है।

प्रश्न : मानव की उत्पत्ति प्रकृति में किस तरह हुई?

उत्तर : प्रकृति की संरचना सूर्य और जल के मिलन से उत्पन्न होने वाली ऊष्मा से होती है जिससे जीव पैदा होता है जो प्राकृतिक रूप से अपने ध्यान अवस्था से सुगंध का निर्माण करता है जिससे गंधीय प्रकाशीय तरंग निकलकर एक दूसरे से जोड़ते हुए तीसरे की उत्पत्ति होती है शरीर छोड़कर जाने के बाद पदार्थ बढ़ता है इसी कर्म वादी क्रिया से प्रकृति का सृजन और विस्तार होता है जिसका परिणाम मानव है मानव की उत्पत्ति इसी सृजन को आगे बढ़ाने के लिए होता है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

जब जलवायु बदल रहा है तो फिर हम क्यों नहीं ?

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू '
बीकानेर

मैंने अपने पिछले आलेख में बता दिया था कि अगर धरा न होती तो हमारा अस्तित्व ही नहीं होता। अब जब इस पर गहनता से विचारें तो सबसे पहले यह मानना ही पड़ेगा कि जीवन के लिये आवश्यक ऑक्सीजन , पानी व अन्य सभी सामग्रियां यहां सहजता से उपलब्ध है अर्थात इस धरा पर सभी आधारभूत संसाधन सहज उपलब्ध हैं जबकि अभी तक अन्य ग्रहों पर जीवन की पुष्टि तक हुयी नहीं है। इसलिये ही धरा को ब्रह्माण्ड में अनमोल माना गया है।

याद रखें प्रकृति और मनुष्य का सम्बंध आदि काल से परस्पर निर्भर रहा है।इसलिये अब यह हमारा दायित्व बनता है कि पृथ्वी को बचाने के लिये हमें हमारे बीच पनपे गलत प्रचलनों से मुक्ति पाने की पूरी पूरी चेष्टा करते रहना है। और इसके लिये जागरूकता अभियान चलाकर सभी को समझाना होगा। सभी को यह बताना होगा कि हम मानवों द्वारा किये जा रहे गलत कार्यों के कारण प्राकृतिक संसाधन दिन प्रति दिन बिगड़ रहे हैं। इसके साथ-साथ यह भी समझाना होगा कि हमारे अलावा कई तरह के जानवर, वनस्पतियाँ वगैरह भी इस पृथ्वी पर निर्भर हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि धरा की प्राकृतिक पर्यावरण को बनाये रखने में हमारे साथ साथ इन जानवरों, वनस्पतियों वगैरह का भी महत्वपूर्ण योगदान है।अतः यह आवश्यक है कि हमारा व्यवहार संयमित व ऐसा संतुलित हो जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे।

अब गलत प्रचलनों पर विचार करें तो सबसे पहले धरती के वातावरण के तापमान में लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ोतरी को रोकने में हम भारतवासी पहल कर विश्व के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके अलावा खेती में अधिक कीटनाशक [पेस्टीसाइड] डालकर व आवश्यकता से अधिक पानी डालकर जमीन का स्वास्थ्य खराब कर रहे हैं और इससे वांछित उपज भी नहीं मिल रही है और पर्यावरण असंतुलित हो रहा है।इसलिये हमें अपनी खेतीबाड़ी में संयम बरतना चाहिये और उचित तो यही रहेगा कि हमसब अब जैविक खेती पर ध्यान देना प्रारम्भ कर दें। जैसा आप सभी जानते हैं कि आजकल अपनी सरकार भी अपनी तरफ से जैविक खेती को प्रोत्साहित कर रही है।

एक अन्य तथ्य आप सभी के ध्यान में ला रहा हूँ जिसके अनुसार प्रदूषण बढ़ाने में उद्योगों की भी एक बहुत बड़ी भूमिका है। उद्योग वाले तो सोचते ही नहीं हैं और सारा कचरा कारखानों व औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थों के निष्पादन की समुचित व्यवस्था न कर, जमीन में गाड़ देते हैं। जबकि इन अवशिष्ट पदार्थों को निष्पादन से पूर्व दोषरहित किया जाना चाहिए और सरकार को इस तरह के अवशिष्ट पदार्थों को जमीन में गाड़ना या नदी / तालाब में बहाने को गैरकानूनी घोषित कर प्रभावी कानून बना उचित कदम उठाने चाहिए।

इसी कड़ी में अब आप सभी के ध्याननार्थ, हम जो अन्धाधुंध पेड़ों की कटाई कर रहे हैं वह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता। नीम, कुरकुमालौंगा, लहसुन, अदरक, अंगूर, मेथी, करेला, अनार, शतावरी, मुंगना (सहजन), उलटकंबल, श्योनाक, पीपल, बेलपत्र/फल, बरगद/बड़, आंवला एवं अशोक इत्यादि अनेक ऐसे पौधे हैं जिनमें प्रचुर औषधीय गुण मौजूद हैं। दुनियाभर में इन औषधीय पौधों से ही दवायें विकसित की जा रही हैं। इसलिये आवश्यकता यही है कि इस तरह के सभी औषधीय पौधों को सरंक्षण प्रदान किया जाय। इन पौधों को विकसित करने से जमीन मालिक न केवल पर्यावरण सरंक्षण को मजबूती प्रदान करेंगे बल्कि अपनी आमदनी में भी बढ़ोतरी कर पायेंगे।

अन्त में सभी प्रबुद्ध पाठकों के ध्याननार्थ - धरा के संरक्षण की जिम्मेदारी केवल मनुष्य के जिम्मे है, केवल और केवल मनुष्य के जिम्मे। इसलिए हम सभी को प्रण लेकर इस तरह की बर्बादी को रोककर अपने जीवन व प्रकृति को हरा-भरा तथा खुशहाल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में चूकना नहीं है क्योंकि इसी में ही हम सभी की भलाई है। इसी संदर्भ में सुमित्रानंदनजी पंत की दो पंक्तियाँ आप सभी को याद दिलाने के उद्देश्य से यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ -

जौ गेहूँ की स्वर्णिम बाली, भू का अंचल वैभवशाली।

इस अंचल से चिर अनादि से, अंतरंग मानव का नाता।।

संक्षेप में पर्यावरण के मुख्य विन्दुओं को आपके सामने रखने की चेष्टा की है और आशा करता हूँ कि आप सभी प्रबुद्ध पाठक उपरोक्त बताये कारणों व निदान से ज्यादा, बहुत कुछ स्वयं भी समझ गये होंगे साथ ही आप सभी इस तथ्य से भी सहमत होंगे कि पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी हम मनुष्यों पर पूरी तरह निर्भर है इसलिये आशा करता हूँ कि तुरन्त प्रभाव से आत्मावलोकन प्रारम्भ कर सुधरात्मक कदम उठाना शुरू कर देंगे।

सुखी जीवन का मूल मंत्र

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर, राजस्थान

जीवन में हर कोई सुखी रहना चाहता हैं लेकिन इसके लिए कोई भी नियमित रूप से प्रयास नहीं करता हैं। तनिक सा सुख क्या मिल जाता है कि वह आगे के समय के लिए सुख को भूल जाता हैं और फिर जैसे ही कोई विपदा या परेशानी आती है कि वह फिर से सुख पाने के लिए परमात्मा के समझ गिड़गिड़ाने लगता है। उसे कोसता हैं। भला बुरा कहने लगता हैं। अगर जीवन में सुखी रहना ही चाहते हो तो इसका एक ही मंत्र है कि उनसे जुड़े रहिए जिनकी पसंद आप हैं। अगर आप एकाग्रचित्त होकर परमात्मा का ध्यान करें तो वह दिन दूर नहीं है जब आप परमात्मा की गोद में विराजमान हो जायेंगे।

नास्तिक लोग मजाक में कहते हैं कि रोज रोज मंदिर जानें का दिखावा क्यों करते हो, क्यों नहीं तुम खुद ही उनके पास चले जाते। परमात्मा ने ही हमें इस नश्वर संसार में दीन दुखियों की सेवा निस्वार्थ भाव से करने के लिए भेजा हैं। लेकिन हम ही इतने स्वार्थी हैं कि यहां आकर सेवा का भाव भूल गए और यह तेरा है , यह मेरा है के चक्कर में पड़ गये जो उचित नहीं है। जो कुछ भी है वह उस परमात्मा का दिया हुआ ही हैं। अतः हमें अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर सेवा भाव से कार्य करना चाहिए। यही सुखी रहने का मूल मंत्र है।

सुन्दर रिश्ते

कहते हैं कि सुन्दरता से बढ़कर चरित्र है। प्रेम से बढ़कर त्याग है। दौलत से बढ़कर मानवता हैं,परन्तु सुन्दर रिश्तों से बढ़कर इस दुनियां में कुछ भी नहीं है। आज रिश्ते कांच की तरह से टूट रहें हैं। कुछ लोगों में धैर्य, सहनशीलता, त्याग की भावना का अभाव नजर आ रहा हैं तो कहीं स्वार्थ आपस में टकरा रहें हैं तो कहीं लोग बिना वजह दूसरों के घरों में ताक-झांक कर रहे हैं और दूसरों के घरों में दखल अंदाजी कर उनके घरों में फूट डाल रहे हैं। नतीजन रिश्ते हर वक्त टूट रहे हैं।

जिन रिश्तों को हमारे बड़े बुजुर्गों ने संभाल कर रखा और प्रेम, स्नेह, मिलनसारिता, धैर्य, सहनशीलता, क्षमा, त्याग, नम्रता और विनम्रता को अपना कर वट वृक्ष का आकार दिया था और सभी एक साथ एक ही थाली में भोजन करते थे। वे ही आज एक दूसरे के

दुश्मन बन गये हैं और एक-दूसरे की शक्ल सूरत तक नहीं देखना चाहते हैं। यह कैसी विडम्बना है।

अगर हमारे रिश्ते, मित्रता , अपनापन इसी प्रकार टूटते रहे तो वह दिन दूर नहीं है जब हम इस नश्वर संसार में अकेले पड़ जायेंगे और किसी को भी अपना नहीं कह पायेंगे। अब भी वक्त है कि हम अपने परिजनों को फिर से एकजुट करें। उनके साथ अच्छा व्यवहार करें। अंहकार का त्याग कर बिखरे रिश्तों को फिर से जोड़े। याद रखिए फूल की महक सर्वत्र फैलने के बावजूद भी वह पुष्प को बिना महक के नहीं रहने देती। पुष्प की महक तो दूसरों को देने के बाद में भी उसमें समा ही रहती हैं।

अच्छी सोच के अनेक लाभ

समाज में आदर्श जीवन व्यतीत करना भी एक कला है और फिर जिसने इस कला को सीख लिया समझो उसका जीवन धन्य हो गया। इसके लिए व्यक्ति की सोच हमेंशा सकारात्मक रहनी चाहिए। सकारात्मक सोच हमें सदैव नई ऊर्जा और शक्ति प्रदान करती हैं और हमारा व्यवहार सभी के साथ समान रूप से बना रहता हैं। यही वजह है कि अच्छी भूमिका,अच्छे व्यवहार और अच्छे विचार वालें लोगों को हमेंशा याद किया जाता है। मन में भी, शब्दों में भी और जीवन में भी। अतः जीवन में कभी भी किसी का न तो बुरा करें और न ही दूसरों के बारे में बुरा सोचे। हमारी अच्छी सोच ही हमारी सर्वश्रेष्ठ पूंजी है जिसे बनाये रखना हमारा परम दायित्व है।

संयम रखें

आदर्श जीवन व्यतीत करने के लिए व्यक्ति को अपने आप पर संयम रखना चाहिए। लेकिन आज का इंसान तो जानवरो से भी खतरनाक साबित हो रहा है। बात बात पर हिंसा पर उतारू हो जाता हैं। बात बात में गाली गलौज करने लगता हैं। ऐसा लगता हैं कि गुस्सा उसके नाक पर ही हरदम बैठा रहता हैं। आज लोगों की वाणी पर संयम नहीं रहा हैं। उसकी भाषा व बोली में फूहड़ता झलक रही है। जो उचित नहीं है। वाणी पर संयम होना चाहिए,क्योंकि वाणी से दिये घाव कभी भी नहीं भरते हैं जबकि चोट के घाव दवा लगाने से भर जाते हैं और फिर पहले जैसा हो जाता हैं। इसलिए जब भी बोलें तब सोच समझ कर ही बोलें।

इस नश्वर संसार में सबसे ज्यादा सुखी वहीं हैं जिसने यह जान लिया कि संसार में सुखी कोई नहीं है। अपनी जिंदगी में सबसे बड़ा धनवान वो इंसान हैं जो दूसरों को अपनी मुस्कुराहट देकर उनका दिल जीत लेता हैं।

दिल खोलकर प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए

जब भी कोई श्रेष्ठ कार्य करें,किसी से अलग हटकर कोई रचनात्मक कार्य करें या कोई ऐसा अनोखा व अनूठा कार्य करें कि हमारी आंखें उसे देख कर दंग रह जाये तो ऐसे व्यक्ति को प्रोत्साहित अवश्य कीजिए। प्रायः देखा गया कि या तो देखने वाला उसे देखकर नजर अंदाज कर देता हैं या फिर अंगूठे का निशान या तालियां व्हाट्सएप पर डालकर इतिश्री कर लेता हैं जो न्याय संगत बात नहीं है। हम कोई मूक बधिर नहीं है।

परमात्मा ने हमें जुबान दी हैं। भारतीय संविधान में बोलने व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गई है तो फिर ऐसा मौन रहना कहां तक उचित है। अगर आप किसी कारण से बोलकर शाबाशी नहीं दे पाते हैं तो बहुत बहुत बधाई, बहुत सुन्दर कलेक्शन, पेंटिंग, कविता, वाह वाह, वेरी नाइस, अरे वाह, बहुत अच्छा, काबिले तारीफ लिखकर सामने वाले का हौसला अफजाई तो कर ही सकते हो। अपनी प्रतिक्रिया अवश्य देनी चाहिए। अगर कहीं सुधार की आवश्यकता महसूस करते हैं तो वह भी जरूर बताइएगा। इसमें शंका न करें। लेकिन किसी को हताश करने के ध्येय से कभी भी खामियां न ढूंढें और न ही किसी को बतायें। नेक कार्य की सराहना हमेंशा दिल खोलकर कीजिए। तभी सामने वाले के चेहरे पर मधुर मुस्कान हम देख पायेंगे।

प्रेम से रहिए

परमात्मा ने हमें यह मानव जीवन दिया है जो बड़ा ही दुर्लभ हैं। चौंसठ लाख योनियों में से केवल मानव ही एक ऐसा व्यक्ति है जो धन कमा रहा हैं लेकिन फिर भी वह संतुष्ट नहीं है। हाय धन, हाय धन दिन रात करता रहता हैं। धन के लिए वह परमात्मा तक को भूल गया हैं और अनैतिक कार्य तक कर रहा हैं। मारपीट, चोरी, बेईमानी, हिंसा तक वह कर इस मानव जीवन को कलंकित कर रहा हैं। जब तक जीवन हैं तब तक तो प्रेम स्नेह से रहिए हिंसा आदमी को शैतान बना देती हैं। इसलिए ईश्वर के नाम का स्मरण और प्रेम से रहें व दूसरों को भी प्रेम से रहने दीजिए।

असत्य के बजते हैं नगाड़े

कहते है कि सत्य की झंकार होती है और असत्य के नगाड़े बजते हैं। सत्य सदा सत्य ही रहता है जबकि असत्य बार बार बदलता रहता हैं। यही वजह है कि असत्य बोलने वाले को हर बार कहना पड़ता है कि मेरे कहने का मतलब यह है कि जबकि सत्य बोलने वालें को ऐसा नहीं कहना पड़ता है। हां सत्य बोलने वाले को न्याय पाने के लिए कुछ परेशानी होती है,लेकिन आखिर में जीत उसी की होती हैं। जबकि झूठ बोलने वाला बिना वजह चीख चीखकर अपने असत्य का नगाड़ा बजाता है।

जीवन का सत्य

जीवन का सत्य यहीं हैं कि सदैव ऐसा काम करों जो सर्वमान्य हो और सबके हित का हो। जब कार्य करना ही हैं तो सर्वश्रेष्ठ ही कीजिए। लड़ाई झगड़ों में उलझकर समय बर्बाद करने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। याद रखिए जहां दूसरों को समझना कठिन हो,वहां खुद को समझ लेना ही बेहतर हैं।आज के समय में कोई किसी की बात सुनने को तैयार नहीं है। सब अपने मन की करते हैं। आप से भले ही राय मांग लेंगे,मगर करेंगे अपने मन की ही इसलिए हर किसी को राय न दें। जो समझ सकें उसे ही राय दीजिए। वरना समय की बर्बादी ही हैं।

मन से लड़ो

क्रोध या गुस्सा आये तो मन से लड़ें, मनुष्य से नहीं,चूंकि क्रोध का जन्मदाता आपका मन हैं न कि मनुष्य। अगर किसी ने आपकों कड़वी बात कह दी तो सुनने की हिम्मत रखियेगा। क्योंकि कड़वी बात आपकों आपका अपना ही कहेगा कोई दूसरा नहीं। अतः उससे लड़ने के बजाय अपने मन को कहे कि उसके मन में आपके प्रति ऐसा क्रोध क्यों आया। कहीं न कहीं आप में कमी है। बस उस कमी को खोज कर समय रहते सुधार लीजिए। जैसे उबलते हुए पानी में कभी भी अपनी परछाई दिखाई नहीं देती हैं, ठीक उसी प्रकार परेशान मन से सही समाधान दिखाई नहीं देते हैं। शांत होकर देखिए सभी समस्याओं का हल मिल जायेगा।

अच्छा मन

अगर आप का मन अच्छा हैं तो उसमें श्रेष्ठ विचारों का आगमन होगा। शांति होगी। हर कार्य करने में आंनद की प्राप्ति होगी। मन अच्छा हैं तो खुशियां अपार हैं। चारों ओर आंनद ही आनंद है। मन साफ सुथरा हैं तो दिल अपने आप बड़ा हो जाता हैं। जहां दया ,प्रेम ,स्नेह,मिलनसारिता,वात्सल्य का भाव, धैर्य, सहनशीलता,परोपकार,त्याग,संयम, नैतिकता और नम्रता व विनम्रता जैसे आदर्श गुणों का निवास होता है। मदद या परोपकार के कार्य करने के लिए केवल धन की जरूरत नहीं होती है उसके लिए अच्छे मन की भी जरूरत होती है।

बगीचे के फूल

कहते हैं कि विचार और व्यवहार हमारे बगीचे के फूल हैं जो हमारे पूरे व्यक्तित्व को महका देते हैं। इसलिए व्यक्ति को अपना व्यवहार सभी के साथ एक समान रूप से रखना चाहिए। चाहे वह बच्चा हो या जवान, स्त्री हो या पुरुष या बुजुर्ग। चूंकि हमारा आदर्श व्यवहार ही हमारी असली पूंजी है। ठीक इसी प्रकार हमारे विचार भी श्रेष्ठ होने चाहिए। विचार श्रेष्ठ होगे तभी हम श्रेष्ठ साहित्य का सृजन कर सकते हैं। विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

जहां विचार और व्यवहार श्रेष्ठ होते है, उसी व्यक्ति की ख्याति दूर-दूर तक फैलती हैं और उसे यश और कीर्ति प्राप्त होती हैं और यह फूल (विचार और व्यवहार) उसके व्यक्तित्व को महका देते हैं।

मेहनत और जंग

आज का इंसान मेहनत से घबराता हैं और घर बैठे यश, मान सम्मान पाना चाहता है। कहते है कि देश का भविष्य युवा पीढ़ी के कंधों पर टिका है। अगर आज का युवा ही मेहनत से जी चुराता हो तब भला हम कैसे उससे उम्मीद करे कि वह भारत को ऊंचाइयों तक पहुंचा देगा और एक नये भारत का नव निर्माण करेगा।

युवा शक्ति को चाहिए कि वह मेहनत से न घबराये। आज की गई मेहनत सदैव हमारे हौसलों को बुलंद बनाए रखेगी और हमें देश का एक कर्मठ नागरिक बनायें रखेगी। आप किसी भी क्षेत्र में कार्य करने के लिए जाएं , लेकिन आपकों उस क्षेत्र में मेहनत अवश्य ही करनी पड़ेगी। मेहनत की कमाई जीवन को सुख,शांति और समृद्धि प्रदान करती हैं अरे मेरे भाई ! मेहनत तो हर फिल्ड में करनी पड़ेगी बेकार पड़े रहने से तो लोहे में भी जंग लग जाती हैं फिर तो हम इंसान हैं। अगर मेहनत से जी चुरायेगे तो हमारी सारी शिक्षा दीक्षा बेकार हैं। अतः उठो,जागो और तब तक कर्म करते रहिए जब तक हमें हमारी मंजिल न मिल जाएं।

बदलें की आग

कहने को तो हम अपने आप को एक सभ्य समाज का नागरिक कहते नहीं थकते। लेकिन दिन रात बदलें की आग में भीतर ही भीतर जलते रहते हैं। कब मौका मिले कि मैं अपना पुराना हिसाब पूरा करूं अर्थात बदला लूं। जो व्यक्ति दिन रात बदलें की आग में जलता रहता हैं वह जीवन में कभी भी प्रगति नहीं कर सकता हैं। बस उसे तो बदले की भावना खाये जाती हैं और वह हर समय क्रोध की आग में जलता रहता हैं जिसके कारण उसके चेहरे व आस पास कहीं भी प्रेम, स्नेह, मिलनसारिता, वात्सल्य का भाव, धैर्य, सहनशीलता, परोपकार, त्याग की भावना दूर तक दिखाई नहीं देती हैं और वह इन गुणों से वंचित रह जाता है।

हमारे बडे बुजुर्ग कहते हैं कि क्षमा वही कर सकता हैं जो अंदर से मजबूत और समर्थशाली हो, खोखले इंसान तो सिर्फ बदलें की आग में जलते रहते हैं।

आईना

कहते हैं कि इंसान का व्यवहार भी एक आईना हैं जिससे उसका अंहकार और संस्कार दोनों दिख जाते हैं। परमात्मा ने हमें यह मानव जीवन उपहार स्वरूप प्रदान किया हैं तो फिर इस जीवन को नेक कार्य में लगाइये। परोपकार के कार्य कीजिए। भूखें को भोजन कराएं। बीमार लोगों की सेवा कीजिए। पशुओं को चारा डालिए। पक्षियों के लिए दाना पानी की व्यवस्था कीजिए। अगर आप सामर्थ्यवान है तो किसी जरूरतमंद को शिक्षा दिलाने व गरीब परिवारों की कन्या का विवाह कराकर पुण्य के भागीदार बनें आपका तनिक सा सहयोग या मदद उनका जीवन बदल देगे और वे और उनका पूरा परिवार जीवन भर आपका आभारी रहेगा।

कहा भी जाता है कि जिंदगी में सब कुछ नहीं मिलता है। कुछ चीजें मुस्कुराते हुए छोड़ देना चाहिए। परिश्रमी व्यक्ति को तो वैसे भी उम्र थका नहीं सकती , ठोकरें गिरा नहीं सकती। अगर जीतने की जिद हो तो परिस्थितियां हरा नहीं सकती। कुछ इक्ट्ठा उन्हीं के पास होता है जो बांटना जानते हो फिर चाहे भोजन हो, प्यार हो या सम्मान। कहते है कि यह दुनियां बिल्कुल वैसी ही हैं जैसा आप देखना चाहते हैं। चाहें तो कीचड़ में कमल देख लो,चाहे देख लो चांद पर दाग।

इन्वेस्टमेंट

अच्छाई और भलाई ऐसी इन्वेस्टमेंट हैं जो कभी भी बेकार नहीं जाती हैं। इसलिए इंसान को हमेंशा दूसरों की भलाई ही करते रहना चाहिए और दूसरों के बारें में अच्छा ही सोचना

चाहिए। जब हम दूसरों से अपने प्रति अच्छा व्यवहार चाहते हैं तो हमें भी दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार ही करना चाहिए। ताली एक हाथ से नहीं बजती हैं। ताली दोनों हाथों से ही बजती हैं फिर हम अच्छाई और भलाई करने में पीछे क्यों रहें। जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल मिलेगा तब फिर श्रेष्ठ कर्म ही कीजिए। क्यों बेकार के कामों में अपना समय व्यतीत करें।

जीवन में कभी भी हार न मानें

जीवन जीना भी एक कला है और जिसने इस कला को सीख लिया उसका जीवन धन्य हो गया। इसलिए जीवन में कभी भी हार मत हारिए। क्या पता आपकी अगली कोशिश ही आपकों कामयाबी की ओर लें जायें। प्रायः लोग छोटी-छोटी बातों से हताश व निराश हो जाते हैं और अपनी कामयाबी की मंजिल को बीच रास्ते में ही छोड़ देते हैं।

प्यारे साथियों! कोई भी कार्य कठिन नहीं है अगर आप प्रयास करें तो कठिन से कठिन कार्य आसान हो जाता है। लोग कहते हैं कि साहित्य सृजन एक आसान कार्य है,लेकिन इसे जितना आसान समझा जाता है उतना आसान है नहीं। लेखक के लेखन कार्य में फूल कम कांटे अधिक होते हैं फिर भी सृजनकर्ता उन कांटों को भी कड़ी मेहनत व लगन से फूलों में परिवर्तित करके पाठकों के समक्ष ऐसे प्रस्तुत करता हैं कि पाठक साहित्य पढने के बाद वाह वाह कर उठते हैं। इससे साबित होता है कि जीवन में कभी भी हार न मानें और कामयाबी के लिए निरन्तर प्रयास करते रहें। इज्जत शौहरत और दुआएं खरीदी नहीं जाती हैं। इन्हें तो अपने व्यवहार से ही कमाना पडता हैं।

इज्जत

समाज में हर किसी का मान सम्मान करना व उन्हें इज्जत देना यह हमारे आदर्श संस्कार ही है। इंसान की पहचान उसके संस्कारों से ही हो जाती है। किसी को बताने की जरूरत नहीं है। कहते हैं कि अच्छे लोगों की संगत में रहो, क्योंकि सुनार का कचरा भी बादाम से मंहगा होता हैं। इसलिए जीवन में सदैव सकारात्मक सोच रखो। सच्चाई के मार्ग पर चलें, हिंसा, चोरी, बेइमानी, हेराफेरी, नशे जैसे अवगुणों से दूर रहें। शिकायतों की भी इज्जत है तभी तो हर किसी से नहीं की जाती है।

अगर आपकों किसी से कोई शिकवा शिकायत हैं तो उसे हर किसी के सामने डांट फटकार न लगाएं अपितु उसे एकांत में ले जाकर समझा बुझा दीजिए। चूंकि सबके सामने फटकारने से वह लज्जित होकर आपकों ही भला बुरा बोलने लग जायेगा और बात बिगड़ सकती हैं। अतः समाज में शांति और सौहार्द्र बना रहे इसके लिए हर किसी की इज्जत कीजिए। किसी को समझने के लिए हमेंशा भाषा की आवश्यकता नहीं पडती हैं कभी कभी उसका व्यवहार ही बहुत कुछ कह देता हैं।

सभी के साथ सद् व्यवहार करें। परमात्मा से अच्छे संबंध बना लें तो फिर आपकों किसी की भी जरूरत नहीं पड़ेगी और आप खुद सबकी जरूरत बन जाओगे। कहते हैं कि तुम बस अपने आप से मत हारना फिर तुम्हें कोई नहीं हरा सकता। याद रखिए हीरा परखने वालें से ज्यादा महत्वपूर्ण पीड़ा परखने वाला होता है। इसलिए जीवन में एक दूसरे का सहयोग करना सीखें। एक दूसरे के साथी बनकर इस प्रतिस्पर्धा की दौड़ में अपने आप का स्थान प्रगति की प्रथम पंक्ति में बनाए रखियेगा। यही जीवन की वास्तविकता हैं। बाकी तो सब कहने की बातें हैं। जो समझ गया वह प्रगतिशील बन गया और जो ना समझ पाया वह पिछड़ गया।

सत्संग की झाड़ू

व्यक्ति को अपना मन हर वक्त साफ रखना चाहिए। उसमें काम, क्रोध, लोभ लालच, बेईमानी, छल कपट जैसी तमाम तरह की गंदगी का कोई भी कूड़ा-करकट नहीं होना चाहिए। जैसे हम अपने घर को साफ सुथरा रखने के लिए रोज झाड़ू लगाते हैं और रोज़मर्रा की चीजों को साफ कर उसे व्यवस्थित स्थान पर रखते हैं। ठीक उसी प्रकार मन को भी साफ रखना चाहिए। मन में किसी के भी प्रति राग द्वेष नहीं होना चाहिए। मन को साफ रखने के लिए सत्संग, भजन कीर्तन रूपी झाड़ू रोज लगानी चाहिए। हमारा यह शरीर ही मकान है जिसे साफ रखना हमारा परम दायित्व है।

सोच से मजबूत हो

कहते हैं कि ताकतवर वह व्यक्ति नहीं है जो शरीर से मजबूत हो अपितु ताकतवर वह व्यक्ति हैं जो अपनी सोच से मजबूत हो। शरीर से व्यक्ति को स्वस्थ रहना चाहिए और अपनी दिनचर्या को बनाएं रखना चाहिए वहीं दूसरी ओर व्यक्ति को अपनी सोच को भी मजबूत बनाएं रखना चाहिए। सोच तभी मजबूत हो सकती हैं जब व्यक्ति अपनी सोच को सकारात्मक रखें और हर वक्त सभी के लिए अच्छा सोचें। अपनों के लिए तो हर कोई सोचता हैं लेकिन जो दूसरों के हित के लिए भी सोचता हैं वहीं महान कहलाता है।

हम दर्द

यह दुनियां बड़ी ही मतलबी हैं। यहां हर कदम सोच समझ कर ही रखना चाहिए। मतलब के बिना कोई किसी से बात नहीं करता। सब अपने ही स्वार्थ में व्यस्त हैं। किसी को भी किसी की चिंता नहीं है। इसलिए इस दुनियां में हमारे दोस्त हमदर्द होने चाहिए। दर्द देने के लिए तो सारी दुनियां तैयार बैठी हैं। अतः दोस्त ऐसा हो जो दुःख की घड़ी में भी हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार हो। वैसे भी सच्चे दोस्त की पहचान दुःख की घड़ी में ही होती हैं।

गहरे संबंध

संबंध बड़ी बड़ी बाते करने से नहीं अपितु छोटे-छोटे भावों को समझने से गहरे होते हैं। संबंधों को बनाए रखना और लम्बे समय तक निभाये रखना भी एक कला है और फिर जिसने इस कला को सीख लिया समझो उसका जीवन धन्य हो गया।

शहरों का घुटता आसमान

विजय गर्ग

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर, मलोट, पंजाब

हवा में घुलने वाला जहर उस जहरीले धुएं का परिणाम होता है, जो धुआं वाहनों से- कारखानों से और पटाखों से उत्सर्जित होता है। इस धुएं में शामिल कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाईआक्साइड, नाइट्रोजन डाईआक्साइड जैसी गैसें और सीसे के कण वातावरण को जहरीला कर देते हैं। ये जहर बच्चों और बुजुर्गों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है।

आज से साढ़े तीन-चार दशक पहले तक स्थिति इतनी भयावह नहीं थी। तब सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों की संख्या काफी कम थी। हवा में मौजूद जहर को सोखने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में पेड़ भी थे। लेकिन पिछले कुछ दशकों में स्थितियां बहुत तेजी से बदलीं। सड़कों पर गाड़ियों की भरमार हो गई और विकास की अंधी दौड़ में पेड़ों को अंधाधुंध काटकर हमने उस सहारे को खुद से ही छीन लिया जो न केवल हमें तेज धूप में छाया दिया करता था बल्कि पर्यावरण संरक्षण की आश्वस्ति भी देता था।

हवा में घुलने वाला जहर उस जहरीले धुएं का परिणाम होता है, जो धुआं वाहनों से- कारखानों से और पटाखों से उत्सर्जित होता है। इस धुएं में शामिल कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाईआक्साइड, नाइट्रोजन डाईआक्साइड जैसी गैसें और सीसे के कण वातावरण को जहरीला कर देते हैं। ये जहर बच्चों और बुजुर्गों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है।

राजधानी दिल्ली की हवा में घुले जहर ने एक बार फिर लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। राजधानियों की हवा में जहर की बात आमतौर पर मुहावरे में की जाती है, लेकिन दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों, शहरों में रहने वाले लोग सचमुच दमघोंटू हवा में सांस लेने को विवश हैं। सड़क पर बेतहाशा दौड़ रहे वाहनों और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के इलाके के खेतों में जलाई जाने वाली पराली के धुएं ने सांस लेना दूभर कर दिया है। रही-सही कसर दीपावली पर हुई आतिशबाजी के धूम-धड़ाके ने पूरी कर दी। दिल्ली ही क्या, देश के अधिकांश शहरों की हवा में प्रदूषण की मात्रा दीवाली के दिनों में खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है। उदाहरण के लिए राजस्थान के कोटा शहर को लिया जा सकता है। हर साल करीब दो लाख बच्चे देश के शीर्षस्थ इंजीनियरिंग या मेडिकल कॉलेजों में दाखिले की परीक्षा के लिए कोचिंग लेने के लिए कोटा आते हैं और इन छात्रों की आमद ने कोटा को आर्थिक समृद्धि के नवसोपान सौंपे हैं। यों भी बच्चों को देश का भविष्य कहा जाता है और जिस इलाके में इतनी बड़ी संख्या में बच्चे रहते हों, उस इलाके के पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामान्य जन को भी अतिरिक्त रूप से संवेदनशील होना चाहिए। शहर के एक अस्थमा विशेषज्ञ ने दीवाली की रात कोटा की हवा में प्रदूषण की पड़ताल की तो पाया कि वहां की हवा में जहरीले कणों की मात्रा मानक स्तर से सात गुना अधिक है।

पिछले कुछ सालों में हम अपने स्वभाव से ही नहीं, अपने व्यवहार से भी हवा में जहर घोलने के आदी हो चुके हैं। वायु प्रदूषण की भयावहता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि विश्व स्वस्थ्य संगठन

(डब्ल्यूटीओ) वायु प्रदूषण को 'पब्लिक हेल्थ इमरजंसी' अर्थात जन स्वास्थ्य के लिए आपातकाल कहता है। डब्ल्यूटीओ की एक रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण के कारण हर साल दुनिया में करीब सात करोड़ लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। बर्मिंघम विश्विद्यालय ने अपनी एक शोध के दौरान दुनिया में निमोनिया के कारण होने वाली मौतों और वायु प्रदूषण के मध्य सीधा संबंध पाया। लंदन के किंग्स कॉलेज के एक अध्ययन में पाया गया कि वायु प्रदूषण युवाओं में कई मनोविकृतियों को जन्म देता है। सामान्य तौर पर माना जाता है कि वायु प्रदूषण के कारण मनुष्य के फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है, लेकिन वैज्ञानिकों ने पाया है कि वायु प्रदूषण शरीर के हर अंग पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जहरीली हवाओं का असर फेफड़ों में समा कर समस्त कोशिकाओं को प्रभावित करता है।

वायु प्रदूषण के कारण व्यक्ति में तनाव पैदा करने वाले हार्मोनों का स्तर बढ़ जाता है और वह अवसाद का शिकार हो सकता है। बुजुर्गों में समझने की क्षमता में गिरावट संबंधी डिमेंशिया रोग हो जाता है। गर्भवती महिलाओं को गर्भपात जैसी समस्याओं का सामना करना होता है, गर्भस्थ शिशु का जन्म समय से पूर्व ही हो जाता है- जिससे उसका शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है। ब्रोंकाइटिस, अनिद्रा, यकृत के कैंसर, प्रजनन क्षमता में कमी, उच्च रक्तचाप, हृदयरोग जैसे कितने ही रोग वायु प्रदूषण के कारण बढ़ रहे हैं। चीन में किए गए एक अध्ययन में तो यह भी पाया गया कि वायु प्रदूषण बच्चों को गणित और भाषा जैसे विषय सीखने पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

वस्तुतः वायु प्रदूषण अपनी चपेट में आने वाले व्यक्ति के जीवन से इस तरह खिलवाड़ करता है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से पीढ़ियां प्रभावित होती हैं। शायद यही कारण है कि हमारे पुरखों ने अपने पर्यावरण के संरक्षण को एक जरूरी मुद्दा माना और वेदों ने लगातार प्रतीकों में पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया। ऋग्वेद में एक स्थान पर 'पृथ्वीः पूः च उर्वी भव' कह कर आह्वान किया गया है कि समस्त पृथ्वी और संपूर्ण परिवेश शुद्ध रहे, तभी जीवन का समग्र विकास हो सकेगा। अथर्ववेद में वायु को प्राण कहा गया है। वेदों के अनुसार वायु पिता के समान पालक, बंधु के समान धारक, पोषक और मित्रवत सुख देने वाली है। कहा तो यह भी गया है कि वायु अमरत्व की निधि है, क्योंकि वह हमें जीवन देती है। लेकिन बदलती हुई जीवन शैली ने हमारी पारंपरिक मान्यताओं से खिलवाड़ किया और मानो प्रदूषण ही हमारे लिए तरक्की का पर्याय बन गया।

इस वर्ष भी जब कुछ संवेदनशील लोगों ने वातावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए दीवाली के पूर्व पटाखों के संयमित उपयोग की बात की, तो कतिपय लोग तरह-तरह के कुतर्क से आतिशबाजी के समर्थन में उतर आए। कुछ लोगों का तो यहां तक कहना था कि दीवाली पर जो आतिशबाजी प्रारंभ से हो रही है, उसके खिलाफ बोलना वस्तुतः एक सुनियोजित साजिश है। ऐसा कुतर्क देने वाले इस ऐतिहासिक तथ्य को भी बिसरा बैठे कि जिन रामचंद्र की अयोध्या वापसी का संदर्भ दीपावली से जोड़ा जाता है, उनका समय ईसा से करीब साढ़े पांच हजार साल पहले का आंका गया है, जबकि आतिशबाजी की शुरुआत तो सदियों बाद हुई। कुछ लोगों ने इस बार यह भी तर्क दिया कि पटाखे से होने वाले धुएं से वातावरण में मौजूद मच्छर मरते हैं, इसलिए पटाखे तो जी भर कर चलाए जाने चाहिए। ऐसा कहने वाले भूल गए कि वातावरण को जहरीला कर देने से केवल मच्छरों पर ही प्रभाव नहीं पढ़ता, पीढ़ियां भी प्रतिकूलताओं का सामना करती हैं।

हवा में घुलने वाला जहर उस जहरीले धुएं का परिणाम होता है, जो धुआं वाहनों से- कारखानों से और पटाखों से उत्सर्जित होता है। इस धुएं में शामिल कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाईआक्साइड, नाइट्रोजन डाईआक्साइड जैसी गैसें और सीसे के कण वातावरण को जहरीला कर देते हैं। ये जहर बच्चों और बुजुर्गों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है। सर्दी के दिनों में वातावरण की आर्द्रता के कारण जहरीले कण जमीन से कुछ ऊपर ही एक ऐसा आवरण बना लेते हैं कि हवा बहुत बोझिल हो जाती है। दीवाली के दिनों में चूंकि आतिशबाजी के कारण हवा में नुकसानदायक कहे जाने वाले कणों की मात्रा बहुत बढ़ जाती है और वही समय ऋतु परिवर्तन का भी होता है, इसलिए लोगों को ज्यादा परेशानी होती है।

आज से साढ़े तीन-चार दशक पहले तक स्थिति इतनी भयावह नहीं थी। तब सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों की संख्या काफी कम थी। हवा में मौजूद जहर को सोखने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में पेड़ भी थे। लेकिन पिछले कुछ दशकों में स्थितियां बहुत तेजी से बदलीं। सड़कों पर गाड़ियों की भरमार हो गई और विकास की अंधी दौड़ में पेड़ों को अंधाधुंध काटकर हमने उस सहारे को खुद से ही छीन लिया जो न केवल हमें तेज धूप में छाया दिया करता था बल्कि पर्यावरण संरक्षण की आश्वस्ति भी देता था।

अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में भारत में पर्यावरण के बुरे प्रभावों का अध्ययन किया तो चौंकाने वाला तथ्य यह सामने आया कि गंगा के मैदानी इलाकों में रहने वालों की औसत उम्र में वायु प्रदूषण के कारण साढ़े तीन से लेकर सात वर्ष तक की कमी हो रही है। स्थिति यह है कि 1998 से 2016 के बीच इस इलाके में प्रदूषण सत्तर फीसद से भी अधिक बढ़ गया है, जबकि देश की चालीस फीसद आबादी भी इसी इलाके में रहती है। ऐसे में आने वाले समय में वायु प्रदूषण के कारण पनपने वाली बीमारियों से ग्रसित लोगों की संख्या में कितनी वृद्धि होगी, इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन वायु प्रदूषण को 'पब्लिक हेल्थ इमरजंसी' यों ही नहीं कहता।

बलहीन करता 'बल'

उमेश मानव

गुरुवर कहते हैं कि वास्तव मे कोई रहस्य है हि नहीं। प्रकृति सभी के लिए पारदर्शी एवं ग्राह्य है। यदि हम पशु जगत के उदाहरण से समझे तो देखेंगे तो पाते है। जीवजगत को वह सब स्वाभाविक रूप से ही ग्राह्य होता है जिसके लिए मनुष्यो को बहुत बल लगाना पड़ता है। यह बल मनुष्य अपनी न समझी के कारण लगता है। वह उस क्षेत्र मै जाना चाहता है जहाँ उसे जाना वर्जित है।

प्रकृति में ऐसा कुछ भी नहीं जो हम न जान सकें और यह भी सही है कि हमारे जानने लायक और कुछ है भी नही। अर्थात हमे जो कुछ जानना है वह हमारे पास है या हम तक पहुँच बना लेता है। सहज प्राकृतिक ज्ञान को, सरल अवस्था को मनुष्य ने रहस्य रहस्य कह कर सब जटिल कर रखा है। सरल को जटिल बताकर कुछ लोगों ने बाकियो को अक्षम बताकर और यह बताकर कि ज्ञान को केवल उन्हीं के द्वारा जाना जा सकता है और कुछ जानने के लिए उनकी कृपा की आवश्यकता है।

यहाँ पर गुरुवर कहते हैं कि वास्तव मे कोई रहस्य है ही नहीं। प्रकृति सभी के लिए पारदर्शी एवं ग्राह्य है। यदि हम पशु जगत को देखें तो पाते है कि पशु जगत को वह सब स्वाभाविक रूप से ही ग्राह्य होता है जिसके लिए मनुष्यो को बहुत बल लगाना पड़ता है। यह बल मनुष्य अपनी न समझी के कारण लगता है। वह उस क्षेत्र मै जाना चाहता है जहाँ उसे जाना वर्जित है। वर्जित इसलिए क्योंकि प्रकृति के तहत वह अमुक चीज आपके लिए जरूरी नहीं। आपको पूरण होने के लिए उस पथ कि जरूरत नहीं। हम अपने लिए कुछ खास करने, खास बनने के फेर में, स्वार्थ में उन रास्तों पर जाते है, जो कि एक प्रकार से बल लगाने वाली बात हुई। इन रास्तों का चयन हमारे लिए भारी घर्षण का काम करता है। जिससे हमारा सरल जीवन कठिन हो जाता है।

गुरुवर कहते है कि हमारा जीवन हमारी भोग अवस्था है। अर्थात हम जीवन लेने के साथ अपने लिए जीवन से पूर्व तैयार हुई अवस्था का, हमारी सिद्धान्त अवस्था को भोग करते हुए उसे जीते हुए पूर्ण करने आये है। तात्पर्य यह है कि जो भी कुछ

होना था वह पूर्ण करने आये है। तात्पर्य यह कि जो भी कुछ होना था वह पूर्व में हो चुका है हमें उसे सरलता से जीते हुए पूर्ण करना है। जिसमें हम अपने भूगोल में शरीर रूप में आकर उन सभी अवस्थाओं का एहसास करते हैं। जिससे हमें पूर्ण होना है। जिससे हमें सीखना है और स्वयं में हुए एहसास के माध्यम से, प्रकृति में व्याप्त प्रदूषण को मिटाना है। शरीर रूपी भूगोल से प्रकृति हमारे द्वारा पूर्व में बनाये गये प्रदूषण को मिटाकर खत्म कर देती है। यहाँ यह भी बात समझने की है कि हमारे जीवन का उद्देश्य भी यही होता है।

हमारे द्वारा विचार रूप में या अन्य रूप में जो प्रदूषण बनाया गया है उसे हमें मिटाना है। हम ही उसे मिटाये यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि वह हमारी ही इच्छा से उत्पन्न है तो उसको आकर्षित करके धारण करने की सबसे उपयुक्त जमीन हमारे अंदर ही बन सकती है। यह भी है कि हमारे द्वारा धारण करने पर ही हम उस एहसास से गुजरेंगे जिसे हमने ही कभी अपनी इच्छाशक्ति के माध्यम से बनया था। अब हमारा ही एहसास उसे पूर्णतः तक पहुॅचा कर मिटाये देंगे। इस प्रकार वह प्रदूषण ब्रहाण्ड से हमेशा के लिए ही मिटा दिया जायेगा।

अब होता यह है कि हम मिले हुए भूगोल मे वह नहीं कर रहे होते जो हमे करना है और जो कि सहज हो। हम जोर उस पर देते हैं जो हमारे लिए नहीं है, हम दबाव में आकर प्रभावित होकर उन चीजों को करने लग जाते है जो कि हमारे सफर के लिए बना ही नही और जिससे हमें दिक्कत होती है, हममें सहजता नहीं रहती और हम घर्षण में पड़कर सरल जीवन का आनन्द खो देते हैं। हम सबका जीवन यूं ही व्यर्थ हो जा रहा है। हम दूसरों के दिखावे में पड़कर, तुलना करके 'ज्यों ही जीवन जीना शुरु करते है हमारा सारा सुख चैन खो जाता है। जो हमें मिला होता है, जो हमारा होता है वह हमें नही भाता। हमारी दौड़ दूसरे को देखकर उन जैसा बनने मे लग जाती है। यद्यपि आनन्द हमें उसी में मिलता है जो हमें स्वाभाविक रूप से मिल जा रहा। जिसके लिए हम खून पसीना एक कर रहे घर्षण कर रहे वह मिलने से पहले और मिलने के बाद दोनो स्थितियों में ही आनन्द का एहसास नहीं देता। इसपर भी हम समझ नहीं पाते और यूं ही जीवन व्यतीत हो जाता है। पशु - पक्षी अपने भूगोल में रहकर वही कार्य करते हुए, जिसके लिए उनका जन्म हुआ है, आनन्दित रहते है। उन्हें कोई दुख, कोई पश्चाताप, पाप और पुन्य आदि का फेर नहीं घेरता है।

गुरुवर कहते है कि वे सब कुछ यूं ही जान रहे होते हैं। जिन चीजों को जानने के लिए मनुष्य तप-साधना करता है, पहाड़ों और जंगलो में भटकता है। पशु जगत अपने स्वभाव पर चलते हुए वह सब जान लेते है, प्राकृतिक नियम का पालन करते हुए। वे उतना भर ही करते है जिसके लिए वे आये है फिर शांत हो आनन्दित रहते है। वे यह नहीं सोचते कि कल का दिन कैसा होगा। दूसरे दिन के लिए क्या नाटक, क्या भूमिका बनाई जाये। वे पढ़ने, दूसरे का शोषण करने के लिए दिमाग नही चलाते है। वे शांत भाव से प्रकृति में रमण करते है।

दूसरी तरफ हम मनुष्य कल क्या होगा इसी बात की चिंता में रहते है और रात की नींद भी नही ले पाते है। इतना दिमाग चलता है कि दवा खाकर भी नींद दूर रहती है। दूसरों के शोषण के लिए इतनी नीति बनाते है कि ऐसे विचार स्वयं का ही शोषण करने लगते है। गुरुवर कहते है कि "प्रकृति ने कुछ नही छुपाया है। कोई रहस्य नहीं रखा है। उल्टा यह तो मनुष्य ही है जो चीजों को जानते के लिए बल लगाने लगा। इस बल प्रयोग से एक दबाव का क्षेत्र बना, एक वैक्यूम बना जिससे प्रकृति और हमारे बीच एक पर्दा बन गया, जिससे हमसे प्रकृति की पारदर्शी आवस्था हमसे छुप गई। हमारा अनायास लगाया गया बल हमें बलहीन कर रहा है।"

गुरुवर आगे समझाते हुए कहते है कि बल प्रयोग हमारी स्वाभाविक क्रिया को कैसे असंतुलित करता है यह हम अपने शरीर पर ही परख कर देख सकते है। जैसे हम जानते है कि शरीर की प्रणाली स्वतः कार्य करती है।

शरीर विज्ञान के अनुसार यह प्रणाली स्वयं ही वायु दाब के द्वारा शरीर के विभिन्न कार्य सम्पन्न करती रहती है। चाहे वह भोजन करना हो, भोजना हजम करना हो या फिर मल शरीर से बाहर निकालना हो। अलग-अलग समय पर बल अपने अनुसार कार्य करता है। इसके विपरीत जब हम स्वयं से बल लगाते हैं, तो पाते है कि बल प्रयोग से शरीर की कार्य प्रणाली में बाधा उत्पन्न होती है और उसके कार्य में हस्तक्षेप से हम बिमार पड़ जाते है। अन्य दिक्कतों का भी सामना करना पड़ता है। शरीर की कार्यप्रणाली पुनः सही होने के लिए प्राकृतिक आवस्था में जाती है। परन्तु यहाँ भी हम जल्दी आराम पाने के लिए आप्रकृतिक चीजों का सहारा लेते हैं। कई लोगों से परामर्श लेते है और दवाईयां खाते है। यह सब शरीर की सहज प्राकृतिक प्रणाली को घर्षण में डालकर और समस्या ला देता है।

प्राकृतिक व्यवस्था में जितना ही हम हस्तक्षेप करते है उतना ही समय शरीर को सही करने में लगता है। अंत में सही वह अपने ही प्राकृतिक तरीके से होता है। इससे हम यह समझ सकते हैं कि अनायास बल लगाना घर्षण का कारण बनता है जो कि हमें अप्रिय लगता है।"

गुरुवर कहते है कि प्रकृति एक विज्ञान है। यह विज्ञान के तहत ही कार्य करती है, किसी के कहने से नही। किसी से प्रभावित होकर भी नही। प्रकृति विज्ञान निरपेक्ष - स्वतंत्र रूप सें शांत अवस्था में कार्य करता है। यह विज्ञान अव्यक्त रूप से और निर्लिप्त भाव से सभी में है और सब उसमें हैं।

पर्यावरण संरक्षण का भारतीय दर्शन

नमिता वैश्य (शिक्षिका)

पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ हमारे देश में जैव विविधता को संरक्षित रखने और उसे समृद्ध बनाने पर भी पूरा ध्यान दिया गया। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में जीव-जंतुओं को हानि पहुंचाने तथा उनका भक्षण करने की अनुमति नहीं है। जीवो की उपयोगिता के अनुरूप हमने उन्हें धार्मिक और सामाजिक मान्यता प्रदान की और उनके पूजन की परंपरा शुरू कर उनके संरक्षण का संदेश दिया।

स्वच्छ पर्यावरण को हमारे देश में प्राचीन काल से ही वरीयता दी गई।सच तो यह है कि हमारा भारतीय दर्शन पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से जितना समृद्ध है, उतना किसी अन्य देश का नहीं। पर्यावरण संरक्षण का भारतीय दर्शन इतना व्यावहारिक है कि यह हमारी जीवन शैली से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि सभी सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं व प्रथाओं के मूल में कहीं न कहीं पर्यावरण सुरक्षा को महत्व दिया गया है। भारत में प्राचीन काल से सूर्य, पृथ्वी, जल,वायु, अग्नि, वनस्पतियों, सरिताओं और सरोवरों आदि को पूजनीय मानने की परंपरा रही है, जिसके मूल में पर्यावरण संरक्षण का भाव ही निहित है। सूर्योपासना, ग्रहों की अभ्यर्थना, अग्निपूजा एवं वृक्ष पूजा आदि की परंपराएं विकसित कर हमने सदैव पर्यावरण संरक्षण को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ हमारे देश में जैव विविधता को संरक्षित रखने और उसे समृद्ध बनाने पर भी पूरा ध्यान दिया गया। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में जीव-जंतुओं को हानि पहुंचाने तथा उनका भक्षण करने की अनुमति नहीं है। जीवो की उपयोगिता के अनुरूप हमने उन्हें धार्मिक और सामाजिक मान्यता प्रदान की और उनके पूजन की परंपरा शुरू कर उनके संरक्षण का संदेश दिया।गाय भारतीय समाज में आज भी पूज्य है। भारत के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में पशुओं, वृक्षों व वनस्पतियों आदि को पूजने की प्राचीन परंपरा है। इतना ही नहीं, आदिवासियों के वस्त्र तक प्रकृति के अनुरूप रंग-बिरंगे होते हैं। इनकी जीवन- शैली में प्रकृति का पूरा प्रभाव दिखता है। हम नाग को नाग देवता कहकर 'नाग पंचमी' जैसा त्यौहार अकारण नहीं मनाते। पर्यावरण की दृष्टि से इसका अपना अलग महत्व है। सर्प वायुमंडल में विद्यमान जहरीली गैसों को आत्मसात् कर वातावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं। हमारे भारतीय दर्शन में पर्यावरण को ईश्वर के प्रतिरूप के रूप में सम्मानित व संरक्षणीय माना गया है।

तैत्तरीयोपनिषद् में कहा गया है -'ईश्वरीय आत्मा से आकाश की, आकाश से वायु की,वायु से अग्नि की और अग्नि से जल की तथा जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। पृथ्वी ने वनस्पति उपजाई,अन्न दिया और मानव जाति सहित असंख्य जीव-जंतुओं को

पैदा किया।इस सृष्टि में प्रत्येक जीव-जंतु की महत्वपूर्ण भूमिका है।'

'हमारे देश में पर्यावरण और प्रकृति प्रेम को जीवन से अभिन्न रूप से जोड़कर इसके संरक्षण के संस्कार विकसित किये गये।'

भारत में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति प्रेम की जड़े बहुत गहरी हैं,जिन्हें हम बराबर सींचते आए हैं। हमने धरती को 'माता' कहकर संबोधित किया और जीवन दायिनी नदियों को भी 'मां'के ही समतुल्य माना।इसके पीछे यही धारणा थी कि हम इनका संरक्षण करें,ताकि ये मानव जीवन को सुखमय बनायें। हमने बहुत पहले इस मर्म को समझ लिया था कि मानव जीवन को बनाए रखने के लिए प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित और समृद्ध बनाए रखना नितांत आवश्यक है और इन्हें क्षति पहुंचाकर सुखद मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।यही कारण है कि हम सदैव प्रकृति के प्रति आस्थानत रहें और उससे ऊर्जा और प्रेरणा प्राप्त करते रहें। जीवन के हर पहलू में हमने प्रकृति के महत्त्व को सर्वोपरि रखा। यहां तक कि कर्मकांडों तक में इसकी उपेक्षा नहीं की, बल्कि इसे प्रमुखता दी।जन्म से मरण तक हम प्रकृति और पर्यावरण को साथ लेकर चले। पहले हमारे यहां यह विधान था कि जब किसी व्यक्ति की इहलीला समाप्त हो जाती थी, तो जिस स्थान पर उसकी चिता जलाई जाती थी, उसके चारों कोनों पर मरने वाले के परिजन चार वृक्ष लगाते थे। इतना ही नहीं वर्ष पर्यन्त इन वृक्षों की देखभाल भी परिजन करते थे और इन्हें दूध व जल से सींचते थे।ऐसा विधान किसी अन्य देश में शायद ही हो। हालांकि समय की आपाधापी, स्थानाभाव एवं जीवन-शैली में आए बदलावों के कारण यह पुरानी परंपरा अब लुप्तप्राय है और अब टहनियां गाड़कर इस विधान को सांकेतिक रूप से पूरा किया जाता है।आज ऐसी परंपराओं को पुनर्जीवित किए जाने की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि ये धरती हरी-भरी रहे।

भारतीय समाज आदिकाल से पर्यावरण संरक्षक की भूमिका निभाता रहा। हमने प्रकृति प्रेम को सर्वोपरि रखा। यही कारण है कि हमारे वेद, उपनिषद् व पुराण आदि प्रकृति व पर्यावरण की महिमा से भरे हुए हैं।

अथर्ववेद के भूमि सूक्त में कहा गया है -

अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु
मातरम् औषधीनाम्
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पितम्।

अर्थात् हे भूमि, तेरे वन हमारे लिए सुखदायी हों। भूमि तेरे वृक्षों को मैं इस तरह काटूं कि शीघ्र ही वे पुनः अंकुरित हो जाएं, सम्पूर्ण रूप से काटकर मैं तेरे मर्मस्थल पर प्रहार न करूं। भूमि को औषधियों की माता माना गया है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति हम प्राचीन काल से ही अत्यंत सजग और चेतन रहे। हमने स्वच्छ वायु की उपादेयता और उसके महत्व को बहुत पहले ही समझ लिया था।तभी तो ऋग्वेद में कहा गया है -

वात आ वातु भेषजं मयोभु नो हृदे
यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः।

वायु की महत्ता को रेखांकित करने वाली उक्त पंक्तियों से आशय यही है कि वायु हमें ऐसी औषधि दे जो शांति और आरोग्य प्रदान करे। इसमें निहित अमृत रूपी निधि हमारी आयु को बढ़ाकर हमें दीर्घजीवी बनाए। स्पष्ट है कि हमने स्वस्थ जीवन के लिए वायु के महत्व को समझा और इसे प्रदूषित होने से बचाने का संकल्प भी लिया।

वृक्षारोपण को पुण्य का कार्य बताया गया। इसे संस्कार के रूप में किस तरह प्रतिपादित किया गया,इसका पता

विष्णु धर्म सूक्त की इन पंक्तियों से चलता है- 'एक व्यक्ति द्वारा पालित एवं पोषित वृक्ष एक पुत्र से भी अधिक महत्व रखता है।देवता इसके फूलों से,पथिक इसकी छाया में विश्राम कर तथा मानव इसके फलों का रसास्वादन कर इन वृक्षों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।'

हमारे मनीषियों-मनस्वियों ने किस प्रकार हमें वृक्षारोपण के लिए प्रेरित किया, इसका पता वराह पुराण के इस संदेश से चलता है- 'पंचाम्रवाती नरकं न याति।'

अर्थात् आम के पांच पौधे लगाने वाला कभी नरकगामी नहीं होता।

पर्यावरण संरक्षण के जिस भारतीय दर्शन की नींव भारत के तपस्वियों, ऋषियों, मुनियों ने रखी,उसे हमारे सम्राटों व शासकों ने राजकीय संरक्षण भी दिया। उन्होंने जनहितकारी कार्यों में उन कार्यों को वरीयता दी,जो पर्यावरण संरक्षण से जुड़े थे। बड़े-बड़े सरोवरों और जलाशयों का निर्माण करवाया गया तथा फलदार और छायादार वृक्ष लगवाए। चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक व हर्षवर्धन जैसे सम्राटों ने तो इस दिशा में विशेष ध्यान दिया। मध्यकाल में भी शासकों ने पर्यावरण संरक्षण पर विशेष महत्व दिया और बागवानी की कला इसी काल में विकसित हुई। मध्यकाल के सम्राट शेरशाह सूरी ने अपने शासनकाल में अनेक जनहितकारी कार्य किए थे, जिनमें सड़कों का निर्माण मुख्य था।तब विकास कार्यों को करते समय भी पर्यावरण संरक्षण का पूरा ध्यान रखा जाता था। 'ग्रांड ट्रंक रोड' के निर्माण के समय शेरशाह सूरी ने प्रशासनिक अमले को इस बात की सख्त चेतावनी दे रखी थी कि बहुत आवश्यक होने पर ही हरे वृक्षों को काटा जाए तथा निर्माण के बाद सड़क के दोनों किनारों पर नीम,आम, अशोक, पाकड़ तथा पीपल आदि के छायादार वृक्ष लगाए जाएं।आज विकास,विनाश का पर्याय बन गया है और ऐसा करते हुए हम पर्यावरण की जमकर अनदेखी करते हैं। तथापि उस समय शेरशाह ने जिस अग्रिम दृष्टि का परिचय दिया था,वह न सिर्फ श्लाघनीय है, बल्कि प्रेरक भी है। मध्य काल के अन्य शासकों

में अकबर, शाहजहां आदि ने भी पर्यावरण संरक्षण पर पूरा ध्यान दिया और धरती को हरा-भरा रखने का प्रयास किया। हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण की जो समृद्ध परंपरा प्राचीनकाल से शुरू हुई,वह अनवरत जारी है।हर काल में हमने पर्यावरण के प्रति अपनी सजगता और चेतना को कम नहीं होने दिया। हमें हमारे दर्शन से यह सीख मिली है कि प्रकृति और पर्यावरण ईश्वर का ही प्रतिरूप है, इसलिए इसके प्रति आदर व सम्मान का भाव रखकर हमें प्रकृति और पर्यावरण का संवर्धन करना चाहिए।

प्रकृति और पर्यावरण के प्रति हमारा जो सम्मान भाव है,जो हमें हमारे दर्शन से प्राप्त हुआ है,उसी का यह परिणाम है कि पर्यावरण की दृष्टि से विश्व के दूसरे देशों की तुलना में भारत की स्थिति आज भी बहुत अच्छी है।

आज समूचा विश्व पर्यावरण असंतुलन से उपजी अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है। भारत भी इन समस्याओं से दो-चार हो रहा है। स्वार्थी मनुष्य निरंतर प्रकृति का दोहन कर रहा है और ऐसा करते हुए उसका आचरण प्रकृति विरोधी हो चुका।जिस धरा को हम धरती माता कहकर संबोधित करते हैं,उसी धरा की छाती को स्वार्थ में अंधे होकर छलनी कर डाला।

कवयित्री महादेवी वर्मा की पंक्तियों में -

कर दिया मधु और सौरभ दान सारा एक दिन

किन्तु रोता कौन है तेरे लिए दानी सुमन

मत व्यथित हो फूल, किसको सुख दिया संसार ने

स्वार्थमय सबको बनाया है यहां करतार ने।

उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि प्रकृति तो हमें सर्वस्व प्रदान करती है, किन्तु हम स्वार्थमय होकर प्रकृति का तनिक भी ध्यान नहीं रखते हैं। हमारे स्वार्थमय आचरण ने ही पर्यावरण असंतुलन जैसी वैश्विक समस्या को जन्म दिया है। पर्यावरण को क्षति पहुंचाने वाले अधिकांश कारण मानवजनित ही हैं और इनमें विकसित देशों का विशेष योगदान है।आज के संदर्भों में यह अत्यंत आवश्यक है कि हम पर्यावरण संरक्षण के अपने प्राचीन दर्शन में प्राण फूंकें और उससे विमुख न हों। हमारा देश कृषि प्रधान है,देश के किसानों का भाग्य मौसम तय करता है।हमारी खाद्यान्न सुरक्षा और सुख-समृद्धि के लिए मौसम की अनुकूलता नितांत आवश्यक है और इस अनुकूलता को बनाए रखने के लिए प्रकृति और पर्यावरण को संरक्षित रखना अपरिहार्य व आवश्यक है। हमारे पास पर्यावरण संरक्षण के भारतीय दर्शन का ठोस धरातल विद्यमान है। आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण संरक्षण का जो मार्ग हमें हमारे पूर्वजों ने दिखाया है,हम उस पर मजबूत कदम बढ़ाएं और एक बार फिर अपने वेदों, उपनिषदों की ओर लौटें।ऐसा करते हुए हम उस वैश्विक समुदाय को दर्पण दिखा सकते हैं,जो इस साझा चुनौती से निपटने में अब तक असफल रहा है। अपनी वैदिक संस्कृति के प्रसार से ऐसा करते हुए भारत ' विश्व गुरु' की अपनी भूमिका में वापस आ सकता है।

'हंसी' मजाक होती हैं, नाराज नहीं होना चाहिए

डॉ. बी.आर.नलवाया
मंदसौर

विश्व में हर दिन को किसी ना किसी दिवस के रूप में मनाने का सिलसिला चलता रहता है। हर दिन का अपना एक विशेष महत्व होता है। ऐसे ही प्रतिवर्ष 1 अप्रैल को विश्व मूर्ख दिवस विश्व के सभी देशों में मनाया जाता है। विश्वपटल पर भी 1 अप्रैल को हर कोई एक दूसरे के साथ हंसी- मजाक, चुटकुले और खुशियों को परस्पर समर्पित करने को आतुर रहता है। लोग अपने प्रियजनों या दोस्तों को सरप्राइज करने के लिए तरह-तरह के आईडिया ढूंढते हैं। इस दिन की खासियत यह है कि मूर्ख बना व्यक्ति नाराजगी या गुस्सा नहीं करता है। कई बार हंसी मजाक के इस सिलसिले में हम अनजाने में ही सामने वाले का दिल दुखा बैठते हैं ,जबकि हमारा इस तरफ ना तो कोई ध्यान जाता है ,और नहीं ऐसा करने का इरादा है, अतः हम हर बात को हंसी मजाक में लेकर तनाव को दूर करते हैं यही 1 अप्रैल का मकसद भी होता है।

1582 में जब फ्रांस के जूलियन कैलेंडर को छोड़कर ग्रेगोरियन कैलेंडर अपनाया गया था। जहां जूलियन कैलेंडर एक अप्रैल से नया साल शुरू होता था वही ग्रेगोरियन कैलेंडर में नया साल 1 जनवरी को शिफ्ट हो गया। इसको लेकर कहा जाता है कि कैलेंडर बदलने के बाद भी कई लोग इस बदलाव को समझ नहीं पाए और 1 अप्रैल को ही नया साल मना रहे थे।

यह तथ्य भी ज्ञात हुआ की "यूनानी देश से 1 अप्रैल को मूर्ख दिवस मनाने की शुरुआत हुई थी।" वहां एक व्यक्ति था जो स्वयं को बुद्धिमान समझता था और डींगे मारा करता था। उसे मूर्ख बनाने के लिए उसे कहा गया कि "अमूक पहाड़ी के पीछे अमूक समय पर अगले दिन सूरज देवता प्रकट होकर वहां मनोकामना पूर्ण करेंगे।" अगले दिन वह व्यक्ति जब वहां पहुंचा तो किसी को भी ना देखकर वह बहुत निराश हुआ। उसे जब वास्तविकता का ज्ञान हुआ तो वह बड़ा शर्मिंदा हुआ और फिर उसने डींगे मारना छोड़ दिया। चूंकि उस दिन 1 अप्रैल था, इसलिए उसे दिन को प्रतिवर्ष लोग मूर्ख दिवस के रूप में मनाने लगे।

इटली, इंग्लैंड तथा अन्य यूरोपीय देशों में इस दिन नौकर घर के मालिक बन जाते हैं, और घरों के मालिक नौकर बन जाते है। फिर नौकर अपने मालिकों पर हुकुम चलाते हैं, बच्चे भी इस दिन का खूब आनंद लेते हैं। भारत में 1 अप्रैल को मूर्ख दिवस मनाने की शुरुआत 19 वी शताब्दी की शुरुआत में अंग्रेजों ने की थी। अप्रैल फूल मनाने के लोगों ने कई तरीके लोगों ने ईजाद किये, जैसे किसी दोस्त का चुपके से फोन ले लेना, सेटिंग में जाकर भाषा बदल देना, आवाज बदलकर फोन पर तंग करना, नाश्ते में बिस्किट में क्रीम की जगह टूथपेस्ट लगा देना आदी।

वर्ष 1381,में इंग्लैंड के राजा रिचर्ड द्वितीय और बोहेमिया की रानी ने सगाई का ऐलान किया, लेकिन इसकी तारीख तय थी, 32 मार्च, 1381,यह खबर सुनकर लोग बहुत खुश हुए, लेकिन आमंत्रित मेहमानों को जल्द ही अहसास हुआ। कि 32 मार्च, की तारीख ही नहीं होती है। तभी से 32 मार्च यानी 1 अप्रैल को मूर्ख दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। कुछ देशों में 1 अप्रैल को मूर्ख दिवस मनाने की शुरुआत 1392 से मानी जाती है। परंतु ज्ञात हुआ कि पहली बार मूर्ख दिवस मनाने का जो किस्सा मिला वह 640 वर्ष से भी पहले का था।

कुछ कहानियों के अनुसार अप्रैल फूल डे मनाने का सिलसिला 1582 में फ्रांस में शुरू हुआ था जिस दौरान चार्ल्स ने रोमन कैलेंडर की शुरुआत की थी।

इस तरह हर कोई परस्पर अपने मित्रों, रिश्तेदारों और बॉस को भी मूर्ख बनाने का प्रयास नये-नये आइडिया से करते रहते हैं। वहीं हर कोई मूर्ख बने से बचना भी चाहता है। स्मरण रहे कि इस दिन मिलने वाली किसी की सूचना या बात को गंभीरता से नहीं लेवे। इसके साथ ही बिना जांच पड़ताल के विश्वास नहीं करने में ही समझदारी होगी। अन्य दिनों की तरह इस दिन मूर्ख बना व्यक्ति नाराज या गुस्सा नही होता है यही इस दिन की सबसे बड़ी खासियत है।

कविता और काम का कोई गुरु नहीं होता

चूँकि कविता काव्य का ही भेद है इसलिए ये कविता प्रणयन के लिए भी आवश्यक हैं, किन्तु कविता अपने आप में एक अवतरण भी है। इसका अवतरण होना ही इसे विशेष बनाता है। विशेष होने से इसके हेतुओं में कुछ और भी है जिनकी चर्चा आवश्यक है। ऐसा स्वतः सभी को आभासित भी होता है। अतः यहाँ इसके हेतुओं पर चर्चा व कविता और काम के प्रणयन पर विचार करना इस आलेख का अभीष्ट है।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'
इन्दौर - म.प्र

काव्य-प्रणयन की सामर्थ्य उत्पन्न करने वाले साधनों को 'काव्य हेतु' या काव्य का कारण कहा जाता है। ये साधन ही कवि को काव्य-प्रणयन में सक्षम बनाते हैं। आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य या कविता के लिए प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास ये तीनों ही हेतु या कारण बताए गए हैं। ये तीनों एक साथ मौजूद होने पर ही काव्य का निर्माण होता है। कवि की प्रतिभा या शक्ति के अभाव में काव्य का प्रसार या अवतरण सम्भव नहीं है।

चूँकि कविता काव्य का ही भेद है इसलिए ये हेतु कविता प्रणयन के लिए भी आवश्यक हैं, किन्तु कविता अपने आप में एक अवतरण भी है। इसका अवतरण होना ही इसे विशेष बनाता है। विशेष होने से इसके हेतुओं में कुछ और भी है जिनकी चर्चा आवश्यक है। ऐसा स्वतः सभी को आभासित भी होता है। अतः यहाँ इसके हेतुओं पर चर्चा व कविता और काम के प्रणयन पर विचार करना इस आलेख का अभीष्ट है।

रचना के अवतरण की एक प्रक्रिया होती है। यह एक स्वाभाविक घटना होती है, जिसे अच्छे-अच्छे कवि भी नहीं जान पाते और घटना घट जाती है अर्थात रचना हो जाती है। रचना के अवतरण के उपरान्त कवि को जिस आनन्द की अनुभूति होती है, वह अनिर्वचनीय व वर्णनातीत होती है। अवतरण की यह प्रक्रिया जानबूझ कर न होकर कवि के मानस में अनायास और स्वाभाविक रूप से चलती रहती है। समाधिस्थ कवि की उपज होने से इसकी उत्पत्ति पर किसी तर्क की कहीं गुंजाइश ही नहीं होती साथ ही अवतरण की इस पूरी प्रक्रिया में गुरु की कहीं भी आवश्यकता महसूस ही नहीं होती।

आइए पहले भाव और विचार में मोटा अन्तर समझते हुए विषय को गति देते हैं। भाव तो सभी के हृदय में जन्म लेते हैं लेकिन आलम्बन के सहारे जब कवि के अन्तःकरण में बीज रूप भाव जन्म लेते हैं, तब कवि शनैः शनैः समाधि अवस्था में पहुँच जाता है और वह कल्पना लोक में भ्रमण करता है। जहाँ भावानुकूल होने पर वह परकाया प्रवेश भी कर सकता है। कवि मन की यही अवचेतन अवस्था भी होती है।

कल्पना लोक तो कल्पना लोक है, जहाँ शब्द शक्तियों व काव्य के बाह्य और आन्तरिक तत्त्वों के सहयोग से अकल्पनीय कविता का सृजन पल्लवित होकर अवतीर्ण होता है। यह अवतरण अत्यन्त क्लिष्ट होते हुए भी अति सहज व अनायास होता है। अतः कविता की रचना प्रक्रिया में समाधि और कल्पना को भी मैं कविता के हेतु मानता हूँ। इस तरह प्रतिभा, निपुणता, अभ्यास, समाधि और कल्पना को मिला कर कविता के कुल पाँच हेतु (कारण/साधन) बनते हैं।

ऊपर कह चुका हूँ कि अवतरित होने से कविता तर्क से परे हो जाती है। यों तो प्रकृति में कमल खिलता है और मनुष्य हँसता है लेकिन तर्क से परे होने के कारण कवि का कमल पुष्प प्रकृति के विपरीत हँस भी सकता है और मनुष्य खिलखिला सकता है। इस पर कोई आपत्ति नहीं लेता क्योंकि जब इसकी व्याख्या की जाती है तब स्पष्ट किया जाता है कि कवि का आशय कमल के खिलने और मनुष्य के हँसने से ही है। वहीं विचार मस्तिष्क में सतत् चलने वाली प्रक्रिया की उपज होते हैं। मस्तिष्क का विषय होने से हर विचार तर्क की कसौटी पर तुला हुआ होता है। मस्तिष्क में हर विचार को तर्क शक्तियों के माध्यम से होकर गुजरना पड़ता है।

दूसरी बात यह है कि विचार में प्रायः अभिधा शब्द शक्ति प्रधान होती है। यद्यपि यह जरूरी शर्त नहीं है। अन्य शब्द शक्तियाँ भी अपना कार्य करतीं हैं लेकिन विचार में कुछ भी लपेटने से दूसरी शब्द शक्तियों का बोलबाला होने का खतरा रहता है, जिससे विचार का आशय बदल भी सकता है। अतः इसकी तार्किक स्थिरता में परिवर्तन की कोई गुंजाइश कम ही होती है। विचार को तर्कानुशासन की कसौटी पर कसे जाने के कारण कमल पुष्प हँस नहीं पाता, उसे खिलना ही पड़ेगा। मनुष्य खिलखिला नहीं सकता उसे हँसना ही पड़ेगा। तर्क से विचारों की पुष्टि होने के कारण कोई

विचार विषाद जन्य भी हो सकता है जहाँ आनन्द की प्राप्ति न हो। इसमें ज्ञान की विशेष आवश्यकता होती है।

अपवाद स्वरूप गद्य में कुछ आलेख कहानी आदि ऐसे आ सकते हैं, जिनमें भावों की प्रधानता हो सकती है, जैसे मुंशी प्रेमचन्द की कहानियाँ, ललित निबन्ध आदि, वहीं कविताएँ भी ऐसी हो सकतीं जिनमें भावों की शून्यता हो और विचारों की प्रधानता हो जैसे आयुर्वेद में लिखे गए श्लोक आदि। इनमें औषधि और रोगों से सम्बन्धित कथ्य रहेगा। इनमें भावों से भरी कल्पना को स्थापित नहीं किया जा सकता अतः कविता के दर्शन ही नहीं होंते। इतना सब कुछ होते हुए भी अनुभव के आधार पर विचार और भाव का अन्तर समझ में आ जाता है।

इसे अन्य उदाहरण से भी समझते हैं जैसे उन्हत्तर सत्तर इकहत्तर बहत्तर तिहत्तर चुहत्तर पचत्तर छियत्तर सतत्तर अठत्तर इसमें लय भी है तुक भी है तान भी है क्रम भी है सार्थकता भी है। लेकिन यह भाव भरी कविता नहीं है वहीं दूसरा उदाहरण देता हूँ।

'बात बात में रात सखि,गई पिया सों रीस।
त्रेसठ से तेतिस भई,तेतिस से छत्तीस।।'

इस दोहे में वे ही अंक अर्थ के ऐसे विस्फोटक बन गए हैं जैसे ध्वनि काव्य में स्फोट होता है।

निश्चय ही काव्य कर्म बहुत कठिन साधना है किन्तु आश्चर्य ही है कि कवि मन में इस जटिल कविता का सहज ही अवतरण होता है। यह कवि को मिला ईश्वरीय वरदान है। इस वरदान के बल पर एक समर्थ कवि गहरी अथवा उथली बात भी आसानी से कह लेता है। जिस कठिन बात को बड़े-बड़े विद्वान् नहीं कह पाते हैं उसे एक कवि छोटी सी रचना के द्वारा कह जाता है। इतना ही नहीं उसे कालजई बना देता है और एक दीर्घ अन्तराल के बाद कवि स्वयं की रचना पर भी विस्मित होते हुए आश्चर्य व्यक्त कर सोचने लगता है कि यह मैंने कैसे और कब लिख दिया?

शाब्दिक और व्याकरण की दृष्टि से देखें तो संस्कृत के तीन शब्द ऐसे हैं जो काम और कविता के लिए प्रयुक्त होते हैं। प्रणय,प्रणयन और प्रणीत तीनों में पहला और दूसरा शब्द काम के प्रबोधन के लिए व दूसरा और तीसरा शब्द काव्य रचना के लिए प्रयुक्त होता है। प्रणय में प्र उपसर्ग है नी धातु है अच् प्रत्यय है, वहीं प्रणयन में प्र उपसर्ग है नी धातु है ल्युट् प्रत्यय है तो प्रणीत में प्र उपसर्ग है नी धातु है क्त प्रत्यय है। इन शब्दों में कविता और काम दोनों के लिए प्रयुक्त यहाँ एक ही धातु है 'नी'। नी धातु के कई अर्थों में एक अर्थ लाना भी है। लाने का अभिप्राय रचना लाने से भी है और परिणय बन्धन से भी। दोनों में ही नव सृजन को लाया जाता है।

अवतरण है तो यह कवि के लिए नैसर्गिक है। नैसर्गिक क्रियाओं के लिए गुरु की आवश्यकता नहीं होती। जैसे शरीर से पसीना निकलना एक नैसर्गिक क्रिया है इसमें गुरु की आवश्यकता नहीं होती, वह स्वतः निकलता है। काम भी नैसर्गिक है, वह भी स्वतः उद्भूत होता है। इसे भी सिखाया नहीं जाता। अल्प बुद्ध पशुओं की वृत्तियों से इसे और भी आसानी से समझा जा सकता है। दोनों ही स्वाभाविक प्रक्रियाएँ हैं इसलिए प्रणय और प्रणयन में गुरु की आवश्यकता नहीं है। अतः स्पष्ट है कि कविता और काम का कोई गुरु नहीं हो सकता।

अब आपके मन में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कविता का कोई गुरु नहीं होता है तो कवियों में गुरु परम्परा तो बहुत प्राचीन है फिर गुरु किसलिए ? इसका उत्तर यह है कि अवतरण का कोई गुरु नहीं होता लेकिन जिस प्रकार प्रसूता की कोख से बालक के जन्म लेने पर डॉक्टर की निगरानी में नर्सों या घर पर दाई आदि के द्वारा नव प्रसूत बालक के शरीर का शोधन किया जाता है, उसे स्वस्थ और जीवित रखने के लिए उपाय बताए जाते हैं।

ठीक वैसे ही कवि की हृदय पेटी से कविता का अवतरण तो होता है लेकिन अवतरित होने पर उसका भी श्रृंगार किया जाता है, छन्द आदि अनुशासन की दृष्टि से अवतरण में भी कई दोष हो सकते हैं जो भावगत अथवा शिल्पगत हो सकते हैं जिनका शोधन किया जाना आवश्यक होता है। जिन्हें कवि अपनी क्षमता से दूर करता तो है किन्तु अज्ञानता बस उन्हें समग्रता से दूर नहीं कर पाता है। ऐसे में आवश्यकता होती है एक सफल मार्गदर्शक अथवा गुरु की, जो हर दोष का हरण कर उसे परिमार्जित और संशोधित करा दे।

बाद में कवि को भी उसे सँवारने के लिए कला सीखनी पड़ती है। स्वयं को कविता का समीक्षक होना पड़ता है। यह कला सतत् अभ्यास और दीर्घ अनुभव से आती है किन्तु उसमें सन्देह भी रहता ही है। इसलिए कवि के लिए काव्य शिल्प में पारंगत गुरुओं की आवश्यकता होती है। कारण छन्द साधना का अत्यन्त जटिल होना भी है। कलागत शिल्प के सौन्दर्य की आभा को निखारने की विद्या मात्र एक गुरु ही दे सकता है क्योंकि कविताओं में उसके बाह्य और आन्तरिक तत्वों व छन्दानुशासन को बचाए रखना रंग और रूप से कविता के आवरण को बचाए रखना होता है।

ईश्वर ने संसार को लयबद्ध किया है। कवि काव्य के द्वारा समाज को लयबद्ध करता है। वह हास्य और उपहास का माद्दा रखता है तो श्रृंगार से लेकर वीभत्स तक के कथ्य में भी सभी को आनन्द देता है। अपनी कल्याणकारी और सन्देश परक रचनाओं से मानवता में नैतिकता का संचरण करता है वहीं उसे सकल सृष्टि के स्वास्थ्य की चिन्ता करनी होती है। इसीलिए हम कह सकते हैं कविता के शिल्प के स्वास्थ्य के लिए गुरु आवश्यक भी है।

40 के बाद संतुलित आहार एवं नियमित योग का साथ

मुकेश कुमार सिंह
योगाचार्य

योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने की विधि नहीं, बल्कि आत्मा, मन और शरीर के संतुलन का माध्यम है। भारत के ऋषि-मुनियों ने योग को आत्मा के परमात्मा से मिलन का मार्ग बताया, जिसमें ध्यान, प्राणायाम और आसन के माध्यम से चित्त की वृत्तियों को नियंत्रित किया जाता है। महर्षि पतंजलि ने अपने योगसूत्र में इसे 'चित्त वृत्ति निरोधः' कहा, जिसका अर्थ है मन की चंचलता पर नियंत्रण। योग के आठ अंग- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि-जीवन को शुद्ध और संतुलित बनाते हैं।

आज बढ़ती उम्र में हो रही बीमारिया आधुनिक जीवनशैली की देन है कि हर इंसान परेशान है। चाहे वह बड़ा हो या छोटा हो क्योंकि बड़े भी दिन-भर पैसा कमाने के लिए रात-दिन काम कर रहे है 12 घंटे बैठ कर कम्प्यूटर पर काम करना हो या रोज काम के लिए चार घंटे गाड़ी से आना-जाना पड़े, जीवनशैली को पूरा करने के लिए कार्य करते है जिसके कारण समय पर खाना और नाश्ता भी नहीं हो पाता है ज्यादा बैठा कर काम करने से भी कमर दर्द होने लगता है। आज अपने लिये कोई समय नहीं है बस हर समय काम चाहे आफिस हो या घर हो काम करना है इस व्यस्तता भरी जिंदगी में उसके जागने और सोने का भी कोई समय नहीं होता है और न ही खाने पीने का कोई सही समय। जहां जो मिला खा लिया और खान-पान संतुलित नहीं होने से पेट में समस्या होने से हमेशा हमारे अंदर बेचैनी सी बनी रहती है, क्योकि आजकल घर पर भी खाना बनाना बहुत मुश्किल हो रहा है और घर का खाना ज्यादा पंसद भी नहीं आता है।

आज घर के खाने को छोड़कर लोग ज्यादातर जंक फूड/फास्ट फूड खाना ज्यादा पसंद करते हैं। जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो रहे हैं जैसे मोटापा, तनाव, हृदय रोग, जोड़ो के दर्द और कमर दर्द की भी समस्या हो रही है। आहार नियमों के विपरीत भोजन करने वाले लोग भी अक्सर परेशान रहते है।

जंक फूड अक्सर खाने से हमारा शरीर शिथिल हो जाता है और हमारा शरीर हमेशा थका हुआ महसूस होता है। आज दवा की दुकान की संख्या दिन बा दिन बढ़ती जा रहीं है और हर दवा की दुकान पर भीड़ लगी रहती है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि कितने ज्यादा लोग बीमार हो रहे है और जितने ही अस्पताल है सब में भीड़ ही लगी रहती है। इससे बचने के लिए फास्ट फूड और जंक फूड को कम करें या खाने से बचें और घर का भोजन और मौसमी फल और मौसमी साग-सब्जी जरूर खायें कुछ समय प्रकृति

के साथ जरूर बिताये यह जीवन जीने की एक अलग खुशी देता है सुबह सूरज निकले से पहले उठे उगता सूरज एक नई ऊर्जा और नई प्रेरणा और एक सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है जिससे हमारा शरीर मजबूत होता है। कई सारे रोगों से लडने की शक्ति मिलती है। 40 के बाद बढ़ती बीमारियों से बचने के लिए कुछ सरल योग एवं प्राणायाम इस प्रकार है।

ताड़ासन

ताड़ शब्द का अर्थ है ताड़ या खजूर का

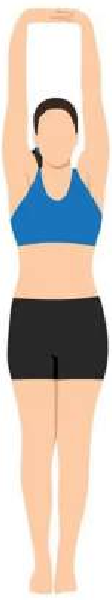

पेड़। इस आसन के अभ्यास से स्थायित्व व शारीरिक दृढ़ता प्राप्त होती है यह खड़े होकर किये जाने वाले सभी आसनों का आधार है। इसलिए ताड़ासन को नियमित करना चाहिए।

अभ्यास की विधि

- सर्वप्रथम पैरों के बल खड़े हो जाएं तथा दोनों पैरों के बीच दो इंच की दूरी रखें।
- सांस अंदर ले हाथों को सामने की ओर कंधो के स्तर से तक उठाए।
- दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में एक-दूसरे में फसाएं तथा हथेलियों को बाहर की ओर श्वास भरते हुए दोनों भुजाओं को सिर से ऊपर उठाएं।
- भुजाओं को ऊपर ले जाने के साथ-साथ पैर की एड़ियों को जमीन से ऊपर उठाएं और पैर की अंगुलियों पर अपना संतुलन बनाएं। इस स्थिति में अपनी क्षमतानुसार रूकें रहें।
- एड़ियों को वापस जमीन पर ले आएं।
- श्वास को छोड़ते हुए हाथ की अंगुलियों को अलग-अलग करें ,भुजाओं को वापस लाएं , इसके बाद प्रारंभिक स्थिति में वापस आ जाएं।

शारीरिक लाभ

इस आसन के नियमित अभ्यास से शरीर में स्थिरता आती है। यह मेरूदण्ड से सम्बन्धित नाड़ियों के रक्त संचय को ठीक करने में भी सहायक है। शरीर की ऊँचाई बढ़ती है।

मानसिक लाभ

व्यक्ति तनाव रहित होता है उसकी एकाग्रता बढ़ती है। मानसिक शांति मिलती है।

सावधानियां एवं सीमाएं

जिन व्यक्तियों को आर्थराइटिस तथा चक्कर आने जैसी समस्याएं हो उन्हें एड़ियों पर उठने पर प्रयास नहीं करना चाहिए। अन्तिम स्थिति में रूकने की समय सीमा अपने सामथ्र्यानुसार रखनी चाहिए।

वृक्षासन

वृक्ष शब्द का अर्थ है पेड। इस आसन की अंतिम अवस्था में शारीरिक स्थिति एक पेड के आकार में बनती है इसलिए इस आसन का नाम वृक्षासन है।

- वृक्षासन का अभ्यास करते समय सीधे खडे हो जाए दोनों पैरों के बीच में 2 इंच का अंतर बनाये।
- सांस को शरीर के बाहर छोडते हुए दांए पैर को ऊपर रखें एडी मूलाधार क्षेत्र से मिली होनी चाहिए।
- बिल्कुल समाने की तरफ देखें सीधी नजर सही संतुलन बनाने में अत्यन्त सहायक है।
- सांस को अंदर लेते हुए दोनों हाथों को ऊपर की ओर ले जाकर नमस्कार मुद्रा में जोडे। और शरीर में किसी प्रकार का तनाव न महसूस करें।
- इस स्थिति में 10 से 30 सेकेंड या अपनी क्षमतानुसार रूके रहें।
- सांसो को बाहर छोडते हुए दोनो हाथों को नीचे लाये।
- शरीर को शिथिल करते हुए इस आसन

को दूसरे पैर से करें।
- इस आसन का अभ्यास कम से कम तीन बार दोनों पैरों पर करें या अपनी क्षमतानुसार करे।

वृक्षासन के लाभः

- यह आसन तंत्रिका से संबंधित स्नायुओं के समन्वय और पैरों को मजबूती प्रदान करता है एवं संतुलन बनाने में सहायक है।
- एकाग्रता बढाने में सहायक है।
- यह आसन मस्तिष्क में स्थितिरता और संतुलन लाता है।

सावधानियांः

आर्थराइटिस , माइग्रेन ,उच्च रक्त चाप से पीडित है या चक्कर आने पर इस आसन को न करें।

सेतुबंधासन

सेतुबंधासन शब्द का अर्थ सेतु का निर्माण है। इस आसन में शरीर की आकृति ऐक सेतु की अवस्था में रहती है इसलिए इसका नाम

सेतुबंधासन नाम दिया गया है।

अभ्यास विधि

- दोनों पैरों को घुटनों से मोड़ते हुए एड़ियों को नितंबों के पास लाएं।
- हाथों से पैर के टखनों को मजबूती से पकड़े और घुटने एवं पैरों को एक सीध में रखें।
- श्वास को अंदर खींचते हुए धीरे-धीरे अपने नितंब एवं धड को ऊपर की ओर उठाएं और पुलनुमा आकृति बनाएं।
- अपनी क्षमतानुसार रूकें और सांस लेते रहें। स्वास छोडते हुए धीरे -धीरे अपनी मूल अवस्था में आएं और शवासन में लेटकर शरीर को शिथिल छोड़ दें। कम से कम यह अभ्यास तीन बार करें।

लाभ

- अवसाद एवं चिता से मुक्त करता है कमर के निचले हिस्से की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।
- इसके नियमित अभ्यास से पाचन क्षमता बढ़ती है। पाचन तंत्र में सुधार होने से शरीर स्वस्थ रहता है घुटनों के लिए भी यह अच्छा होता है।
- उदर के अंगो में कसावट लाता है तथा उदर के समस्त रोगों में हितकारी है। जठराग्नि को तीव्र बनाता है।
- पेट में गैस बनने की शिकायत दूर कर शरीर को स्फूर्तिवान् तथा आकर्षक बनाता है।

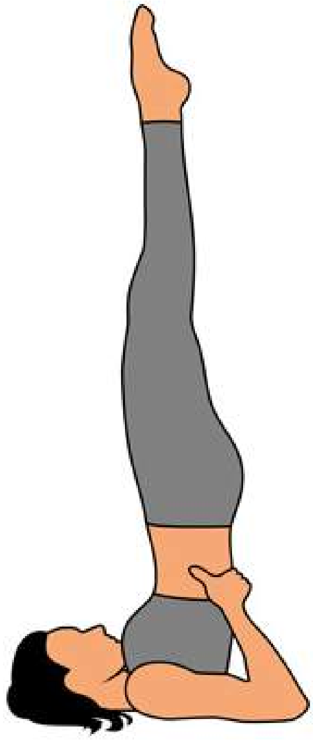

सावधानियां

- अल्सर और हार्निया से ग्रसित व्यक्तियों को इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

त्रिकोणासन

त्रिकोणासन शब्द का अर्थ त्रि अर्थात तीन कोणों वाला आसन है चूंकि आसन के अभ्यास के समय धड़, बाहुओं एवं पैरों से बनी आकृति त्रिभुज के सदृश्य दिखाई देती है, इसलिए इस अभ्यास को त्रिकोणासन कहते है।

अभ्यास विधि

- त्रिकोणासन के अभ्यास के समय दोनों पैरों को 3 फुट तक फैलाकर आराम से खड़ा होना चाहिए।
- दोनों हाथों को बगल से कंधों के स्तर तक धीरे -धीरे उठाना चाहिए।
- श्वास को शरीर से बाहर छोड़ते हुए धीरे -धीरे दाई तरफ झुकना चाहिए। झुकने के बाद दांए हाथ की उंगलियों को पीछे की ओर रखना चाहिए।
- बायें हाथ को सीधे ऊपर की ओर रखते हुए दायें हाथ की सीध में लाना चाहिए। तत्पश्चात बाई हथेली को आगे की ओर लाना चाहिए।
- सिर को घुमाते हुए बाएं हाथ की बीच वाली अगुंली को देखना चाहिए।
- समान्य श्वास लेते हुए इस आसन में अपनी क्षमतानुसार रूकना चाहिए।
- श्वास शरीर के अंदर लेते हुए प्रारंभिक अवस्था में वापस आ जाय।
- इस आसन को दूसरी ओर भी करना चाहिए।

लाभ

मेरूदण्ड को लचीला बनाता है , पिण्डली, जाघों और कटि भाग की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है तथा फेफड़ो की कार्यक्षमता को बढ़ाता है।

सावधानियां एवं सीमाएं

- स्लिप्ड डिस्क, साइटिका एवं उदर में किसी प्रकार की सर्जरी होने के बाद इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।
- शरीर की क्षमता तथा सीमा से परे जाकर यह अभ्यास न करें तथा शरीर को सीमा से अधिक न खीचें।
- अभ्यास करते समय यदि आप जमीन को न छू सकें तो घुटनों को छूनों का प्रयास करें। कभी भी जबरजस्ती शरीर के साथ न करें। क्षमतानुसार ही नीचे झुकें।

सर्वांगासन

इस आसन को करने से शरीर के सभी अंगो को लाभ मिलता है इसलिए इस आसन

को सर्वांगासन कहा जाता है।

अभ्यास की विधि

- इस आसन को करने के लिए सबसे पहले पीठ के बल लेट जाएं। एक साथ अपने पैरों कूल्हे और फिर कमर को उठाऍं। शरीर का पूरा भार आपके कन्धों पर आ जाये। अपनी पीठ से अपने हाथों से सहारा दें।
- अपनी दोनों कोहनियो को पास में लें आयें और हाथों को पीठ के साथ रखें ,कन्धों को सहारा देते रहें। कोहनियों को जमीन पर दबाते हुए और दोनों हाथों को कमर पर रखते हुए अपनी कमर और पैरों को सीधा रखें। शरीर को सीधा करें शरीर का पूरा भार आपके दोनों कन्धों व हाथों के ऊपरी हिस्से पर होना चाहिए न कि आपके सिर और गर्दन पर। अपनी क्षमतानुसार इस आसन में रूके रहें।
- अपने दोनों पैरों को सीधा व मजबूत रखें। अपने पैरों की उँगलियों को नाक की सीध में लें आयें। अपनी गर्दन पर ध्यान दें उसको जमीन पर न दबाएं गर्दन को मजबूत रखें और मासपेशियों को सिकोड लें अपनी छाती को ठोडी से लगा लें। गर्दन में दर्द महसूस हो रहा है तो आसन से धीरे -धीरे बाहर आ जाय।
- लंबी गहरी सांस लें जितनी देर इस आसन में रह सकते है अपनी क्षमतानुसार बने रहे।
- आसन से बाहर आने के लिए घुटनों को धीरे से माथे के पास लें कर आयें हाथों को जमीन पर रखें। बिना सिर को उठाये धीरे-धीरे कमर को नीचे लेकर आये तथा दोनों पैरों को जमीन पर लें जाए। और पैरों को सीध कर लेट जाए एक लम्बी गहरी सांस ले कुछ देर विश्राम करें।

लाभ –

- इस आसन को नियमित करने से रक्त-संचार की दिशा परिवर्तित होकर रक्त आसानी से हृदय की ओर दौडने लगता है। इस आसन से हृदय रोगियों को विशेष लाभ व आराम मिलता है।
- हाथों व कन्धों को मजबूत बनाता है और पीठ को अधिक लचीला बनाता है।
- कब्ज से राहत देता है और पाचन क्रिया को सक्रिय बनाता है।
- महिलाओं और पुरूषों के प्रजनन अंगों को स्वस्थ ,सबल व विकसित करता है।
- मोटापा, बंध्यापन, प्रदर आदि रोगों को दूर कर महिलाओं को स्वस्थ व सुडौल बनाता है।

सावधानियां

गर्भावस्था ,माहवारी ,उच्च रक्तचाप हृदय रोग में योग विशेषज्ञ की देखरेख में ही करें। अन्यथा न करें।

भुजंगासन

भुजंग का अर्थ सांप अथवा नाग है। इस आसन में शरीर की आकृति सांप के फन की तरह ऊपर उठती है जिसके कारण इस आसन को भुजंगासन कहते है।

अभ्यास विधि

- सर्वप्रथम पेट के बल लेट जाएं और अपने दोंनो हाथों पर सिर टिकाते हुए शिथिल रखें।
- अब अपने दोनों पैरों को आपस में मिला लें।
- हाथों को शरीर के ठीक बगल में ऐसा रखें कि हथेलियां और कोहनियां जमीन पर टिके रहें।
- श्वास को धीरे-धीरे अंदर खीचते हुए ठुडडी और नाभि क्षेत्र तक शरीर को ऊपर उठाएं। अपनी क्षमतानुसार होल्ड करें। पुनः वापस लौटते हुए ललाट को जमीन पर टिकाएं।
- यह सरल भुजंगासन कहा जाता है।
- हथेलियों को वक्ष के बगल में रखें और कोहनियां ऊपर की ओर उठी हुई होनी चाहिए।
- धीरे-धीरे श्वास को भरते हुए ठुडडी एवं नाभि क्षेत्र तक के शरीर को ऊपर उठाएं रखें।
- पुनः श्वास को बाहर छोड़ते हुए ललाट को जमीन पर शिथिल होने दें और हथेलियों के ऊपर सिर तथा पैर को फैलाकर शरीर को शिथिल करें।

इस अभ्यास को भुजंगासन कहा जाता है।

लाभ

- तनाव प्रबंधन के लिए सर्वश्रेष्ठ आसन है।
- पीठ दर्द और श्वास नली से संबंधित समस्याओं को दूर करता है।
- यकृत (लीवर) के सभी रोगों को दूर कर रक्त बनाने की प्रक्रिया तेज करता है।
- भोजन के बाद गैस का ऊपर चढ़ना, डकार आने पर राहत मिलना उदराध्यान तथा पाचन की कमियॉ आदि रोगों को दूर कर उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करता है।

सावधानियां

- जो लोग हर्निया, अल्सर से पीडित हो उन्हें इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

बसंत की आहट में फागुन का सन्देश

अवनीश कुमार गुप्ता

साहित्यकार, स्वतंत्र स्तंभकार और शोधार्थी

धार्मिक संदर्भों में फागुन को शिव और शक्ति के मिलन का प्रतीक माना जाता है। महाशिवरात्रि इसी मास में आती है, जो पुरुष और प्रकृति के सामंजस्य का प्रतीक है। स्कंद पुराण, पद्म पुराण और शिव महापुराण में फागुन मास की महिमा का उल्लेख है, जिसमें इसे मोक्ष प्रदायक और आत्मशुद्धि का अवसर बताया गया है। होलिका दहन जहां असत् पर सत् की विजय का प्रतीक है, वहीं धूलिवंदन और रंगपर्व मनुष्य की सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना को जाग्रत करने का माध्यम है।

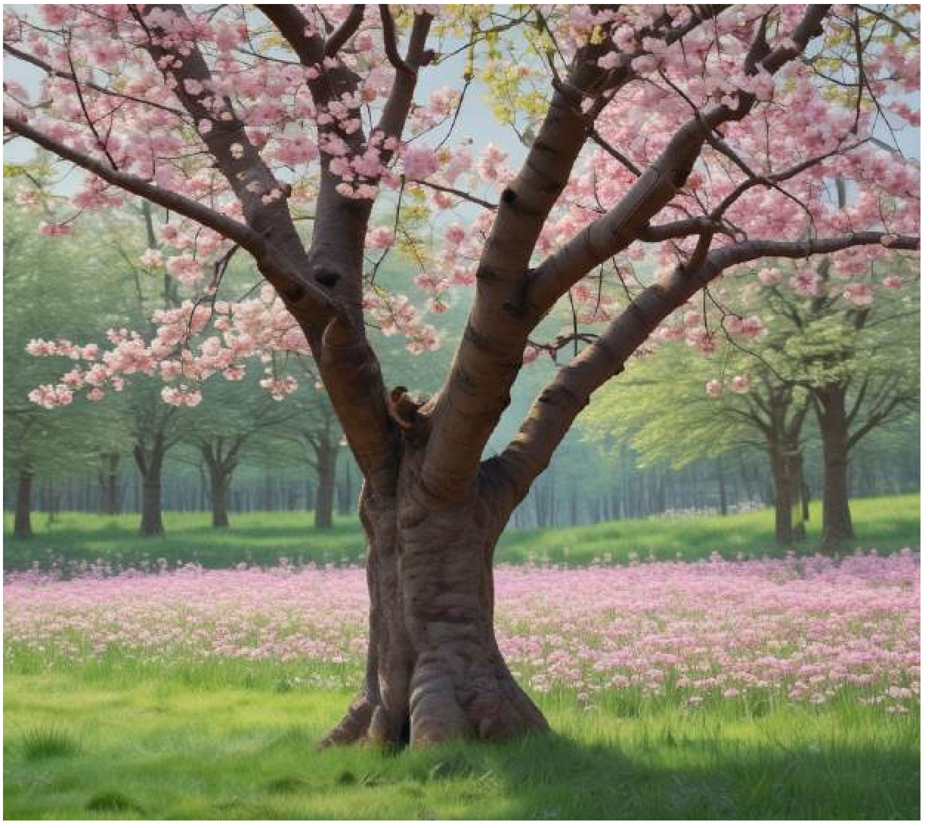

फागुन भारतीय संस्कृति का वह ऋतु संधिकाल है, जिसमें शीत की स्थूलता विलीन होती है और वसंत की ललित आभा प्रकट होती है। यह केवल ऋतु परिवर्तन का संकेत नहीं, बल्कि मनुष्य के मानसिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक स्तर पर एक नवचेतना का आवाहन है। धर्मशास्त्रों में फागुन को दिव्य आनंद की ऋतु कहा गया है, जिसमें मानव मन प्रकृति के उन्मुक्त उल्लास के साथ जुड़कर चेतना के उच्चतर स्तर तक पहुँचता है। वसंतोत्सव केवल बाह्य जगत में परिवर्तनों का पर्याय नहीं, यह अंतःकरण के स्फुरण और मानव चेतना के नवसृजन का काल भी है। यही कारण है कि फागुन को धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से गहन महत्त्व प्राप्त है।

धार्मिक संदर्भों में फागुन को शिव और शक्ति के मिलन का प्रतीक माना जाता है। महाशिवरात्रि इसी मास में आती है, जो पुरुष और प्रकृति के सामंजस्य का प्रतीक है। स्कंद पुराण, पद्म पुराण और शिव महापुराण में फागुन मास की महिमा का उल्लेख है, जिसमें इसे मोक्ष प्रदायक और आत्मशुद्धि का अवसर बताया गया है। होलिका दहन जहां असत् पर सत् की विजय का प्रतीक है, वहीं धूलिवंदन और रंगपर्व मनुष्य की सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना को जाग्रत करने का माध्यम

है। भगवान कृष्ण के ब्रज में फागुन का विशेष महत्त्व है, जहाँ रासलीला और फूलों की होली, भक्त और भगवान के प्रेम का प्रतीक बनती है। यही कारण है कि भारतीय संतों और महापुरुषों ने फागुन को अध्यात्म, साधना और भक्ति का श्रेष्ठ काल माना है।

वैज्ञानिक दृष्टि से फागुन मानव स्वास्थ्य और प्रकृति के चक्र के मध्य संतुलन स्थापित करने वाला महीना है। इस समय शीत ऋतु की जड़ता समाप्त होकर ग्रीष्म के उष्ण प्रवाह की भूमिका बनती है। शरीर में जमे हुए कफ, वात और पित्त संतुलित होते हैं, जिससे नई ऊर्जा और स्फूर्ति का संचार होता है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि इस समय शरीर में सेरोटोनिन और डोपामिन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर अधिक सक्रिय हो जाते हैं, जिससे मनोविज्ञान में आनंद और उत्साह की वृद्धि होती है।

होली में प्रयुक्त प्राकृतिक रंगों का शरीर और मन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। हल्दी, टेसू, गुलाल और चंदन जैसे पारंपरिक रंग त्वचा के लिए लाभदायक होते हैं और फंगल संक्रमण से बचाते हैं। होलिका दहन से वातावरण में उपस्थित हानिकारक जीवाणु नष्ट होते हैं, जिससे स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण भारत में होलिका की अग्नि से गेंहू, जौ और चने की बालियों को सेंककर खाने की परंपरा इसी वैज्ञानिक आधार पर विकसित हुई थी, क्योंकि यह नए अनाज के पाचन के लिए शरीर को तैयार करता है।

परंतु आधुनिकता के अंधानुकरण ने इस सांस्कृतिक और वैज्ञानिक महत्त्व को धूमिल कर दिया है। आज का तथाकथित विकसित समाज फागुन के रंगों को केवल व्यर्थ मनोरंजन और शोरगुल का साधन मानने लगा है। जिन प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कभी स्वास्थ्यवर्धक होता था, उनकी जगह रासायनिक रंगों ने ले ली है, जो त्वचा और नेत्रों के लिए हानिकारक हैं। जहां कभी होली

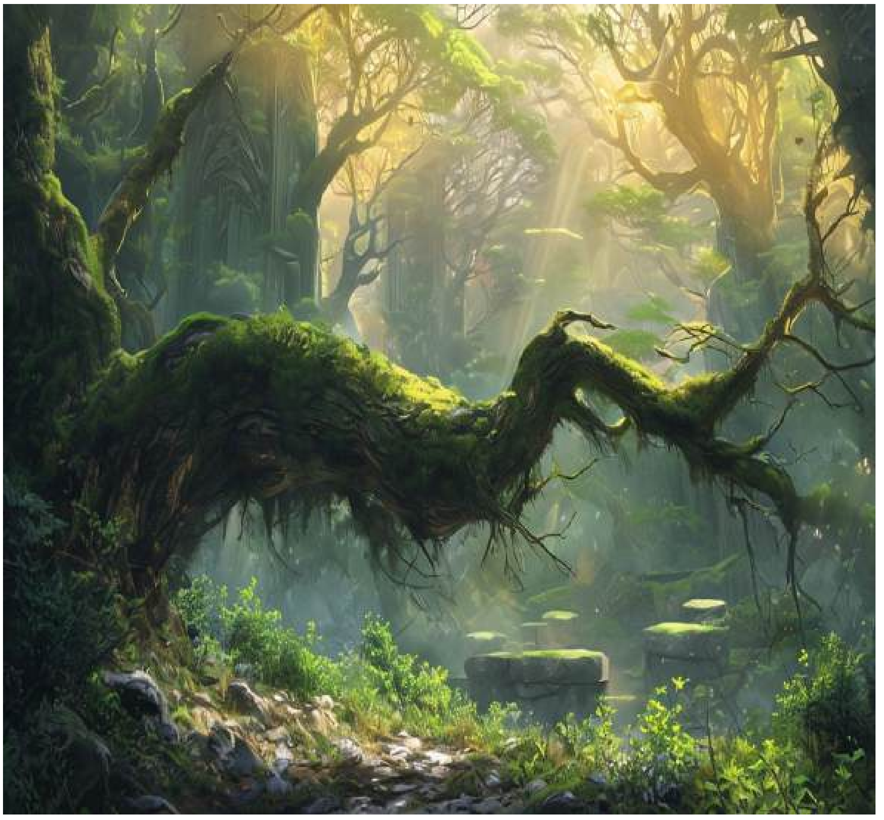

मिलन सामाजिक समरसता का माध्यम था, वहाँ आज व्यक्तिगत अहंकार और बाजारवाद ने इसे मात्र व्यापारिक उत्सव बना दिया है।

वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति ने हमारे परंपरागत उत्सवों की मूल आत्मा को ही विकृत कर दिया है। आज के तथाकथित बौद्धिक वर्ग के लिए फागुन मात्र एक पारंपरिक प्रथा है, जिसकी वैज्ञानिक और सांस्कृतिक गहराइयों में उतरने की रुचि और क्षमता अब नहीं बची। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमने अपनी ही परंपराओं को सतही समझकर उन्हें त्यागने का प्रयास किया, जबकि पाश्चात्य जगत इन्हीं परंपराओं से प्रेरणा लेकर अपने समाज को स्वस्थ और संतुलित बनाने में जुटा हुआ है।

ऐसे समय में, जब समाज अपनी ही परंपराओं के प्रति उदासीन होता जा रहा है, फागुन का सही मर्म समझने की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। यह मात्र ऋतु परिवर्तन का सूचक नहीं, बल्कि मनुष्य के आंतरिक चेतना का उद्घाटन भी है। यह हमें सिखाता है कि प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाना ही जीवन का आधार है। धार्मिक दृष्टि से यह आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक साधना का समय है, वैज्ञानिक दृष्टि से यह शरीर और मन के संतुलन का अवसर है, और सामाजिक दृष्टि से यह बंधुत्व, प्रेम और समरसता को पुनर्जीवित करने का संदेश देता है।

फागुन का यह पावन पर्व हमें अपनी जड़ों से जोड़कर, एक स्वस्थ, संतुलित और आनंदमय जीवन की ओर ले जाने वाला मार्ग प्रशस्त करता है। इसे मात्र एक परंपरा समझकर उपेक्षित करना अपने ही सांस्कृतिक अस्तित्व को खो देने जैसा होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी परंपराओं को आधुनिकता के साथ समायोजित करें, न कि उन्हें विकृत कर उनकी मूल आत्मा को नष्ट करें। यही सच्चे अर्थों में फागुन का धार्मिक और वैज्ञानिक संदेश है।

क्या सच में कम हुआ है बेटे और बेटी का अंतर?

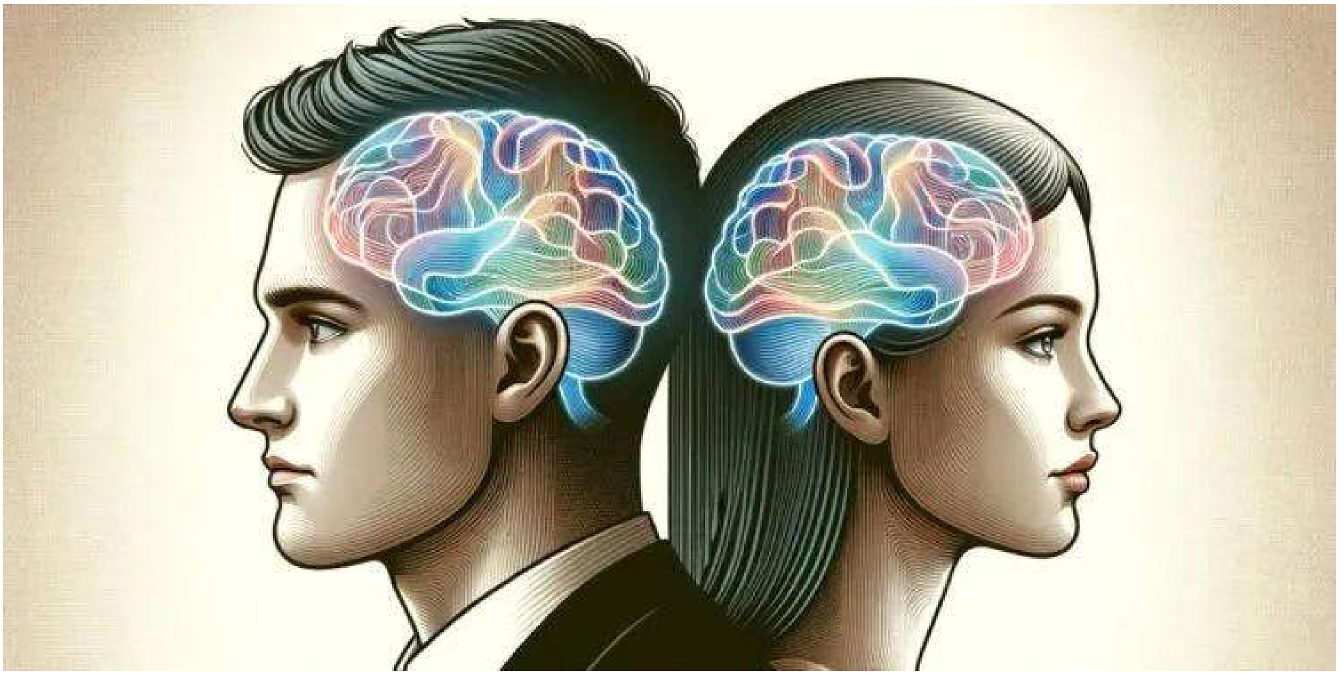

सुषमा त्रिपाठी

प्रत्येक बच्चा अलग होता है। उसके व्यक्तित्व और उसके रुचियां का सदैव पोषण और ख्याल करना चाहिए। बेटियां समाज व राष्ट्र की अमूल्य धरोहर एवं जननी है। एक संस्कृति और संस्कारवान समाज व राष्ट्र के निर्माण के लिए बेटियों को पढ़ना हो उनकी सुरक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। बेटियों के बिना समाज व पुरुष का अस्तित्व नहीं है।

कुछ माता-पिता का सकते हैं कि बेटे अधिक सक्रिय होते हैं और उन्हें बहुत अधिक शारीरिक गतिविधियों की आवश्यकता होती है जबकि बेटियां रचनात्मक खेल भावनात्मक अभिव्यक्ति से अधिक सक्रिय होती है प्रत्येक बच्चा अलग होता है। उसके व्यक्तित्व और उसके रुचियां का सदैव पोषण और ख्याल करना चाहिए। बेटियां समाज व राष्ट्र की अमूल्य धरोहर एवं जननी है। एक संस्कृति और संस्कारवान समाज व राष्ट्र के निर्माण के लिए बेटियों को पढ़ना हो उनकी सुरक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। बेटियों के बिना समाज व पुरुष का अस्तित्व नहीं है।

पुत्र का स्त्रीलिंग पुत्री होता है और पुत्री का पुलिंग पुत्र होता है सनातन धर्म में दोनों के लिए और एक-एक शब्द है। पुत्र का ईश्वर का फल और पुत्री का कन्या ईश्वर की कृपा कहा जाता है कृपया फल से भी श्रेष्ठ होती है। आउटडोर खेल पसंद करते हैं जबकि बेटियां हम तौर पर अधिक शांत गतिविधियां पसंद करती हैं। आक्रामकता शारीरिक आक्रामकता उदाहरण के लिए इधर-उधर दौड़ना भागना आमतौर पर लड़कों के लिए सामान्य बात होती है। यह लड़कियों के लिए बहुत कम देखा जाता है वे शारीरिक आक्रामकता के बजाय शब्दों के आक्रामकता अधिक रखती हैं।

हमारे समाज में लड़कियों की शिक्षा का महत्व

लड़कियों की शिक्षा का बहुत ही ज्यादा महत्व हो गया है। यह लैंगिक समानता के

बढ़ाओ के लिए और भी जरूरी है समाज के विकास में समृद्ध मिलती है। शिक्षित लड़कियां अपने परिवार समाज के लिए ज्यादा फायदेमंद साबित होती हैं। शिक्षा जीवन जीने का की रक्षा में शिक्षा का बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है शिक्षा महिलाओं के जीवन के मार्ग को चुनने का अधिकार देने का पहला कदम है। जिस पर वे आगे बढ़ते हैं महिला में कौशल सूचना प्रतिभा और आत्मविश्वास होता है जो कि उसे एक बेहतर मां कर्मचारी और देश का निवासी बनती है।

एक शिक्षित सुशोभित लड़की देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है शिक्षित महिला अपने भविष्य को सही आकार देने में अधिक सक्षम होती है। सर्वेक्षण के अनुसार केवल 60% लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त होती है और उच्च माध्यमिक शिक्षा मामले में 6% तक ही रह जाती है हम देश की महिलाओं को शिक्षित किए बिना एक विकसित राष्ट्र नहीं बना सकते हैं पहले के समय में लड़कियों की शिक्षा को कभी भी आवश्यक नहीं माना गया था लेकिन आज किस समय में बेटियों की पढ़ाई पर ध्यान दिया जाता है उसे भी महत्वपूर्ण समझा जाता है।

बेटी और बेटे के परवरिश में बड़ा अंतर

बेटी होना बेटे होने से अलग है पहले बेटियां पैदा होती थी तो लोग दुखी होते थे। मगर अब लगभग घरों में लोग बेटी होने पर भी बहुत खुशी मनाते हैं। नातिन मेरे घर पर भी मैंने दो-दो बार पार्टी बनाई लड्डू बांटे और पूरा परिवार खुश हुआ आज जब वह अपने पापा घर चली गई तो बहुत उदास हुए हम लोग हम अपने बच्चों से जो शब्द कहते हैं। वह उनकी आंतरिक आवाज बन जाती है अगर यह सच है तो हर माता-पिता का एक लक्ष्य एक ऐसा आंतरिक आवास बनाना होना चाहिए जो सशक्त उत्साह वर्धन हो और कभी भी सीमित या अपमानजनक ना हो इसलिए बेटा और बेटी दोनों के को बराबर का दर्जा दिया जाना चाहिए। कभी भी कोई भी भेदभाव नहीं होना चाहिए शायरी कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसे सिर्फ बेटियों से प्यार हो वैसे 60% तक माता-पिता के लिए बेटी और बेटा दोनों बराबर हैं। दोनों को एक ही स्कूल में दाखिला भी दिलाते हैं खिलते हैं खेलते हैं उनके साथ उठते बैठते हैं तैयारी तमाम तरीके से वह बच्चों के बीच के भेदभाव को अब खत्म कर चुके हैं।

ऐसे देखा जाए तो लड़के लड़कियों के व्यवहार में बहुत अंतर होता है लड़कियां दूसरों को देखकर बहुत कुछ सीख जाते हैं। वहीं लड़के निडर होते हैं लड़के लड़कियों की तुलना में ज्यादा चंचल होते हैं तो वहीं लड़कियों से ज्यादा संवेदनशील होती हैं।

बेटी का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए माता-पिता को उनकी सुंदरता की वजह समझदारी की तारीफ करनी चाहिए। लड़कियों को यह डर होता है कि कहीं कोई उनके अंदर कभी ना कभी कोई ना कोई कमी निकाल ही देगा इसलिए अपनी बेटी का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उसके दिमाग की तारीफ करनी चाहिए।

आमतौर पर देखा गया की लड़कियां पढ़ाई में लड़कों से ज्यादा तेज होती है लेकिन गणित जैसे क्षेत्र में लड़के आगे होते हैं। इसका यह कारण है की चीजों को समझने के लिए लड़कियों के दिमाग को भिन्न-भिन्न हिस्से चलते हैं जबकि लड़कों में यह प्रक्रिया ही अलग होती है पढ़ाई में कमजोर है और बेटी होशियार है तो दोनों में तुलना नहीं होनी चाहिए।

हर बच्चे की अपनी क्षमता कौशल पर्सनालिटी होती है। बच्चे को अपनी क्षमता के हिसाब से विकास करने देना चाहिए बात-बात पर टिकट नहीं करनी चाहिए लोग हमेशा एक ही बात कहते हैं की बेटियां तो पराजय धन होती हैं और बेटा जीवन यापन करता है घर का इकलौता बारिश होता है बेटा इसलिए पहले लोग बेटों का ज्यादा ध्यान रखते थे बेटियों की कम कदर होती थी बहुत से माता-पिता हमेशा चाहते हैं कि उनका पहला बच्चा बेटा ही होना चाहिए लड़का होगा तो खानदान का नाम रोशन होगा। लड़कियों की तो पराया धन होगा हम लड़की से पैसे नहीं ले सकते एक लड़का परिवार का नाम आगे बढ़ता है कर लेती हो परिवार छोड़ कर चली जाती है। लड़की से पैसे नहीं ले सकते आज के बदले हुए युग में हम एक क्रांतिकारी दुनिया में रह रहे हैं। हालांकि हमें समाज को अभी भी इन बदलावों के साथ ताजमहल बिठाना बाकी है।

हम अभी भी ऐसी दुनिया में जी रहे हैं यहां लड़कियों के प्रति पूर्वाग्रह है सबसे दुखद वाक्यांश जो मैंने कभी नहीं सुना है वह यह क्या यह एक लड़की है। यहां लड़की है मैं उन लोगों को जवाब देता हूं जो सोचते हैं की लड़कियां परिवार को बदनाम करती हैं जैसे देखा जाए तो हमारी बेटियां किसी से काम नहीं हम फील्ड में कम से कदम मिलाकर चल रही हैं।

हर प्रकार की नौकरियां कर रही है चाहे रात हो या दिन कोई पाबंदी नहीं लड़कियां भी अपनी मर्जी से अपना जीवन साथी चुन रही है। अपनी बात विभाग तरीके से रख रही है बिना किसी डर के सेवा में भी लड़की और महिलाओं का डायरेक्ट भर्ती हो रहा है। केवल नौकरी नहीं अपना बिजनेस भी कर रहे हैं। छोटी-छोटी बच्चियों को उनके माता-पिता पढ़ने के लिए बाहर भेज देते हैं छोटी उम्र में उन्हें स्कूटी मोबाइल में मिल जा रहा है दोस्तों के साथ पार्टी कर रहे हैं घूमने के लिए बाहर भी जा रहे हैं।

शादी जब मर्जी होती है तभी होती है कई बार तो यह भी होता है कि बहुत देर हो जाती है लेकिन वह आज के लिए आम बात है उनकी हर प्रकार की मंशा भी पूरी हो रही है चाहे वह कुछ भी हो कुल मिलाकर बेटा बेटियों का जो अंतर था अब काफी हद तक मिल चुका है।

माता-पिता भी पुरानी सोच से बाहर आकर अपनी बेटियों को भरपूर प्रवेश दे रहे हैं जिसकी वह हकदार हैं बेटियां उनको वह सम्मान दे रही है जिसके लिए वह लायक है सकते हैं कि बेटे बेटियों में देखा गया भेदभाव अब धीरे-धीरे मिटाने की ओर बढ़ रहा है।

हिमालय

भारत की है शान हिमालय।
शिखरों की है आन हिमालय।
बसे अनेक देश गोदी में
बहुराज्यों के प्राण हिमालय।

देव - संस्कृति का उद्गम है
आर्यों का प्रतिमान हिमालय।
वेद, उपनिषद. रामायण में
करता स्वस्तिक - गान हिमालय।

नदियाँ खेल रहीं आँगन में
खुश है पिता समान हिमालय।
गिरि कैलास दिव्य पूजित है
शिव का वासस्थान हिमालय।

माता पार्वती का मायका
शक्ति - पुञ्ज अभिज्ञान हिमालय।
हिन्दू, जैन,बौद्ध, सिक्खों का
आस्था - स्रोत विधान हिमालय।

विश्व की रुचिर अमूर्त धरोहर
औषधियों की खान हिमालय।
ब्रह्मकमल अति दिव्य सुमन को
देता जीवनदान हिमालय।

सूक्ष्म आत्माएँ बसें वहाँ पर
सिद्ध आश्रम पहचान हिमालय।
हृदय- क्षेत्र अध्यात्म केन्द्र है
करता पुण्य बखान हिमालय।

तपोभूमि, ऋषिभूमि अलौकिक
देवभूमि वरदान हिमालय।
स्वर्गारोहण मार्ग यहीं से
तपस्वियों का ध्यान हिमालय।

युगों-युगों से सँजो रखा है
ज्ञान और विज्ञान हिमालय।

भारत माँ के सिर किरीट - सा
शोभित महिमावान हिमालय।
भारत का अप्रतिम प्रहरी बन
है सगर्व विद्यमान हिमालय।

तपधारी शुचि सत्पात्रों को
देता परिनिर्वाण हिमालय।
विविध रहस्य अभी अनसुलझे
देवात्मा समान हिमालय।

एलियन, उड़नतश्तरी चर्चा
हिममानव आख्यान हिमालय।
आगत पीढ़ी का भविष्य है
संरक्षित वर्तमान हिमालय।

नैसर्गिक सुषमा अक्षुण्ण हो
चाह रहा अवधान हिमालय।
पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता
नित खोता मुस्कान हिमालय।

वैश्विक ताप बड़ा खतरा है
लगा रहा अनुमान हिमालय।

मानव ने ही स्वास्थ्य बिगाड़ा
सहता बहु व्यवधान हिमालय।
जल - आक्सीजन की निधि कबतक
बाँटेगा अवदान हिमालय।

सतत ग्लेशियर पिघल रहे हैं
कुछ दिन का मेहमान हिमालय।
'हमें बचाओ, यदि बचना है'
समझाता मतिमान हिमालय।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

रंगमंच पर निभा रहें किरदार...!

रंगमंच पर निभा रहें किरदार...!

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच।
हरेक पड़ाव से गुजर रहीं जिन्दगी,
एक-दूसरे के साथ करती बन्दगी।
कुछ ही कलाकार कर देते गन्दगी,
सब सही करते विधाता दिल्लगी।

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच।
ईश्वर ने भी क्या रचा है ये संसार,
सबके दामन में भरपूर दिया प्यार।
कब किसके हिस्से में आ जाये हार,
कभी खुलते रहेंगे किस्मत के द्वार।

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच।
गुजरती गई जिन्दगी देखते ख्वाब,
करते रहे अभिनय झाड़ते है रुबाब।
यू एक-दूजे का मिलता रहा सहवास,
बुझती रही प्यास, खिलते रहें गुलाब!
जीवन चलता रहें अदाकारी हैं शबाब।

- संजय एम तराणेकर

सफर की मधुशाला

राहों में मिले हम-तुम,
मंजिलें थीं अलग-अलग।
सफर का था रंगीन मौसम,
पर नजर थी मंजिल पर।

क्षणिक है मंजिल पाना,
पर सफर का आनंद कहां?
अगर न देखें वो घटाएँ,
न करें हृदय रसपान।

मंजिल का क्या फायदा,
जो सफर से दूर करे।
चलो सफर को बना लें,
चलती-फिरती मधुशाला।

पल तो आएगा ही,
जब मंजिलें होंगी पास।
तब तक साथ में चलें,
और सफर का लें मज़ा।

तुम अपनी राह पर चलो,
हम अपनी राह पर चलें,
मिलेंगी मंजिलें जब,
सफर की यादें संग रह जायेंगी।

- अवनीश कुमार गुप्ता

अद्भुत प्रकृति... (कविता)

अद्भुत प्रकृति
अजीब इसके रंग
हर ऋतु हर मौसम
अलग अलग ढंग।

शरद में
छाए धुंध बिखरे शबनम
खिले फूल
धूप मद्धम मद्धम
निखरे स्वरूप
करे ध्यान भंग।

गरम गरम वयार
उडे.धूल का गुवार
तीक्ष्ण उष्ण ग्रीष्म
करे प्रकृति का श्रृंगार
पेड़ों की ठंडी छांव
कर रही दंग
शोभा के संग।

ऋतु पावस जब उतरती धरा पर
प्रकृति की सुंदरता को
लग जाते पर
दर्पण समझ तालाब में
खुद को निहारती है
चातक के स्वर में
पीव पीव पुकारती है
खिल उठती महक उठती
सजने संवरने के संग
अद्भुत प्रकृति
अजीब इसके रंग।

– व्यग्र पाण्डे (कवि/लेखक)

हम खिलेंगे ज़रूर

दक्खिनहिया हवा की बात है
कि तारीफ़ के पुल के नीचे निराशा की नदी बहती है

खजूर के सपने पूरे नहीं होते
फिर भी वह आम की तरह सपने देखता है
कि उसकी छाँव में कोई गर्भवती उम्मीद विश्राम करेगी
कोई नींद रचेगी यात्रा का गीत

हम खजूर की ठेक लेकर सोच रहे हैं
कि उसकी आवाज़
उसकी ताड़ी है, फल नहीं

ऊँचे ताड़ पर पड़ी नज़र स्तब्ध है
लेकिन पश्चिमी आसमान की लालिमा उतर रही है
हमारी हृदय में यह कहने
कि हम गाँव में पले-बढ़े परिंदा हैं

एक शहरी बहेलिये ने हमारा पर काटा है!

- गोलेन्द्र पटेल

मुलेठी

प्रकृतिमेल डेस्क

बदलते मौसम में सभी को कोई न कोई समस्या हो जाती है। सर्दी, खासी बदनदर्द आदि। प्राकृतिक सम्पदा के तौर पर हमारे आसपास बहुत से उपहार मौजूद रहते है। जिनके प्रयोग से हम स्वस्थ रह सकते है। पर अमुमन होता यह है कि हम उन पर ध्यान नही देते।वहीं जब बिमार पड़ जाते है तब जल्द राहत पाने के लिए दवाओं का रुख करते है जो की आगे चलकर दिक्कत देती है।

आजकल के मौसम गले की समस्या लगभग सभी को हो जा रही है। ऐसे मे एक गुणकारी औषधी है मुलेठी, जो कि गले की समस्या के साथ साथ कई चीजो में लाभ देता है। आईए मुलेठी के बारे में और जानते है। मुलेठी एक झाड़ीनुमा औषधी है। इसके प्रयोग से सर्दी जुकाम और गले की खराश को दूर किया जाता है। इस औषधी का प्रयोग बहुत सी दवाओं को बनाने में किया जाता है। मुलेठी के तने को सुखाकर उपयोग में लाया जाता है। मुलेठी को दंत मंजन बनाते में भी इस्तेमाल किया जाता है। आजकल जहाँ सभी का जोर आयुर्वेद पर है तो बड़ी बड़ी कम्पनियां भी दंतमंजन बनाने में मुलेठी का उपयोग कर रही है। मुलेठी त्वचा के लिए भी काफी लाभकारी होती है। बालो के बढ़ने में मुलेठी बहुत लाभ देती है। मुलेठी से बाल काले भी होते है। मुलेठी के गुण से खून साफ होता है। जिससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। इससे शरीर स्वस्थ भी रहता है। सरदर्द में जैसे माइग्रेन में भी मुलेठी फायदेमंद है। ऑखों की दिक्कत मेंभी मुलेठी फायदा करती है। मुलेठी पित्तनाशक होता है। मुंह के छालों में भी मुलेठी फायदा करती है। गले की समस्याओं में तो मुलेठी बहुत फायदेमंद होती है। सांस से जुड़े रोगों में भी मुलेठी फायदा करती है। पेट में अल्सर की समस्या, पेट के दर्द, पेट फूलना, पेट में ऐंठन में भी बहुत फायदा करती है। मुलेठी खून की कमी को दूर करता है। मुलेठी शरीरिक कमजोरी को भी दूर करती है। इस गुणकारी झाड़ को घर की बागवानी में भी जगह दी जा सकती है।

प्रकृति के रंग

मृत्युंजय त्रिपाठी
लखनऊ

"विचार मानव मानसिक विज्ञान है जो अवस्था विशेष को सही गलत की परिभाषा से आदर्श विशेष की चारित्रिक दुनिया बनाना चाहता है जब कि प्रकृति जो जिस बीजत्व को धारण करता है उसे पूरा करती है, अनन्त ब्रह्माण्ड विचार शून्य एक एहसास है जो जिस गुण को धारण करता है उसी का एहसास कर सकता है।

– अशोक मानव"

स्थापित 1948
74 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दें
55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्कः 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दें

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equi pments & Spare Parts

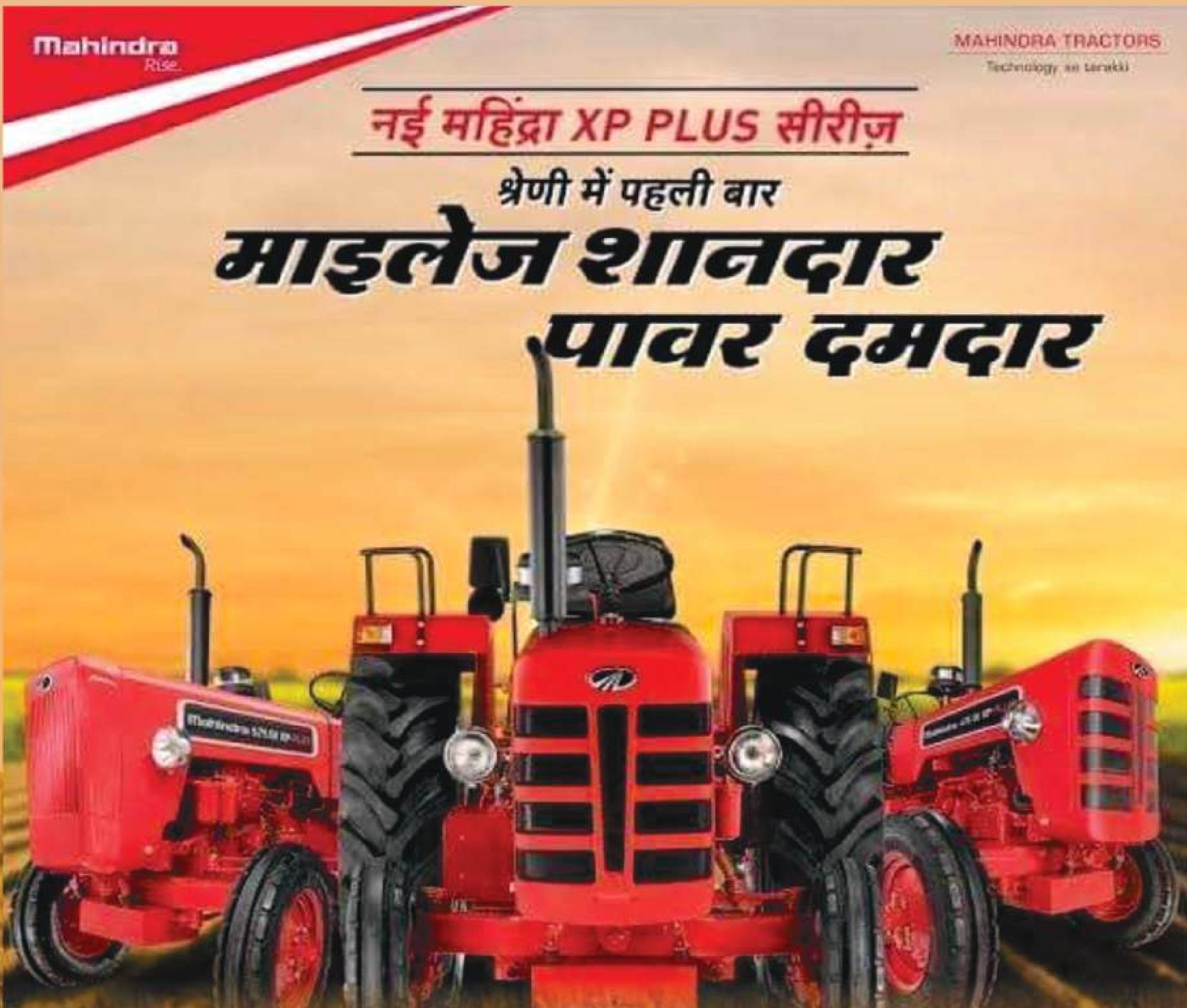

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र. ।